केनरा बैंक की
त्रैमासिक
हिंदी गृह पत्रिका

केनरा ज्योति

अंक : 41

जुलाई-सितंबर 2024

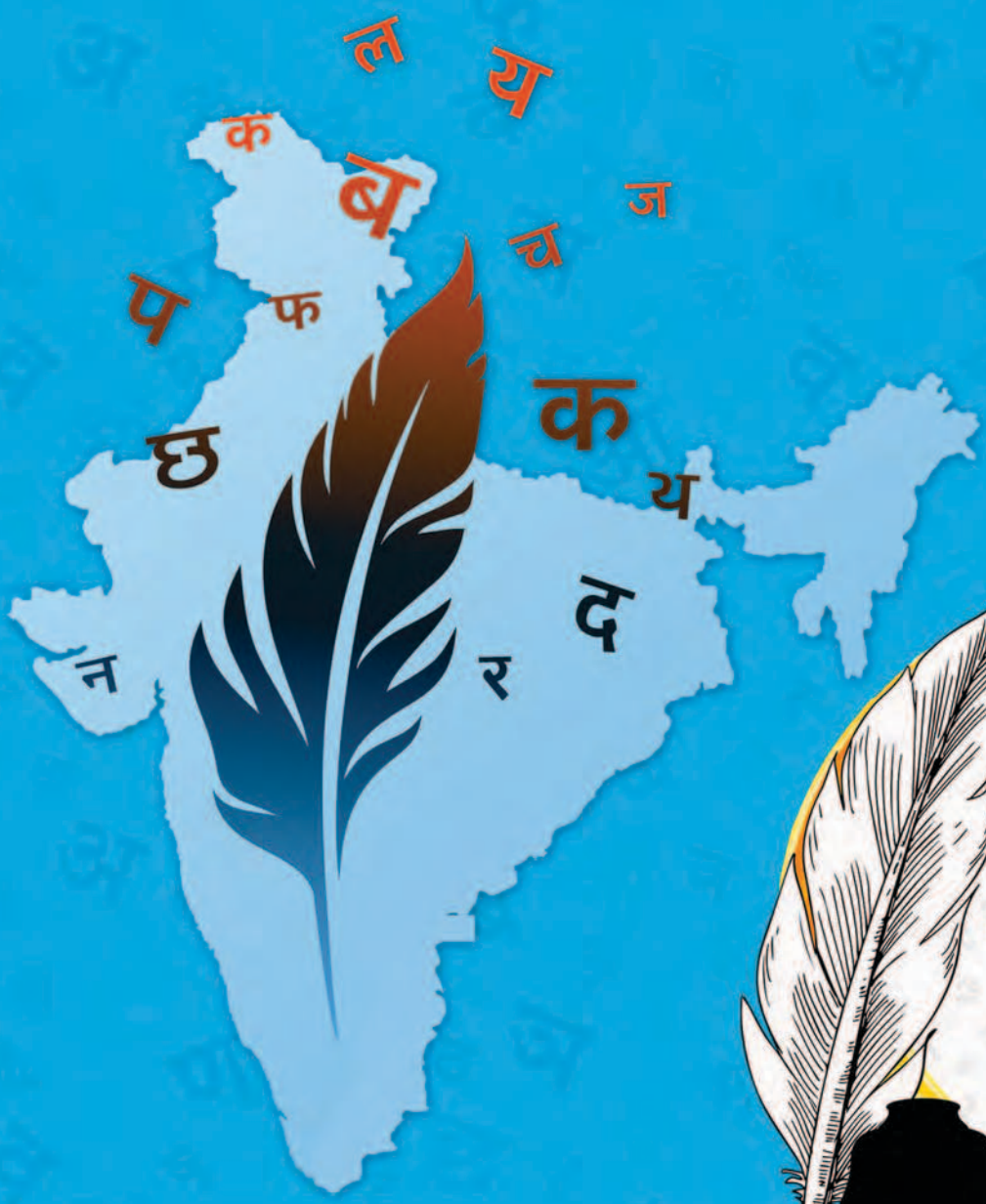

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking
सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

दिनांक 14 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस और चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह द्वारा केनरा बैंक को अपनी तिमाही गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' के लिए 'ग' क्षेत्र में राजभाषा कीर्ति 'प्रथम' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। चित्र में बैंक के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री के. सत्यनारायण राजु माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के करकमलों से शील्ड प्राप्त करते हुए।

दिनांक 17 सितंबर 2024 को प्रधान कार्यालय के प्रांगण में हिन्दी पखवाड़ा का शुभारंभ श्री के. सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री देवाशीष मुखर्जी, कार्यपालक निदेशक, श्री हरदीप सिंह अहलुवालिया, कार्यपालक निदेशक, श्री भवेंद्र कुमार, कार्यपालक निदेशक, श्री नबीन कुमार दास, मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं श्री टी. के. वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया।

श्री के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक
व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

श्री अशोकचंद्र
कार्यपालक निदेशक

श्री डी. सुरेन्द्रन
मुख्य महाप्रबंधक

श्री टी. के. वेणुगोपाल
महाप्रबंधक

श्री ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक
मुख्य संपादक

संपादक
श्री मनीष अभिमन्यू चौरसिया, अधिकारी

संपादन सहयोग
श्री जी. अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री राघवेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री मयंक पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक

बिक्री के लिए नहीं
प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 4079
ई-मेल: hool@canarabank.com
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु
* * *
पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

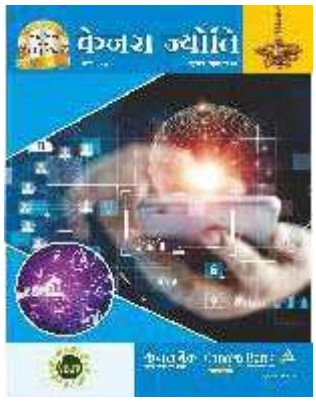

विषय सूची — पृष्ठ संख्या

हिन्दी दिवस 2024 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश – अमित शाह | 2
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश – के. सत्यनारायण राजु | 4
मुख्य संपादक का संदेश – ई. रमेश | 5
40वें अंक पर आपकी प्रतिक्रियाएँ | 6
राजभाषा हिन्दी का अमृत महोत्सव और केनरा बैंक में हिन्दी के डिजिटल फूटप्रिंट – शशि कान्त पाण्डेय | 7
त्रिनाद में हिंदी भाषा – प्रदीप राज एस. | 10
कार्यालयीन हिन्दी : दशा और दिशा – प्रशांत कसोधन | 14
हिंदी की लोकप्रियता में बाधाएं – धीरज जुनेजा | 19
बचपन की अभीलाषा – शुभांक शील | 21
भारतीय भाषाएं, प्रौद्योगिकी एवं एआई – रीनु मीना | 22
माँ – जतिन कुमार | 24
हिंदी हैं हम : तेज़ी से बदलती डिजिटल तकनीक के साथ हिंदी का बढ़ता प्रभाव – प्रमोद कुमार विश्वकर्मा | 25
हिंदी दिवस शुभारंभ कार्यक्रम 2024 | 29
अंचल/क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी दिवस की झलकियाँ | 31
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता – आशीष रंजन | 33
मेरी धार्मिक यात्रा – बृजेश कुमार पाठक | 34
हिंदी भाषा - एक सुदृढ़ नींव – ब्रिजेश कुमार श्रीवास्तव | 36
क ख ग से... कारोबार और रोजगार तक... राजभाषा हिंदी – विश्वनाथ प्रसाद साहू | 37
हमारी हिंदी – अस्मिता द्विवेदी | 39
तमिलनाडु में हिंदी के प्रारंभिक काल का संक्षिप्त परिचय – मेकला बापू | 40
बचपन की सुहानी यादें – प्रीति सिंह | 40
श्री अन्न (मिलेट्स) का उत्पादन : स्वर्णिम भारतीय इतिहास एवं भविष्य की राह – सुमित कुमार | 43
अंबरमाला – दिव्या प्रजापति | 45
हिंदी भारत की राष्ट्रीय भाषा नहीं है : यह मिथक क्यों जारी है? – लीना ज्ञानवानी | 46
प्रकृति की गुहार – पूनम सिंह | 47
हैदराबाद - मोतियों का शहर – आस्था आहूजा | 48
मित्रता – गौरव संतोष पांडेय | 51
त्योहार एवं मानवता – आनंद श्रीवास्तव | 51
हिंदी दिवस और कुछ रोचक तथ्य – ऋतिका अग्रवाल | 52
प्रथमेश और अनेक सलाहकार – रोचक दीक्षित | 54
हिन्दी में काम करके तो देखिए!! – अल्पना शर्मा | 57
हिंदी हमारी प्यारी भाषा – आशुतोष कुमार | 58
सही मार्गदर्शन – अमित कुमार | 59

हिन्दी दिवस 2024 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश

अमित शाह
केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियों !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सदभावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आज़ादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढी, बघेली, कुमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली

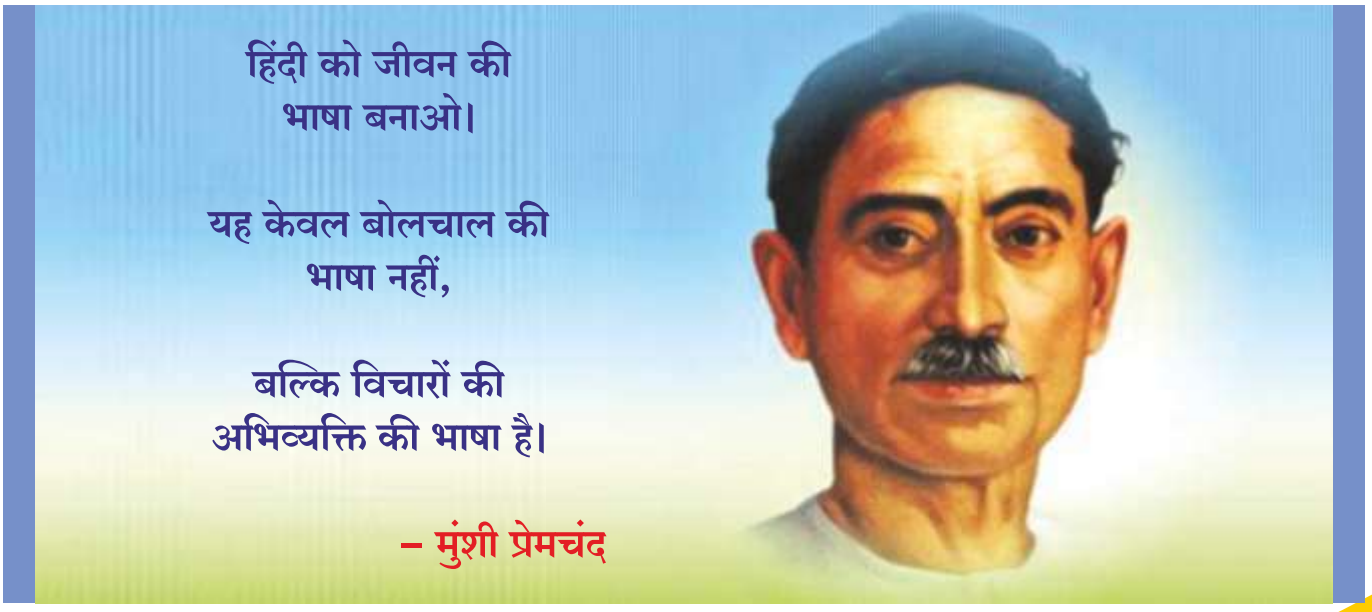

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय केनराइट्स!

सर्वप्रथम हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं !

यह हर्ष का विषय है कि आज से 75 वर्ष पूर्व 14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। राजभाषा हीरक जयंती के रूप में यह वर्ष हमें हमारी राजभाषा हिंदी के महत्व और उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाता रहेगा।

हिंदी भाषा न केवल हमारे संवाद का माध्यम है, बल्कि यह हमारी सोच, हमारी संस्कृति और हमारी पहचान को भी अभिव्यक्त करती है। यह हमें एकता के सूत्र में बांधकर हमारी विविधता को सम्मान देती है। यह हमारे ग्राहकों और हितधारकों के साथ प्रभावी वार्तालाप का माध्यम है। यह हमारा उद्देश्य होना चाहिए कि हम सरल और सुबोध भाषा में सेवाएं प्रदान करें ताकि हमारे ग्राहकों को सुविधानुकूल बैंकिंग प्राप्त हो।

आज, जब हम बैंकिंग सेवाओं को देश के हर कोने में पहुंचा रहे हैं, तब यह और भी जरूरी हो जाता है कि हम ऐसी भाषा का उपयोग करें जो हमारी जड़ों से जुड़ी हो और ग्राहकों के लिए सहज हो। हमारे ग्राहक विशेषतया ग्रामीण क्षेत्रों के अपनी मातृभाषा में संवाद करना पसंद करते हैं। हम ग्राहक की भाषा के प्रयोग से उनके साथ विश्वास और जुड़ाव का एक मजबूत सेतु बना सकते हैं, जिससे हमारा ग्राहक आधार मजबूत होगा और बैंक की साख भी बढ़ेगी।

आज हमारे बैंक ने ग्राहक अनुकूल बैंकिंग के लिए कई पहल की हैं जिनमें पर्यावरण अनुकूल शाखाएं, डिजिटल बैंकिंग समाधान, समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उपयुक्त बैंकिंग उत्पाद के साथ-साथ ग्राहक साक्षरता व त्वरित ग्राहक सेवा सामधान शामिल है। हमें पारदर्शिता रखते हुए ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार पारंपरिक व आधुनिक बैंकिंग के संगम द्वारा ग्राहक व समाज हितैषी वातावरण का निर्माण करना है। यह तभी संभव है जब ग्राहक को बैंकिंग सेवाएं उसकी भाषा में उपलब्ध कराई जाएं।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूं कि अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ावा दें, ताकि हम अपने ग्राहकों की जरूरतों को और बेहतर ढंग से पूरा कर सकें। आपकी इस दिशा में की गई छोटी-छोटी कोशिशें हमारे बैंक के विकास में बड़ा योगदान दे सकती हैं।

केनरा बैंक के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित होना बहुत गर्व की बात है। हम अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी के उपयोग को बढ़ावा देने और बैंकिंग क्षेत्र में इसके विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। यह पुरस्कार हमें भाषा के माध्यम से अपनी सेवाओं की समावेशिकता को बढ़ाने और देश के सबसे दूरदराज के इलाकों तक पहुँचने के अपने प्रयासों को जारी रखेने के लिए प्रेरित करता है।

अंत में हमारी पत्रिका केनरा ज्योति को प्राप्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के लिए सभी पाठकों का साधुवाद।

के. एस. राजु

के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

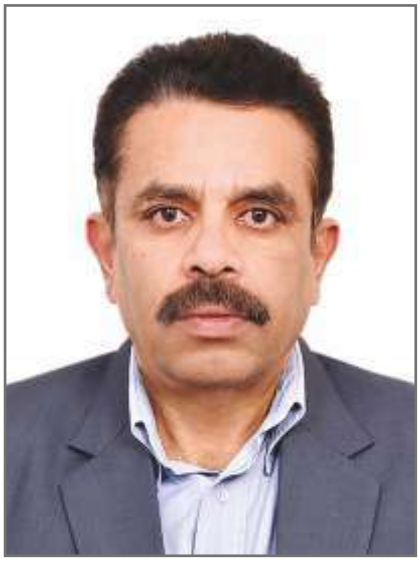

प्रिय पाठकों,

केनरा ज्योति के 41वें अंक के माध्यम से पुन: आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। केनरा ज्योति का यह नवीनतम अंक हिंदी दिवस विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। हमारा देश विविधताओं में एकता का देश है। यहाँ कन्याकुमारी से कश्मीर तक आपको लोगों की संस्कृति, वेशभूषा, खानपान, भाषा, बोली इत्यादि में विविधता मिलेगी। यही हमारे देश की विशेषता है कि हम भिन्न-भिन्न जाति, धर्म, भाषा होने के बावजूद एकजुट हैं। हम सभी को एकता के सूत्र में बाधने का कार्य अगर किसी भाषा ने किया है तो वह हिन्दी भाषा है।

चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी,
बीस कोस पर पगड़ी बदले, तीस कोस पर धानी।।

आज के डिजिटल दौर में हिन्दी भाषा का प्रचलन और बढ़ा है। हिन्दी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी खूब प्यार मिल रहा है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का योगदान अतुलनीय है। माननीय प्रधानमंत्री जी विश्व के मंचों पर हिन्दी भाषा में अपना सम्बोधन देते हैं। इसलिए हम सभी का यह मूल व संवैधानिक कर्तव्य बन जाता है कि हम भी हिन्दी भाषा का प्रचार - प्रसार करें।

हिन्दी साहित्य के महान कवि श्री भावनी प्रसाद मिश्र ने कहा है कि -

"जिस तरह हम बोलते हैं, उस तरह तू लिख,
और इसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख।"

मिश्र जी की इन्हीं पंक्तियों को आत्मसात करते हुए मैं सभी पाठकों व लेखकों से आह्वान करता हूँ कि आप जो भी रचना करते हैं उसे सरल एवं सुबोध भाषा में लिखने का प्रयास करें। कोई भी कविता, कहानी, आलेख या नाटक में जरूरी नहीं कि आप क्लिष्ट हिन्दी भाषा का उपयोग करें। हिन्दी भाषा की यही विशेषता है कि आप जैसा चाहे वैसे अपनी रचना को रूप दे सकते हैं। तभी तो हिन्दी भाषा को हमारी सभी भाषाओं व बोलियों की सखी कहा गया है। आइये हम हमारी हिन्दी भाषा को और समृद्ध बनाएँ।

हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हम सभी को एकजुट होकर काम करना चाहिए और इसे विकसित करने का भरसक प्रयास करना चाहिए और इसी प्रयास का परिणाम है कि हिन्दी दिवस के अवसर पर इस वर्ष भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2024 में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के करकमलों से हमारे बैंक की गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' को राजभाषा कीर्ति 'प्रथम' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस गौरवपूर्ण पुरस्कार के लिए मैं सभी लेखकों और पाठकों को साधुवाद व बधाई देता हूँ। आप सभी के सामूहिक प्रयास का नतीजा है कि हमें राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। मुझे आशा है कि आप सभी इस प्रयास को यूंही जारी रखेंगे और इस वित्तीय वर्ष हमारा प्रयास होगा कि हमें कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हो।

इस शुभ अवसर पर, हम सभी एक संकल्प लें कि हम अपने दैनिक जीवन में अपने कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करें तथा ग्राहकों के साथ उनकी भाषा में संव्यवहार करें। हिंदी भाषा को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए हम सबको मिलकर काम करना चाहिए, ताकि हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रख सकें और विश्व पटल पर अपनी पहचान बना सकें।

इस अंक पर भी आपकी अनुभवी दृष्टि हमारा मार्गदर्शन करेगी, इन्हीं अपेक्षाओं के साथ हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका,

ई रमेश
सहायक महाप्रबंधक व मुख्य संपादक

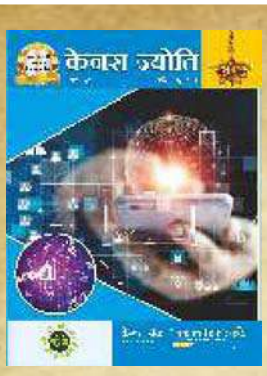

40वें अंक पर आपकी प्रतिक्रियाएँ

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य)

यूको बैंक UCO BANK
Honours Your Trust

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–2

आलेख

राजभाषा हिन्दी का अमृत महोत्सव और केनरा बैंक में हिन्दी के डिजिटल फूटप्रिंट

शशि कान्त पाण्डेय
वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)
केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान, मणिपाल

सन 1947 में मिली आजादी ने बीते वर्ष 2022 में 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं इसी के उपलक्ष्य में देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। आजादी का यह 'अमृत महोत्सव' आजादी के शताब्दी वर्ष पूरा करने तक चालू रहेगा। इसी परिप्रेक्ष्य में यह याद करना समीचीन होगा कि संविधान सभा ने मुख्यतः 12, 13 और 14 सितंबर 1949 को भाषा के संबंध में ढेरों चर्चा की, तदुपरान्त दिनांक 14 सितंबर 1949 को संघ की राजभाषा के रूप में 'हिन्दी' भाषा को मान्यता दी गई। इस लिहाज से वर्ष 2024 'हिन्दी भाषा का अमृत महोत्सव' है। आइये 'हिन्दी भाषा के अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में केनरा बैंक में हिन्दी के प्रयोग से परिचित हों।

इतिहास :

केनरा बैंक में हिन्दी ने बैंकिंग क्षेत्र के क्रियाकलापों में सत्तर के दशक में पदार्पण किया। सन 1976 में राजभाषा नियम के पारित होने के बाद सरकारी तंत्र एवं उपक्रमों में राजभाषा कार्यान्वयन को गति मिली। उसके कुछ एक वर्ष पहले ही केनरा बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन का श्रीगणेश किया गया था। जब सन 1973 में बैंक के प्रधान कार्यालय में संगठन व पद्धति अनुभाग के अधीन 'हिन्दी कक्ष' का गठन किया गया था।

बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में सुझाव देने, उन सुझावों को कार्यान्वित करने और कार्यान्वयन कार्य का निरंतर जायजा लेने के उद्देश्य से वर्ष 1974 में प्रधान कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया और समिति की पहली बैठक दिनांक 21.05.1974 को आहूत की गई। वर्तमान दिनांक तक प्रधान कार्यालय में समिति की 192 बैठकों का आयोजन किया जा चुका है। आज से पचास वर्ष पूर्व, वर्ष 1974 मे ही बैंक के प्रधान कार्यालय में हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत कक्षाएँ प्रारम्भ की गई। वर्ष 1974 मे ही बैंक में सर्वप्रथम एक राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति की गई थी।

वर्ष 1978 में 'हिन्दी कक्ष' को 'राजभाषा कक्ष' का दर्जा दिया गया और उसी वर्ष कुल 7 हिन्दी अधिकारियों की भी भर्ती की गई। साथ ही साथ देश के चुनिन्दा नगरों यथा दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और आगरा में राजभाषा कक्षों की स्थापना की गई। कालांतर में बैंक के सभी अंचल/ क्षेत्रीय कार्यालयों/ मण्डल कार्यालयों में राजभाषा कक्षों की स्थापना की गई।

1979 में बैंक के प्रधान कार्यालय के राजभाषा कक्ष का स्तर बढ़ाते हुए इसे स्वतंत्र अनुभाग का दर्जा दिया गया, इसी वर्ष में बैंक की आंतरिक गृह पत्रिका में हिन्दी खंड का शुभारंभ किया गया। साथ ही 'सितंबर' माह को 'हिन्दी माह' के रूप में मनाने की परंपरा की शुरुआत हुई। राजभाषा कार्यान्वयन के विविध पहलुओं पर विचार-विमर्श करने हेतु वर्ष 1981 में बैंक के राजभाषा अधिकारियों का प्रथम सम्मेलन बेंगलूरु में आयोजित किया गया, यथा समय तक बैंक के हिन्दी अधिकारियों के लिए इस प्रकार के कुल 41 अखिल भारतीय सम्मेलनों का आयोजन हो चुका है। वर्ष 1981 में ही प्रधान कार्यालय के साथ-साथ कुछ चुने हुए कार्यालयों में हिन्दी पुस्तकालय स्थापित किए गए।

राजभाषा विभाग की प्रेम, प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति का अनुपालन करते हुए शाखाओं/ कार्यालयों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से वर्ष 1982 में 'केनरा बैंक राजभाषा शील्ड योजना' की शुरुआत हुई। कालांतर मे 1987 में 'केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना' की शुरुआत हुई जो वर्तमान में भी अबाध रूप से संचालित है। साथ ही साथ, वर्ष 1994 में बैंक के कर्मचारियों को उनके दैनिक कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी का अधिकतम प्रयोग करने के उद्देश्य

से 'केनरा बैंक राजभाषा पुरस्कार योजना' की शुरुआत हुई जिसके अंतर्गत नकद धनराशि, मेडल, प्रमाणपत्र प्रदान किए जाते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन के महत्वपूर्ण पहलू के रूप में हिन्दी शिक्षण के माध्यम से बैंक के कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान दिलाने के उद्देश्य से वर्ष 1996 में 'केन बैंक हिन्दी पत्राचार पाठ्यक्रम' की शुरुआत हुई।

कर्मचारियों को लिखने पढ़ने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से वर्ष '2002' में 'केनराज्योति' नामक प्रतिष्ठित हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, ध्यातव्य है कि 'केनरा ज्योति' पत्रिका को वर्ष 2021 और वर्ष 2024 में भारत वर्ष के हिन्दी जगत के नोबल पुरस्कार 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' से नवाजा गया है।

राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में लगातार नवीन प्रयोगों के कारण बैंक को विभिन्न संस्थाओं, समितियों आदि से कई पुरस्कार भी प्राप्त होते रहे हैं।

केनरा बैंक में हिन्दी के डिजिटल फूटप्रिंट

वर्तमान युग तकनीकी का युग है। बैंकिंग क्षेत्र में ईज़ के कई संस्करण का प्रचलन हो चुका है सभी संस्करणों में जो मुख्य बात कही गई है, वह है 'दैनिक कार्यों में तकनीकी का प्रयोग और डिजिटल को अपनाना'। केनरा बैंक ने इसे पूरी तत्परता से लागू करने का प्रयास किया है। आज से कुछ छह-सात वर्ष पहले की और आज की परिस्थितियों की चर्चा करें तो यह पाएंगे कि बैंक ने अपने बहुत से उत्पाद, बैंकिंग सॉफ्टवेयर को और कर्मचारियों को मिलने वाले विभिन्न लाभों को तकनीक के माध्यम से सुगम बनाया है। बैंक में तकनीक और हिन्दी की कदमताल अनवरत जारी है, जिसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं-

- बैंक लगातार विभिन्न बैंकिंग उत्पादों को डिजिटल रूप से उतार रहा है, यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि अब पूरी बैंकिंग व्यवस्था ही डिजिटल रूप अख़्तियार कर चुकी है।
- पूरी बैंकिंग व्यवस्था के डिजिटलीकरण से यह आवश्यक हो जाता है कि सभी डिजिटल उत्पाद भी पूर्णतया भारत के सभी भाषाओं में उपलब्ध हों।
- बैंक का कोर बैंकिंग सोल्यूशन (सीबीएस) 'उत्कर्ष 11.8' अब अंग्रेजी के अलावा 11 अन्य भारतीय भाषाओं में कार्य करने में सक्षम है। जिसके माध्यम से ग्राहक की पासबुक, पासशीट, ऋण वसूली संबंधी नोटिस, स्टेटमेंट आदि को हिन्दी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में छापा जा सकता है।
- अब अधिकारियों को, ग्राहक को देने वाले ऋण आदि के लिए व्यक्तिगत रूप से कार्यालय नोट आदि बनाने की जरूरत नहीं रह गई है, बैंक ने 'लैप्स' जैसे बैंकिंग साफ्टवेयर के माध्यम से पूरी की पूरी प्रक्रिया को ही डिजिटल बना दिया है। कर्मचारियों को मिलने वाले मासिक भत्तों को पूरी तरह से डिजिटल बना दिया गया है।
- केनरा बैंक के डिजिटल फूटप्रिंट में सदियों तक यदि किसी उत्पाद का नाम लिया जाएगा तो वह नाम होगा बैंक का मोबाइल एप्लीकेशन 'एआई1' जो कि 250 से अधिक बैंकिंग सुविधाओं से लैस है।
- केनरा बैंक का मोबाइल एप्लीकेशन एआई1 अंग्रेजी और हिन्दी भाषा के साथ-साथ नौ अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध है।
- बैंक के आंतरिक ऋण प्रोसेसिंग पैकेज 'लैप्स' में आंकड़ों को अंग्रेजी के साथ -साथ हिन्दी भाषा में भी प्रविष्ट किया जा सकता है और संसाधित दस्तावेज़ द्विभाषी रूप में प्राप्त किया जा सकता है।
- बैंक की कारपोरेट वेबसाइट का मुख्य पृष्ठ शुरुआत में ही आपसे यह पूछता है कि आप कारपोरेट वेबसाइट को किस भाषा(हिन्दी-अंग्रेजी) में खोलना चाहते हैं। कारपोरेट वेबसाइट पर उपलब्ध सभी दस्तावेज़ भी अंगेरजी के साथ हिन्दी में भी मौजूद हैं।
- बैंक का आंतरिक ज्ञान केंद्र 'केननेट' का प्रथम पृष्ठ हिन्दी में भी खुलता है, हालांकि यहाँ पर प्रदर्शित अन्य सामग्रियाँ केवल अंग्रेजी लिंक की ही खुलती हैं।

- केनरा बैंक का आंतरिक संसूचना पटल बैंक द्वारा जारी सभी संसूचनाओ यथा परिपत्र, आंतरिक संसूचना, अनुदेश पुस्तिका और बैंक की नीतियों को हिन्दी और अंग्रेजी में प्रदर्शित करता है।
- केनरा बैंक अपने ग्राहकों को लेनदेन संबंधी संक्षिप्त संदेश (एसएमएस) को अंग्रेजी- हिन्दी के अलावा 10 अन्य भारतीय भाषाओं में प्रेषित करने में सक्षम है।
- केनरा बैंक की सभी शाखाओं/ कार्यालयों में उपयोग में आने वाले सभी कंप्यूटर जहां बहुभाषी रूप से कार्य करने की सुविधा से लैस हैं, वहीं बैंक ने हिन्दी टायपिंग के लिए सभी कम्प्यूटरों में गूगल इंडिक की-बोर्ड का उपयोग करने की सुविधा भी प्रदान की है।
- आज के समय बैंक के सभी कम्प्यूटरों में गूगल ट्रांस्लेटर की सुविधा उपलब्ध है, जिसने हिन्दी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में काम करना आसान कर दिया है।
- बैंक का हिन्दी कार्यान्वयन में सबसे क्रांतिकारी कदम माइक्रोसॉफ्ट आउटलुक ईमेल के साथ टाइअप करना रहा है, माइक्रोसॉफ्ट आउटलुक ईमेल में अब बोलकर टाइप (वाइस टायपिंग) किया जा सकता है। जिसने अधिकारियों के दैनंदिन कामकाज को बहुत आसान बना दिया है।
- बैंक का 'ज्ञानदीप स्तम्भ' केनरा डिजिटल लर्निंग(कैन्डल) जो कि बैंक के कर्मचारियों को डिजिटल माध्यम से बैंकिंग ज्ञान गंगा का प्रसार करता है। कैन्डल प्लेटफॉर्म में हिन्दी भाषा सीखने और राजभाषा संबंधी नियमो, नीतियों के बारे में पाठ्यक्रम अध्याय उपलब्ध हैं।
- बैंक के कर्मचारियों की मासिक वेतन पर्ची को अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी डाऊनलोड किया जा सकता है।
- बैंक समय-समय पर कर्मचारियों को बैंकिंग संबंधी संदेश (एसएमएस) हिन्दी भाषा में भेजता है।
- बैंक की हिन्दी पत्रिका 'केनरा ज्योति' का ऑनलाइन संस्करण मौजूद है जिसे कर्मचारियों के साथ-साथ बैंक के ग्राहक भी बैंक की वेबसाइट से एक्सेस कर के ऑनलाइन पढ़ सकते हैं।
- राजभाषा विभाग की सूचना प्रबंधन प्रणाली की तर्ज पर बैंक की शाखाओं / कार्यालयों के लिए हिन्दी रिपोर्ट को ऑनलाइन रूप से भरने की सुविधा उपलब्ध है।
- राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में अधिकारियों के दौरे के लिए शाखा सहायता दौरा पैकेज ऑनलाइन रूप से उपलब्ध है।
- केनरा बैंक ने अपने चुनिन्दा ग्राहकों को डेबिट कार्ड पर नाम आदि की जानकारी को हिन्दी भाषा में भी छाप कर उपलब्ध करवाया है।
- बैंक की इंटरनेट बैंकिंग सुविधा हिन्दी-अंग्रेजी के अतिरिक्त 8 अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है।
- बैंक का व्हाट्सएप नंबर 90760 30001 बैंक के ग्राहकों को अंग्रेजी-हिन्दी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में भी 18 बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करता है।
- केनरा बैंक का ऑफिशियल फेसबुक, एक्स(ट्विटर), इन्स्टाग्राम और यूट्यूब चैनल अंग्रेजी के अलावा हिन्दी भाषा में भी बैंकिंग संदेश प्रसारित करता है।
- केनरा बैंक का ऋण वसूली मोबाइल एप्लीकेशन 'केनरा रिकवरी' ग्राहकों के एनपीए, एसएमए आदि होने संबंधी नोटिस की सुविधा और इस संबंध में उन्हें संदेश (एसएमएस) अंग्रेजी के अलावा हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध करवाता है।
- बैंक का प्रचलित *99 यूएसएसडी प्लेटफॉर्म अंग्रेजी -हिन्दी के अतिरिक्त 11 अन्य भारतीय भाषाओं मे बैंकिंग लेन-देन सम्पन्न करता है।

भविष्य आपके और हमारे हाथ में है :

मानसिकता बदलिए :- भारत के संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करे, 'संघ' मतलब क्या? संघ का मतलब 'हम सभी लोग जो भारत सरकार के कर्मचारी' हैं। कभी फुर्सत में हम लोगों को यह सोचने की जरूरत है कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए हमने व्यक्तिगत रूप से क्या प्रयास किए?

याद रखिए:- बैंक ने तकनीक के साथ कदमताल मिलाकर बैंकिंग उत्पादों को हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं मे उपलब्ध करवाया है।

कीजिए :- अब हम सबकी यह 'संवैधानिक ज़िम्मेदारी' बनती है कि हम सभी लोग इन तकनीकों और उत्पादों का उपयोग स्वयं की भाषा मे करें, साथ ही ग्राहकों को भी सभी बैंकिंग सुविधाएं हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं मे उपलब्ध करवाएँ। सही मायने में 'राजभाषा हिन्दी का अमृत महोत्सव' तभी सुफल होगा।

आलेख

त्रिनाद में हिंदी भाषा

प्रदीप राज एस.
वरिष्ठ प्रबंधक
सामरिक एवं डेटा विश्लेषिकी विभाग

1.पृष्ठभूमि

त्रिनिदाद में भारतीयों का प्रवास 1845-1917 की अवधि तक चला। पहला जहाज 'फेटल रजाक' 225 भारतीय अनुबंधित श्रमिकों को लेकर त्रिनिदाद के तट पर पहुंचा, जो उस समय ब्रिटिश उपनिवेश था। इस अवधि के दौरान 140,000 से अधिक भारतीयों को द्वीप पर ले जाया गया। यात्रा लंबी और कठिन थी और रहने की स्थिति दयनीय थी। भारत से और अधिक जहाजों के आने के बाद उनकी संख्या में वृद्धि हुई। उन अनुबंधित श्रमिकों के वंशज, जो अब अपनी पांचवीं पीढ़ी में हैं, कुल आबादी का लगभग 42% हिस्सा बनाते हैं जो देश के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक ताने-बाने का एक अभिन्न अंग हैं। त्रिनिदाद और टोबैगो में भारतीय समुदाय हर साल 30 मई को भारतीय आगमन दिवस मनाता है और 1994 से इस दिन को आधिकारिक सार्वजनिक अवकाश बना दिया गया।

2.संसदीय आदान-प्रदान

भारत और त्रिनिदाद एवं टोबैगो के सांसदों के बीच पारंपरिक रूप से घनिष्ठ संबंध रहे हैं। माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार के नेतृत्व में 6 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रमंडल अध्यक्षों एवं पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन (सीएसपीओसी) में भाग लेने के लिए जनवरी 2012 में त्रिनिदाद एवं टोबैगो का दौरा किया था। त्रिनिदाद एवं टोबैगो के सांसदों ने मार्च 2012 में इस दौरे के बदले में सीनेट के अध्यक्ष टिमोथी हेमल-स्मिथ और प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष माननीय वेड मार्क के नेतृत्व में 7 सदस्यीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान भारत-त्रिनिदाद एवं टोबैगो संसदीय मैत्री संघ का गठन किया गया जिसके भारतीय सह-अध्यक्ष श्री रामविलास पासवान, सांसद थे।

3.आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध

जनवरी 1997 में भारत और टीएंडटी के बीच हस्ताक्षरित व्यापार समझौते ने एक दूसरे को सर्वाधिक पसंदीदा राष्ट्र (एम.एफ.एन) का दर्जा दिया है। 2018-19 के दौरान द्विपक्षीय व्यापार 279.12 मिलियन अमेरिकी डॉलर था (भारत का टीएंडटी को निर्यात 83.75 मिलियन अमेरिकी डॉलर था और टीएंडटी का निर्यात 195.37 मिलियन अमेरिकी डॉलर था)। क्षेत्र में अपनी आर्थिक रूप से प्रभावशाली भूमिका के आधार पर और क्षेत्रीय और द्विपक्षीय तरजीही व्यापार समझौतों द्वारा समर्थित, टीएंडटी भारत के निर्यातकों को कैरिबियन क्षेत्र और उससे आगे तक पहुँचने के लिए अच्छे अवसर प्रदान करता है। कपड़ा, परिधान, फार्मास्यूटिकल्स, ऊर्जा, मशीनरी और पेट्रो-रसायन, कृषि, आईटी और फिल्म और संगीत उद्योग में द्विपक्षीय व्यापार के विकास की संभावना है।

4.हिंदी को त्रिनिदाद और टोबैगो में स्थान कैसे मिला?

भारत से आए प्रवासियों में से अधिकांश जो ब्रिटिश गयाना (वर्तमान में गुयाना), त्रिनिदाद और टोबैगो और सूरीनाम गए थे, वे उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार और राजस्थान के निवासी थे, जबकि जो लोग ग्वाडेलोप और मार्टिनिक जैसे क्षेत्रों की यात्रा करते थे, वे मुख्य रूप से भारत के दक्षिणी क्षेत्रों से थे। परिणामस्वरूप, हिंदी का एक स्थानीय रूप पूर्ववर्ती देशों में एक अलग भाषा के रूप में विकसित हुआ, जहाँ स्थानीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा भारतीय वंशजों का था। वर्तमान में कैरीबियाई हिंदुस्तानी गुयाना, त्रिनिदाद और सूरीनाम में सबसे लोकप्रिय भाषा बनी हुई है। यह मुख्य रूप से भोजपुरी का एक रूप है और अवधी से काफी हद तक उधार लिया गया है।

हिंदी का टीएंडटी के लोगों के दिलों में एक विशेष स्थान था क्योंकि यह उनके पूर्वजों की भाषा थी। साथ ही, यह उनकी भावना और पहचान के करीब की भाषा है। यह उनके अभिवादन में रोटी, भाई, पानी, यज्ञ और सीताराम जैसे कई हिंदी शब्दों के प्रचलन में

परिलक्षित होता है। सैकड़ों हिंदी शब्द त्रिनिदाद के लोगों के रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा हैं।

5. सरकारों की ओर से प्रयास

हिंदी एवं संस्कृति विभाग की द्वितीय सचिव सुनीता पाहुजा के अनुसार त्रिनिदाद में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए भारतीय उच्चायोग एक महत्वपूर्ण एजेंसी है। हिंदी को बढ़ावा देने की अपनी विभिन्न योजनाओं के तहत उच्चायोग पिछले 20 वर्षों से हिंदी शिक्षण कक्षाएं चला रहा है और इस अवधि के दौरान विभिन्न जातीय और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के 10,000 से अधिक लोग स्नातक बन चुके हैं जो अब हिंदी बोल, समझ, पढ़ और लिख सकते हैं। सितंबर में दो नए केंद्र भी खोले जाएंगे। वर्तमान में भारतीय उच्चायोग त्रिनिदाद में सात केंद्र चला रहा है। ये पोर्ट-ऑफ-स्पेन, कारोनी, दिवाली नगर, सैन फर्नांडो, सांग्रे ग्रांडे, वल्सेन और देबे में हैं। इस साल दो और केंद्र खुलने की संभावना है-कबीर उपदेशाश्रम, फ्रीपोर्ट और भारत सेवा संघ आश्रम।

इन केंद्रों के शिक्षकों को पिछले कुछ वर्षों में भारतीय उच्चायोग में ICCR, भारत द्वारा प्रायोजित हिंदी प्राध्यापकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया है और ये शिक्षक लगभग 20 वर्षों से पढ़ा रहे हैं। कुछ भारत-आधारित शिक्षक कक्षाओं में वार्तालाप पहलू को मजबूत करने के लिए स्वैच्छिक रूप से अपनी सेवाएं भी देते हैं। भारतीय उच्चायोग इन कक्षाओं के लिए संसाधन सामग्री जैसे हिंदी पुस्तकें, सीडी, ऑनलाइन कार्यक्रम आदि प्रदान करता है। हिंदी सीखने को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं और हिंदी दिवस (हर साल सितंबर) और विश्व हिंदी दिवस (हर साल जनवरी) पर पुरस्कार वितरित किए जाते हैं। इन परीक्षाओं के प्रमाण पत्र हिंदी दिवस पर इंडिया हाउस में एक भव्य समारोह में दिए जाते हैं। सर्वश्रेष्ठ तीन छात्रों को बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा नकद पुरस्कार भी दिए जाते हैं। इन कक्षाओं के छात्रों को इन समारोहों के दौरान अपनी हिंदी गायन, बोलने और समझने की क्षमताओं को दिखाने का अवसर भी मिलता है।

हिंदी की कक्षाएं तीन स्तरों पर संचालित की जाती हैं, प्रारंभिक, मध्यवर्ती और उन्नत। उन्नत स्तर पूरा करने वाले भारत में हिंदी अध्ययन के छात्रवृत्ति पाठ्यक्रम के लिए आवेदन करने के पात्र हो जाते हैं, जिसके लिए अंतर्राष्ट्रीय किराया भारत सरकार द्वारा वहन किया जाता है। समय-समय पर दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं का आदान-प्रदान हुआ है। पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने फरवरी 1999 में त्रिनिदाद और टोबैगो की राजकीय यात्रा की। पूर्व प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने नवंबर 2009 में पोर्ट ऑफ स्पेन में शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए एक उच्च

स्तरीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। त्रिनिदाद और टोबैगो से, पूर्व प्रधान मंत्री श्री बासदेव पांडे ने जनवरी 1997 में गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में भारत की राजकीय यात्रा की। जनवरी 2005 में मुंबई में आयोजित प्रवासी भारतीय दिवस (पीबीडी) में उन्हें प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार (पी.बी.एस.ए) से सम्मानित किया गया। पूर्व प्रधानमंत्री सुश्री कमला प्रसाद-बिसेसर ने 05-14 जनवरी 2012 तक भारत की राजकीय यात्रा की। उनके साथ 7 कैबिनेट मंत्रियों और निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों से 160 सदस्यीय एक मजबूत प्रतिनिधिमंडल वाला एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भी था। वह जयपुर में पीबीडी 2012 में मुख्य अतिथि भी थीं और उन्हें पीबीएसए से सम्मानित किया गया था।

विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने 19 सितंबर, 2022 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के मौके पर त्रिनिदाद और टोबैगो के विदेश और कैरिकॉम मामलों के मंत्री डॉ. अमेरी ब्राउन से मुलाकात की। दोनों नेताओं ने 21 अप्रैल, 2023 को जॉर्जटाउन (गुयाना) में भारत-सीओएफसीओआर विदेश मंत्रियों की बैठक के मौके पर फिर से मुलाकात की। डॉ. अमेरी ब्राउन ने 13 जनवरी, 2023 को वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट के विदेश मंत्रियों के वर्चुअल सत्र में भाग लिया। अन्य महत्वपूर्ण यात्राओं के अलावा, त्रिनिदाद और टोबैगो के डिजिटल परिवर्तन मंत्री सीनेटर हैसल बैकस ने डिजिटल परिवर्तन के क्षेत्र में सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए हाल के दिनों में दो बार भारत का दौरा किया। उनकी पहली भारत यात्रा 05-11 अगस्त, 2023 तक थी, जिसके दौरान उन्होंने श्री राजीव चंद्रशेखर, चशळींध चेड और श्रीमती मीनाक्षी लेखी, चेड (ए) से मुलाकात की। उन्होंने व्यापक चर्चाओं के लिए इंडिया स्टैक संगठनों का भी दौरा किया। इस यात्रा के दौरान 'डिजिटल परिवर्तन के लिए जनसंख्या स्तर पर कार्यान्वित सफल डिजिटल समाधानों के क्षेत्र में सहयोग' पर एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए गए।

6. आर्थिक संबंध

जनवरी 1997 में भारत और टीएंडटी के बीच हस्ताक्षरित व्यापार समझौता एक दूसरे को सर्वाधिक पसंदीदा राष्ट्र (एमएफएन) का दर्जा देता है। द्विपक्षीय व्यापार ने 2023-24 में 368.96 मिलियन अमेरिकी डॉलर का रिकॉर्ड उच्च दर्ज किया। त्रिनिदाद और टोबैगो को भारत के निर्यात की प्रमुख वस्तुओं में शामिल हैं: वाहन, रोलिंग स्टॉक, पुर्जे और सहायक उपकरण; लोहा और इस्पात; फार्मा उत्पाद; प्लास्टिक आदि। त्रिनिदाद और टोबैगो से भारत के आयात की प्रमुख वस्तुओं में शामिल हैं: खनिज ईंधन, खनिज तेल और उनके आसवन के उत्पाद; बिटुमिनस पदार्थ; खनिज मोम; लोहा और इस्पात; अयस्क, स्लैग और राख; एल्युमीनियम आदि। पिछले पाँच वित्तीय वर्षों में व्यापार लेन-देन इस प्रकार हैं :

(मिलियन अमेरिकी डॉलर)

विवरण	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
भारत का निर्यात	85.11	74.79	93.27	104.93	109.06
भारत का आयात	84.42	189.36	112.20	91.26	259.90
कुल व्यापार	169.53	264.15	205.47	196.19	368.96

7. सांस्कृतिक सहयोग और संबंध

महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान (एमजीआईसीसी) की स्थापना जनवरी 1997 में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत की गई थी। यह केंद्र त्रिनिदाद और टोबैगो सरकार द्वारा उपहार में दिए गए 5 एकड़ के भूखंड पर बनाया गया है।

महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान, पोर्ट ऑफ स्पेन, त्रिनिदाद और टोबैगो कथक, हिंदुस्तानी गायन, तबला और हिंदी में नियमित कक्षाएं संचालित करता है। केंद्र द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का टेलीविजन और रेडियो पर सीधा प्रसारण किया जाता था। केंद्र ने मंदिरों और स्कूलों में भाषा कक्षाएं भी शुरू की हैं। छात्रों में 'गुरु-शिष्य परंपरा' की अवधारणा को विकसित किया गया। समकालीन प्रासंगिकता के विषयों पर कई व्याख्यान भी आयोजित किए गए।

8. त्रिनिदाद और टोबैगो में स्कूल स्तर से नए पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी को शामिल करना

भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव सुनीता पहजुआ के अनुसार, त्रिनिदाद एवं टोबैगो में हिंदी पढ़ाने के लिए एक नया पाठ्यक्रम तैयार किया जा रहा है। भारतीय उच्चायोग देश भर में सात केंद्रों पर नियमित हिंदी कक्षाएं संचालित करता है, जहां 200 से अधिक छात्र हिंदी सीख रहे हैं।

शिक्षा मंत्रालय को यह भी आश्वासन दिया कि उच्चायोग पुस्तकों, शब्दकोशों और सीडी जैसी शैक्षिक सामग्री प्रदान करेगा और शिक्षकों के प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करेगा। पहजुआ ने कहा कि मंत्रालय ने सलाह दी है कि वह हिंदी शिक्षण पर एक सर्वेक्षण कर रहा है। त्रिनिदाद और टोबैगो के प्रमुख हिंदू संगठन सनातन धर्म महासभा (एस.डी.एम.एस) के महासचिव सतनारायण महाराज ने घोषणा की है कि उनके संगठन ने अपने 60 प्राथमिक और माध्यमिक संस्थानों में इस्तेमाल के लिए हिंदी पाठ्यक्रम विकसित किया है। सिंह ने कहा, यह संगठन कुछ हद तक इस कार्य को पूरा करने में सक्षम है क्योंकि वे अब देश के विभिन्न हिस्सों में 18 हिंदी कक्षाएं संचालित कर रहे हैं और 200 से अधिक छात्र वहां हिंदी सीख रहे हैं।

9. त्रिनिदाद और टोबैगो के विश्वविद्यालयों में भाषा के रूप में हिंदी पाठ्यक्रम

त्रिनिदाद और टोबैगो के सेंट ऑगस्टीन में स्थित वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय हिंदी भाषा पाठ्यक्रम प्रदान करता है। छात्रों को नई भाषा और संस्कृति से अधिकतम परिचय कराने के लिए जहाँ तक संभव हो सके, लक्ष्य भाषा में कक्षाएँ संचालित की जाती हैं। पाठ्यक्रम के दौरान, छात्र अपने व्यक्तिगत जीवन से संबंधित स्थितियों में हिंदी में संवाद करने की क्षमता विकसित करते हैं। इसके अलावा, छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे कक्षाओं की तैयारी के लिए स्व-अध्ययन पर समय व्यतीत करें और कक्षा में किए गए कार्य की समीक्षा करें और उसे समेकित करें। छात्रों को भाषा सीखने वालों के रूप में अपनी स्वायत्तता को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों का एक संग्रह विकसित करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। प्रत्येक स्तर पर, 100% इन-कोर्स परीक्षण मूल्यांकन का रूप है। पाठ्यक्रम दो स्तरों पर पेश किया जाता है:

- लेवल 1 (ए और बी) - शुरुआती
- लेवल 2 (ए और बी) - निम्न मध्यवर्ती

10. त्रिनिदाद में विश्व हिंदी दिवस समारोह

हिंदी को विश्व की एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में बढ़ावा देने के लिए हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। भारत के बाहर स्थित भारतीय दूतावास विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के सहयोग से विशेष कार्यक्रम आयोजित करके विश्व हिंदी दिवस मनाते हैं।

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया था, जिसमें 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। तब से यह सम्मेलन मॉरीशस, यूनाइटेड किंगडम और त्रिनिदाद और टोबैगो जैसे कई अन्य देशों में आयोजित किया जा चुका है।

भारतीय उच्चायोग ने 18 जनवरी, 2020 को सैन फर्नांडो स्थित प्रतिष्ठित साउथर्न एकेडमी फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स (ड्झ) में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। यह कार्यक्रम महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान और त्रिनिदाद और टोबैगो के हिंदी निधि फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित किया गया था।

11. विश्व हिंदी सम्मेलन

विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने 15-17 फरवरी, 2023 तक फिजी में आयोजित 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन में श्री रवींद्र नाथ महाराज (रवि जी) को विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया। इससे पहले, 5वां विश्व हिंदी सम्मेलन अप्रैल 1996 में पोर्ट ऑफ स्पेन में आयोजित किया गया था। श्रीमती कमला रामलखन को 2015 में भारत के भोपाल मध्य प्रदेश में आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में और डॉ. रामप्रसाद परसराम को 2018 में मॉरीशस में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में विश्व हिंदी पुरस्कार प्रदान किया गया। मिशन द्वारा सितंबर 2024 में एक अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन भी किया जा रहा है।

12. त्रिनादाद में भारतीय मूल की प्रसिद्ध हस्तियां

विद्याधर सूरजप्रसाद नायपॉल ने 30 से अधिक पुस्तकें लिखीं और 2001 में नोबेल साहित्य पुरस्कार जीता। नायपॉल त्रिनिदाद में जन्मे एक भारतीय सिविल सेवक के बेटे हैं, उन्होंने इंग्लैंड में अपना जीवन शुरू करने से पहले ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया। उनके प्रमुख उपन्यासों में से एक अर्ध-आत्मकथात्मक ए हाउस फॉर मिस्टर बिस्वास था, जो कैरिबियन में भारतीय प्रवासियों के लिए अपनी जड़ों को पकड़े हुए समाज में एकीकृत करने की लगभग असंभव कार्य को देखता था। नायपॉल की साहित्यिक रचनाएँ अंग्रेजी में थीं, फिर भी उनका लेखन बहुत प्रभावशाली था और वे साहित्य में नोबेल पुरस्कार जीतने के लिए भारत से आए समुदाय का एक उदाहरण हैं।

13. त्रिनिदाद और टोबैगो से सीख लेने योग्य सबक।

त्रिनिदाद और टोबैगो के वर्तमान नागरिक, हालाँकि वे भारत से पलायन कर गए थे, फिर भी उन्होंने अपनी 5वीं पीढ़ी तक भाषा की प्रथाओं और विरासत को आगे बढ़ाया है। यह सच है कि प्रत्येक देश की सरकार ने नागरिकों को अपने सामाजिक मानकों को ऊपर उठाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। लेकिन त्रिनादाद और टोबैगो के लोगों के उत्साह और ज्ञान, बुद्धि को अगले स्तर तक ले जाने के जुनून की सराहना करनी चाहिए।

जैसा कि इतिहास दोहराता है और आधुनिक युग को कई सबक सिखाता है और निश्चित रूप से इस डिजिटल युग में हमारी भाषाओं और इसकी समृद्ध विरासत की गौरव को बचाने के लिए बहुत सी चीजें सीखना ज़रूरी है। इसका एक उदाहरण हमारे सबसे पुराने धर्म के लुप्त इतिहास से दिया जा सकता है। जैसे बौद्ध धर्म जिसकी स्थापना भारत में हुई और कई अंतरराष्ट्रीय देशों में फैलीं और विदेशी देश बौद्ध धर्म की शाश्वत शांति, सद्भाव और ज्ञान से वे लाभान्वित हुए।

जहाँ अन्य देशों ने हमारी विभिन्न प्रथाओं को स्वीकार किया है और वे सामाजिक जीवन और आर्थिक विकास के विभिन्न पहलुओं में प्रगति कर रहे हैं। हमें अपनी भाषाओं के समझ और उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए और इसके सुधार की दिशा में और अधिक योगदान देने के लिए आगे आना चाहिए।

हिंदी को संचार ही नहीं विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में बल्कि वित्तीय बाजार और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सॉफ्टवेयर प्रोग्रामिंग की भी भाषा बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बैंकिंग और बीमा व्यवसाय के प्रति अधिक से अधिक वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए हिंदी को अगले स्तर की भाषा के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

एक लेखक के रूप में मेरा मानना है कि हिंदी अगली वैश्विक भाषा बन सकती है और यह मानवता को संचार बाधाओं को समाप्त करने और आम भाषा के रूप में, समानता, बंधुत्व और भाषा का माध्यम बनने में मदद कर सकती है जिसे हर कोई आसानी से समझ सकता है, स्वीकार कर सकता है, सहमत हो सकता है और एक साथ प्रगति कर सकता है।

❊ जय हिंद ❊ जय भारत ❊

14. संदर्भ

1. हिंदी भारत से इन पांच देशों में कैसे पहुंची : इंडियन एक्सप्रेस लेख 14 सितंबर, 2018।
2. राष्ट्रीय पुस्तकालय और सूचना प्रणाली प्राधिकरण : त्रिनिदाद और टोबैगो : भारतीय आगमन दिवस।
3. भारत-त्रिनिदाद और टोबैगो संबंध : विदेश मंत्रालय का पोर्टल।
4. त्रनिदाद के स्कूलों के लिए हिंदी पाठ्यक्रम- पारस रामौतार 04 फरवरी, 2008 हिंदुस्तान टाइम्स।

आलेख

कार्यालयीन हिन्दी : दशा और दिशा

प्रशांत कसोधन
मंडल प्रबंधक
प्रभादेवी खुदरा आस्ति केंद्र

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और 'भाषा' समाज के लोगों के बीच जनसंपर्क एवं संवाद का माध्यम होती है। बिना संपर्क और संवाद के कोई भी समाज जीवंत नहीं रह सकता अर्थात बिना भाषा के किसी भी समाज का अस्तित्व संभव ही नहीं है। जिस प्रकार मनुष्य को खाने के लिए अन्न, पीने के लिए पानी, पहनने के लिए कपड़े की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार आपस में सम्पर्क और संबंध बनाए रखने के लिए व एक-दूसरे के भावों को समझने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा से ही मनुष्यों का जीवन सरल और सुगम बनता है।

भारत में अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भाषाओं में बातचीत होती है। इन सभी भाषाओं का अपना एक यात्राक्रम रहा है। लेकिन भारतीय समाज की सम्पर्क भाषा 'हिन्दी' ने जहाँ वैदिक संस्कृत से यात्रा करते हुए आधुनिक हिन्दी का स्वरूप ग्रहण किया है उसे एक सामाजिक प्रक्रिया का आधार ही कहना चाहिए।

समाज निरन्तर अपने विकास के साथ-साथ भाषाओं का भी विकास करता है। समाज में होने वाले परिवर्तन की तरह ही उसकी अपनी भाषा में भी कभी स्थायित्व नहीं होता है। इसीलिए निरन्तर परिवर्तनों की राह पर चलते हुए हिन्दी अपने अनेक रूप, कलेवरों को बदलते हुए वर्तमान में सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकी है।

हिंदी भारत की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। इसका सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्व बेहद महत्वपूर्ण है। हिंदी भाषा न केवल भारत की प्राचीन विरासत है, बल्कि यह देश के सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक परिदृश्य में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से हिंदी का कार्यालयीन भाषा के रूप में महत्व बढ़ा है, क्योंकि यह सरकार और अन्य संस्थानों के बीच संचार के साधन के रूप में स्थापित हो चुकी है। इस लेख में हिंदी भाषा के कार्यालयीन प्रयोग, उसके ऐतिहासिक संदर्भ, विकास, चुनौतियाँ और भविष्य के दृष्टिकोण पर व्यापक रूप से चर्चा करना चाहूँगा।

हिंदी का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

हिंदी का इतिहास प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा से जुड़ा हुआ है। हिंदी भाषा का उद्भव संस्कृत की 'खड़ी बोली' से हुआ। मध्यकालीन समय में हिंदी ने एक प्रभावशाली साहित्यिक और सांस्कृतिक भाषा के रूप में उभरना शुरू किया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय हिंदी ने एकता का प्रतीक बनकर राष्ट्रभाषा के रूप में स्थान बनाया था। 1949 में संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया, जो कि एक ऐतिहासिक घटना थी। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी भारत की अधिकारिक राजभाषा घोषित की गई।

हिंदी का कार्यालयीन प्रयोग

कार्यालयीन हिंदी का अभिप्राय उस हिंदी से है जिसका प्रयोग सरकारी कार्यालयों के दैनिक कार्यों में होता है। दूसरे शब्दों में वह हिंदी जिसका प्रयोग वाणिज्यिक, पत्राचार, प्रशासन, व्यापार, चिकित्सा, योग, संगीत, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में होता है उसे कार्यालयीन या कामकाजी हिंदी कहते हैं।

संवैधानिक रूप से कार्यालयीन हिन्दी के लिए 'राजभाषा हिन्दी' का प्रयोग किया जाता है। इसलिए कार्यालयीन हिन्दी के उद्देश्य को समझने के लिए राजभाषा हिन्दी तथा उसके संवैधानिक आधार की जानकारी भी होना आवश्यक है।

सामान्य नागरिक 'राजभाषा हिन्दी' को भ्रमवश राज्यों की हिन्दी मानते हैं। लेकिन राजभाषा का प्रयोग अंग्रेजी में 'Official Language' के रूप में किया जाता है। इसका तात्पर्य 'राज' की

भाषा से है। 'राज की भाषा' का मतलब है राजतंत्र की, राज-काज की भाषा, प्रशासन की भाषा, सरकारी काम-काज की भाषा या कार्यालय की भाषा से है।

यह विदित ही है कि हिन्दी भाषा पिछले एक हजार वर्षों में भारत की प्रधान भाषा रही है। ब्रिटिश काल में अंग्रेजों ने सबसे पहले राजकाज के लिए हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया था क्योंकि उस समय तक भारत की जनता अंग्रेजी नहीं जानती थी। लेकिन धीरे-धीरे अंग्रेजी भाषा को महत्व देने के उद्देश्य से भाषा बनाने तथा अपनी सभ्यता और संस्कृति के प्रति आकर्षित करने के लिए सन् 1835 ई. में लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी को शासन की भाषा के रूप में स्थापित किया। मैकाले की उस नीति का ही परिणाम रहा कि भारत की स्वतंत्रता के पश्चात राजभाषा के लिए हुई बैठक में हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी का नाम भी चर्चा में रखा गया। लेकिन गांधी जी किसी भी तरह से अंग्रेजी के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने खुले तौर पर हिन्दी को राजभाषा बनाने का समर्थन किया। किन्तु अंग्रेज सरकार के पिट्ठू रहने वाले अनेक राजनीतिज्ञों ने भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी के साथ ही अंग्रेजी को भी रखा।

मैकाले ने भारतीय शिक्षा नीति को बदलकर अंग्रेजी माध्यम के स्कूल बनाने की कवायत की जिससे उसका अप्रत्यक्ष रूप से असर पड़ा आज हमारे बच्चे हिन्दी की गिनती जानने के लिए अंग्रेजी के मोहताज हैं। मैं किसी भी भाषा के ज्ञान के विरोध में नहीं हूं पर हमें अपनी भाषा को सबसे ऊपर के पायदान में रखना चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए। जब हम खुद अपनी भाषा व संस्कृति को सम्मान देंगे तभी उसे बाहर भी सम्मान मिलेगा।

1949 में राजभाषा अधिनियम के अंतर्गत हिंदी को कार्यालयीन भाषा के रूप में स्थापित किया गया। यह कदम इस दृष्टिकोण से उठाया गया कि हिंदी को एक समान्य भाषा के रूप में प्रचारित किया जाए, जिसे विभिन्न भाषाई क्षेत्रों के लोग भी समझ सकें। हालाँकि अंग्रेजी भी एक सहायक कार्यालयीन भाषा बनी रही, लेकिन हिंदी का प्रयोग केंद्र सरकार के अधिकांश कार्यालयों में बढ़ता चला गया। केंद्र सरकार के सभी सरकारी दस्तावेज़, अधिसूचनाएँ और जनसंपर्क का माध्यम हिंदी में जारी किए जाने लगे। इससे कार्यालयों में हिंदी का प्रभावी उपयोग संभव हो सका। मोदी सरकार और अटल बिहारी वाजपेई के समय हिंदी का कार्यालयीन प्रयोग भली भांति विकसित हुआ।

हिंदी और संघीय व्यवस्था

भारत एक संघीय देश है, जहां विभिन्न राज्यों की अपनी-अपनी भाषाएं हैं। हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग को सुगम बनाने के लिए सरकार ने अनेक नीतियाँ बनाई। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351

के अनुसार, केंद्र सरकार का कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करें और उसका विकास करें, ताकि यह देश के संपूर्ण क्षेत्र में संपर्क भाषा बन सके। संघीय ढांचे में हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग संतुलित रूप से किया गया है, ताकि भाषाई विविधता का सम्मान किया जा सके। हमारे यहाँ भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कहा है कि -

जार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी।

प्रयोजनमूलक हिन्दी (Functional Hindi) से तात्पर्य हिन्दी के उस स्वरुप से है जो विज्ञान, तकनीकी, विधि, संचार एवं अन्य गतिविधियों में प्रयुक्त होती है। इसे 'कामकाजी हिन्दी' भी कह सकते हैं।

कार्यालय हिंदी और सामान्य हिंदी में अंतर?

सामान्य हिंदी का प्रयोग संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है इसमें अपने राग द्वेष, आक्रोश, राष्ट्र प्रेम तथा विद्रोह की अभिव्यक्तियों को आवश्यकतानुरूप प्रयोग में लाया जाता है लेकिन कार्यालय हिंदी का संबंध सामाजिक संवेदनाओं या भावनाओं से नहीं होता ना ही वह सामाजिक विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

हिंदी के विकास हेतु सरकारी प्रयास

सरकार ने हिंदी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से बहुत सी संस्थाएँ और नीतियाँ बनाई हैं। इनमें प्रमुख रूप से राजभाषा विभाग का नाम आता है, जो हिंदी भाषा को कार्यालयों में लागू करने की दिशा में सक्रिय रूप से कार्य करता है। इसके अलावा, हिंदी को कंप्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से कार्यालयों में लागू करने के लिए कई तकनीकी पहल की गईं हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय और हिंदी सलाहकार समितियाँ जैसी संस्थाएँ भी हिंदी भाषा के प्रसार और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती चली आ रही हैं।

कार्यालयीन हिंदी की चुनौतियाँ

हालांकि हिंदी को कार्यालयीन भाषा के रूप में स्थापित करने में काफी प्रगति हुई है, लेकिन इसके सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। सबसे प्रमुख चुनौती देश की बहुभाषी प्रकृति है। दक्षिण भारतीय राज्यों, विशेषकर तमिलनाडु और केरल में हिंदी के प्रति प्रतिरोध देखने को मिलता है, क्योंकि ये राज्य अपनी भाषाई पहचान पर जोर देते हैं। इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी का प्रभाव भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। आज के समय में वैश्वीकरण और मल्टीनेशनल कंपनियों के उदय के साथ अंग्रेजी का प्रयोग बढ़ा है। कई सरकारी और निजी कार्यालयों में भी अंग्रेजी का प्रमुखता से प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा, हिंदी के तकनीकी शब्दावली को समझने में भी कभी-कभी कठिनाई होती है, जिससे कार्यालयों में अंग्रेजी की ओर झुकाव बना रहता है।

हमारा अंग्रेजी के प्रति मोह ही हिन्दी को वह सम्मान नहीं दिला सका आज हिंदी अपने ही घर में दोयम दर्जे की हो गई है। हम अपने ही देश में काम-काज हिंदी में करने में शर्म महसूस करते हैं और दूसरे देश अपनी ही भाषा में बोलने और काम करने को महत्व देते हैं पर संस्कृत जो सभी भाषाओं की जननी है उसकी बेटी को ही हमने उपेक्षित भाव से देखा। इंग्लिश मीडियम बच्चों को देखता हूं कि उन्हें यदि सत्ताइस बोला जाए तो वह नहीं जानते, सत्ताइस मीनिंग ट्वेंटी सेविन पूंछते हैं हमारे लिए इससे शर्मनाक बात और क्या हो सकती है।

*तकनीकी प्रगति और कार्यालयीन हिंदी

तकनीकी युग में कार्यालयीन हिंदी का प्रयोग और भी बढ़ गया है। सरकारी वेबसाइटें और पोर्टल अब हिंदी में भी उपलब्ध हैं। इसके अलावा, हिंदी में टाइपिंग और अनुवाद के लिए कई सॉफ़्टवेयर उपलब्ध हो चुके हैं, जिससे हिंदी भाषा का प्रयोग और भी सरल हो गया है। हिंदी में ई-मेल, मैसेजिंग और डेटा एंट्री अब पहले से कहीं अधिक सहज हो गए हैं। इससे सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में हिंदी का प्रसार हो रहा है।

कार्यालयीन हिंदी और साहित्यिक हिंदी में अंतर

कार्यालयीन हिंदी और साहित्यिक हिंदी में कुछ भिन्नताएं हैं। कार्यालयीन हिंदी अपेक्षाकृत सरल, सीधी और कम अलंकारिक होती है, क्योंकि इसका उद्देश्य सरलता और स्पष्टता से संवाद करना होता है। जबकि साहित्यिक हिंदी अधिक शैलियों, शब्दावली और अभिव्यक्ति की विविधता से भरी होती है। कार्यालयीन हिंदी को इस प्रकार से विकसित किया गया है कि यह सभी सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों और जनता के लिए बोधगम्य हो। इसका उद्देश्य आम बोलचाल की भाषा में सरलता से संदेश देना होता है।

कार्यालयीन भाषा का मतलब है, सरकारी कार्यालयों और दूसरे क्षेत्रों में दैनिक कामकाज के लिए इस्तेमाल होने वाली हिन्दी। इसका मकसद सरल और व्यावहारिक तरीके से संचार करना है। कार्यालयीन हिन्दी का इस्तेमाल, व्यक्तियों के बीच व्यावसायिक प्रस्तुति, सामग्री साझाकरण, संदेश प्रसार, ईमेल, शब्द, आधिकारिक कागज़ात, सांख्यिकीय रिपोर्ट और अनुवाद जैसे कामों के लिए किया जाता है।

कार्यालयीन हिन्दी की कुछ खास बातें

इसमें सरल और स्पष्ट भाषा का इस्तेमाल किया जाता है।

कार्यालय में लिखे जाने वाले नोट, अंग्रेज़ी में passive voice और third person के बजाय सीधे-सपाट शब्दों और आसान वाक्यों में लिखे जाते हैं।

कार्यालयीन हिन्दी में कर्म-वाच्य का इस्तेमाल ज़्यादा होता है।

कार्यालयीन हिन्दी के कुछ उदाहरण - रिमार्क, कमेंट, ऑब्जर्वेशन, और ऑपिनियन जैसे शब्दों का इस्तेमाल करके प्रशासनिक क्षेत्र में धन्यवाद, राय, टिप्पणी, मंतव्य, मत, और विचार का ज़िक्र किया जाता है।

कार्यालय हिंदी की विशेषताएं

कार्यालयीन हिन्दी की महत्वपूर्ण विशेषताओं में शामिल हैं एक स्पष्ट और सुलभ भाषा होना, व्यवसायिक शब्दावली, प्रोफेशनल रूपरेखा, और यथार्थवादी लेखन। इस प्रकार कार्यालयीनन हिन्दी व्यापारिक संदर्भों में उपयोग होने वाली एक भाषा है जो संचार को सुगम और सुविधाजनक बनाने का उद्देश्य रखती है और हिंदी भाषा को बढ़ावा देती है।

कार्यालयीन हिन्दी का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करना है। यह उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण है जो हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में रखते हैं और उन्हें अपने पेशेवर माध्यमों में भी उपयोग करने का अवसर देता है।

हिंदी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव

हिंदी का प्रभाव न केवल भारत में बल्कि विश्व के कई देशों में भी है। हिंदी भाषियों की संख्या के मामले में यह विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। वैश्विक स्तर पर हिंदी फिल्मों, संगीत और साहित्य का भी बहुत प्रभाव है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की मांग बढ़ रही है, और कई देशों में इसे सीखने और समझने की कोशिश की जा रही है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को एक आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता

दिलाने की कोशिशें भी चल रही हैं। हिंदी को कार्यालयीन भाषा के रूप में अपनाने से भारत की सांस्कृतिक पहचान को विश्व स्तर पर बढ़ावा मिल सकता है।

भारत में विभिन्न भाषाओं में संवाद होता है। इन सभी भाषाओं की अपनी एक यात्रा रही है लेकिन भारतीय समाज की सम्पर्क भाषा 'हिन्दी' ने जहाँ वैदिक संस्कृत से यात्रा करते हुए आधुनिक हिन्दी का स्वरूप ग्रहण किया है वह एक सामाजिक क्रिया का आधार है। समाज निरन्तर अपने विकास के साथ-साथ भाषाओं का भी विकास करता है। समाज में होने वाले परिवर्तन की तरह ही उसकी अपनी भाषा में भी कभी स्थैर्य नहीं रहा। इसीलिए निरन्तर परिवर्तनों की धार पर चलकर हिन्दी अपने अनेक रूपों के साथ वर्तमान में समाज के सम्मुख उपस्थित है। हिन्दी की प्रयोजनीयता के आधार पर उसके विभिन्न रूप इस प्रकार हैं-

1. साहित्यिक हिन्दी
2. कार्यालयीन हिन्दी
3. व्यावसायिक हिन्दी
4. विधिपरक हिन्दी
5. जनसंचार के माध्यमों की हिन्दी
6. वैज्ञानिक और तकनीकी हिन्दी
7. सामाजिक हिन्दी

हिन्दी के इन विभिन्न रूपों और अनेक अन्य रूपों में भाषा का जो स्वरूप होता है वह कार्यालयीन हिन्दी में प्रयुक्त नहीं होता। कार्यालयीन हिन्दी इससे भिन्न पूर्णतः मानक एवं पारिभाषिक शब्दों को ग्रहण करके चलती है। कार्यालयीन हिन्दी सामान्य रूप से वह हिन्दी है जिसका प्रयोग कार्यालयों के दैनिक कामकाज में व्यवहार में लिया जाता है। विभिन्न विद्वानों ने यह माना है कि चाहे वह किसी भी क्षेत्र का कार्यालय हो, उसमें प्रयोग में ली जाने वाली हिन्दी कार्यालयीन हिन्दी ही कहलाती है। डॉ. डी.के. जैन का मत है कि- वह हिन्दी जिसका दैनिक व्यवहार, पत्राचार, वाणिज्य, व्यापार, प्रशासन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, योग, संगीत, ज्योतिष, रसायनशास्त्र आदि क्षेत्रों में प्रयोग होता है, उसे कार्यालयीन या कामकाजी हिन्दी कहा जाता है। (प्रयोजनमूलक हिन्दी, पृष्ठ 9) इसी तरह डॉ. उषा तिवारी का मानना है कि सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होनें वाली भाषा को प्रशासनिक हिंदी या कार्यालयीन हिंदी कहा जाता है। हिन्दी का वह स्वरूप जिसमें प्रशासन के काम में आने वाले शब्द, वाक्य अधिक प्रयोग में आते हों।

इन दोनों परिभाषाओं में देखा जाए तो एक परिभाषा कार्यालय के कार्यक्षेत्र को अत्यन्त विस्तृत दिखाता है वहीं दूसरी परिभाषा में वह केवल सरकारी कार्यालयों में प्रयोग में ली जाने वाली भाषा ही है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यालयों की उपस्थित के कारण कार्यालय को किसी भी परिभाषा के वृत्त में समेटना बहुत कठिन कार्य है किन्तु प्रचलन की दृष्टि से कार्यालयीन हिन्दी को सरकारी कार्यालयों में प्रयोग में ली जाने वाली भाषा के रूप में ही जाना है। इन सरकारी कार्यालयों में केन्द्र अथवा राज्य सरकारों के अपने अथवा उनके अधीनस्थ आने वाले विभिन्न मंत्रालय तथा उनके अधीन आने वाले संस्थान, विभाग अथवा उपविभाग एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों आदि को शामिल किया जाता है। सरकार का कोई भी कार्यालय, चाहे वह उसके अधीनस्थ हो अथवा सम्बद्ध हो, वह सरकारी कार्यालय ही कहा जाएगा। इसलिए इन कार्यालयों के कामकाज में प्रयोग की जाने वाली हिन्दी को कार्यालयीन हिन्दी कहा जाता है।

कार्यालयीन हिन्दी अपने आप में एक व्यापक अर्थ की अभिव्यक्ति रखता है। चूँकि साहित्यिक क्षेत्र हो अथवा व्यावसायिक, पत्रकारिता का क्षेत्र हो या विज्ञान और तकनीकी का क्षेत्र... सभी क्षेत्रों से सम्बद्ध कार्यालयों में काम करने वाले व्यक्ति एक तरह से कार्यालयीन हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं। इसलिए कार्यालयीन हिन्दी अपने-आप में व्यापक अर्थ की अभिव्यंजना रखती है अत: हमें आवश्यक है कि हमारी राजभाषा को शीघ्रातिशीघ्र दैनिक कार्यालयीन कार्य में लागू करने का संकल्प लें।

अपनी भाषा में ही प्रगति हमारी प्रगति है और इसी में राष्ट्र की प्रगति है। हिंदी को राष्ट्र की जनभाषा व संपर्कीय भाषा बनाने का कार्य स्वतंत्रता से कई वर्षों पहले ही प्रारंभ किया गया था। विनोबा भावे, राजा राममोहन राय, मैथिलीशरण गुप्त, गुरु ऋषि, राष्ट्रपिता गांधी और भी न जाने कितने महापुरुषों ने हिंदी के भारत की आवश्यकता को पहले ही समझ लिया, अपने भाषणों और कार्यों द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्यक्रमों को प्रारंभिक शुरुआत कर दी थी।

महात्मा गांधी ने कहा था, केवल एक हिंदी में ही संपूर्ण भारत की राष्ट्रभाषा बनने की क्षमता है। स्वामी दयानंद सरस्वती के शब्दों में हिंदी के द्वारा ही सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। विशेष महापुरुष तब ही हिंदी की महत्ता को भली-भांति समझते थे तब प्रश्न यह उठता है कि हमें हिंदी को आगे ले जाने में बाधाएं क्यों आ रही हैं?

राजभाषा के रूप में अंग्रेजी को 67 वर्ष तक क्यों ढोया गया। इतना समय किसी भी ऐसे राष्ट्र की जहां 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या हिंदी भाषी है, उसके लिए राजभाषा साहित्य के लिए काफी कुछ किया जाना चाहिए था ऐसा क्यों नहीं हो पाया, आज उन दावों को

एक बार फिर से नए सिरे से खंगालने की आवश्यकता है। आज भी हिंदी राजभाषा का दर्जा तो प्राप्त कर चुकी है पर राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त कर ने के लिए कानून की मोहताज है।

हिंदी को प्रतिष्ठित होने में सबसे बड़ी बाधा अंग्रेजी है। इस बाधा को दूर करने के लिए सबसे पहले हमें अंग्रेजी की मानसिकता से मुक्त होना होगा। वाल्टर चेनिंग का कथन है विदेशी भाषा किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के राज काज शिक्षा दीक्षा की भाषा का होना सांस्कृतिक दासता है।

भारत के सन्दर्भ में एक विशिष्ट बात घटित होती है। आज हम भौगोलिक रूप से तो स्वतंत्रता प्राप्त कर चुके हैं, लेकिन अंग्रेजी दासता से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं।

इस सांस्कृतिक दासता से मुक्त होने के लिए हमें हिंदी का सहारा लेना चाहिए और हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में सम्मान देने की हर-संभव कोशिश करनी चाहिए।

हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कई प्रयास किए जा रहे हैं। प्रत्येक सरकारी संस्थान द्वारा समय-समय पर हिंदी पखवाड़ा, कार्यशालाएँ और हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है, जिससे कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। इसके अतिरिक्त, हिंदी के प्रयोक्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार और मान्यता दी जाती है। ये प्रयास सुनिश्चित करते हैं कि हिंदी न केवल एक कार्यालयीन भाषा के रूप में बल्कि एक प्रभावी संचार माध्यम के रूप में भी अपनी जगह बनाए रखे। बैंकों के कामकाज के लिए हिंदी भाषा या क्षेत्रीय भाषा को माध्यम बनाने के लिए कड़े निर्देश दिए गए।

कार्यालयीन हिंदी का भविष्य

आधुनिक युग में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है। भारत सरकार द्वारा हिंदी को और भी व्यापक रूप से कार्यालयों में लागू करने की दिशा में कदम उठाए जा रहे हैं। डिजिटल युग में हिंदी का प्रसार और भी तेज़ हो रहा है। इंटरनेट, मोबाइल एप्लीकेशन्स, और सोशल मीडिया के जरिए हिंदी का प्रयोग बढ़ा है। आने वाले समय में हिंदी कार्यालयों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ-साथ देश के नागरिकों के बीच संचार की एक सशक्त भाषा बनी रहेगी।

निष्कर्ष

हिंदी भाषा न केवल भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर है, बल्कि यह कार्यालयीन भाषा के रूप में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हालांकि इसके सामने कई चुनौतियाँ हैं, लेकिन सरकारी प्रयासों और तकनीकी प्रगति के माध्यम से इन चुनौतियों को पार किया जा सकता है। हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है और यह निस्संदेह भारत की पहचान और उसकी एकजुटता का प्रतीक बनी रहेगी। कार्यालयीन हिंदी का प्रसार न केवल भाषा के विकास में सहायक होगा, बल्कि यह भारत के संघीय ढांचे को भी और मजबूत करेगा, जहां विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियाँ मिलकर एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण करती हैं।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि आज भारत में हिंदी की हैसियत भारत के राष्ट्रपति जैसी है और अंग्रेजी की प्रधानमंत्री जैसी। सरल शब्दों में कहने को तो हमारे यहां राष्ट्रपति को प्रधानमंत्री से अधिक अधिकार प्राप्त है पर सारे कामकाज प्रधानमंत्री ही देखते हैं। हमें इस नीति में बदलाव करते हुए अपनी हिंदी को सुदृढ़ और मजबूत बनाने के लिए इसका अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा। बाहर विदेश में भी हमें अपनी भाषा बोलने में शर्म संकोच छोड़ इसको सम्मान देना होगा, हमें इसे इतना सक्षम बनाना होगा कि लोग हमारी भाषा सीखने के लिए लालायित हों, आज शायद यही हो रहा है, सॉफ्टवेयर आ जाने से विदेशी हमारी भाषा को सीख रहे हैं, कई विदेशी यूनिवर्सिटी में आज हिंदी भाषा सिखाई जा रही है। क्या हमारे स्वामी विवेकानंद जी स्वामी रामतीर्थ जी ने पहले अपने भाषणों में हिंदी भाषा का प्रयोग नहीं किया है?

वंदे मातरम

हमें प्रयत्नपूर्वक हिंदुस्तान की सभी बोलियों और भाषाओं में जो उत्तम चीजें हैं, उन्हें हिन्दी भाषा की समृद्धि के लिए उसका हिस्सा बनाना चाहिए और यह प्रक्रिया अविरल चलती रहनी चाहिए।

– श्री नरेंद्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

आलेख

हिंदी की लोकप्रियता में बाधाएं

धीरज जुनेजा
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत

संस्कृति किसी समाज या देश की आत्मा होती है और 'भाषा' संस्कृति का अभिन्न अंग है जो संस्कृति के अन्य तत्वों के परिवहन, प्रसार और संचालन में सहायक होती है। यदि आप किसी समाज या स्थान या देश की संस्कृति को समझना चाहते हैं तो आपको उस देश की भाषा से सबसे पहले सामना करना पड़ता है। यदि आप उस समाज देश की भाषा से परिचित हैं तो केवल दो प्रक्रियाओं अर्थात शब्दग्रहण (पढ़ना / सुनना) व अर्थबोध (समझना) से गुजरना होता है वहीं यदि आप उस भाषा से परिचित नहीं हैं तो आपको तीन प्रक्रियाओं से गुजरना होता है: पढ़ना / सुनना, अपनी भाषा में अनुवाद करना व समझाना। कई बार अनुवाद के कारण वास्तविकता एकदम सटीक रूप में उपस्थित नहीं हो पाती है। अतः संस्कृति को परखने समझने और जानने के लिए उस स्थान या समाज विशेष की भाषा से रु-ब-रु होना एक अनिवार्यता हो जाती है। भारत जैसा विशाल देश, जो अपनी संस्कृति तथा विविधता में एकता के लिए विख्यात है। भाषा में भी एक ऐसी कड़ी की आवश्यकता है जो पूरे देश की संस्कृति को अभिव्यक्त कर सके और अन्य भाषाओं के बीच सामंजस्य स्थापित कर पाए। हिन्दी निश्चित रूप से इस कड़ी के रूप में अपनी भूमिका निभा रही है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हमारे देश में कुल 19,569 भाषाएँ और बोलियाँ मातृभाषा के रूप में प्रचलित हैं (स्रोत इंटरनेट) अर्थात 140 करोड़ की आबादी की मातृभाषा 19,569 में से कोई एक भाषा है। उनमें से 96.71% की आबादी की मातृभाषा उन 22 भाषाओं में से एक है जो भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची के अंतर्गत शामिल है। इसके साथ ही भारत में 75 प्रतिशत से अधिक लोग हिन्दी बोलते हैं और पूरे विश्व में 80 करोड के लगभग लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। इस प्रकार से हिन्दी निश्चित रूप से संपर्क भाषा का कार्य कर रही है। यह हमारी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।

हिन्दी की लोकप्रियता के मार्ग में बाधाएँ:

लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति: हिन्दी भारत की राजभाषा, संपर्क भाषा है परंतु आज भारत में हिन्दीभाषी कहीं-न-कहीं एक हीनता की भावना से ग्रसित हैं और यह हीनता अचानक नहीं आई है। इसकी नीव लार्ड मैकाले ने 1835 में रख दी थी। लॉर्ड मैकाले भाषा की प्रकृति एवं व्यक्तित्व निर्माण में उसकी भूमिका को भली-भांति समझता था। वह जानते थे कि भारत को लंबे समय तक पराधीन बनाए रखने के लिए उन्हें उनकी प्राचीन संस्कृति से दूर करना होगा और देश की प्राचीन शिक्षा पद्धति को बदलना होगा।

इसका परिणाम है कि यह मानसिकता अब स्कूल, कॉलेजों से निकलकर हर घर में घुस चुकी है। आज माताएँ भी अपने बच्चों को मातृभाषा के रूप में अंग्रेजी सिखाने को वरीयता दे रही है चाहे वह अंग्रेजी दोयम दर्जे की ही क्यूँ न हो। इसीलिए जहां विकसित देशों में मानसिक परिपक्वता की औसत उम्र 16-18 वर्ष है वहीं हमारा देश मानसिक परिपक्वता के लिए 25-28 वर्ष/प्रति व्यक्ति का समय लेता है। शिक्षा नीति में द्विभाषिकता के कारण हमारा दिमाग सृजनशीलता पर ज्यादा समय नहीं दे पाता। उसका अधिकांश समय अनुवाद और अंग्रेजी को सीखने-दोहराने में लगता है। यदि आप आंकड़ों पर ध्यान देंगे तो विश्व में सर्वोत्तम 10 औसत आई. क्यू. (खट) वाले देशों में एक खास बात यह है कि वे सभी पूर्णतः अपनी भाषा में कार्य करते हैं। औसत आई क्यू के सूची में भारत 83वें पायदान पर है इससे स्पष्ट है कि अपनी भाषा का सृजनशीलता और व्यक्तित्व निर्माण और आई. क्यू. क्षमता पर कितना असर होता है।

भारत का वर्गीकरण और सरकारी नीतियाँ: सर्वप्रथम हमें जानना होगा कि अंग्रेजों ने भारत को 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर पराधीन कर रखा था। हमारी इस फूट ने उन्हें 200 वर्षों तक यह अवसर प्रदान किया था। स्वतन्त्रता आंदोलनों के दौरान हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा थी किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत के राज्यों का वर्गीकरण भाषाओं के आधार पर किया गया अर्थात फिर से फूट डाली गई और हिन्दी को राजभाषा बना दिया गया। वर्ष 1976 में राजभाषा नियम के लागू होने के साथ पुनः इन राज्यों को हिन्दी समझने बोलने के आधार पर तीन भाषायी वर्गों 'क' 'ख' एवं 'ग' (भाषिक क्षेत्र) में बांट दिया गया। हालांकि इस बँटवारे का उद्देश्य भारत के उस भाषायी वर्गों को राजभाषा सीखने, पढ़ने लिखने पर विशेष ज़ोर प्रदान करना था। इसके लिए सरकार की ओर से शिक्षण योजनाएँ लागू की गयी लेकिन हिन्दी को संविधान द्वारा अनिवार्य नहीं किया गया और अंग्रेज़ी को सह राजभाषा के रूप में बरकरार रखा गया साथ ही स्कूली शिक्षाओं में अंग्रेजो के अध्यापन पर विशेष जोर दिया जाने लगा और आज हालात ऐसे हैं कि हिन्दी माध्यम की अपेक्षा अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों और कॉलेजों की कुल संख्या अधिक है।

व्यावसायिक एवं उच्चतर शिक्षा में पाठ्यक्रम / पाठ्यपुस्तकों का हिन्दी में उपलब्ध न होना: भारत की आज़ादी को 75 वर्ष से अधिक हो चुके हैं। आज़ादी के बाद संविधान के निर्माताओं ने सभी वङ्मय को राजभाषा में तब्दील करने के लिए 15 वर्ष की अवधि निर्धारित की थी किन्तु आज 75 वर्ष के बाद भी व्यावसायिक और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तके हिन्दी में प्रदान नहीं की जा रही है। फलतः हमारी विकसित पीढ़ी जो विभिन्न आर्थिक, राजनितिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में कार्यरत है वह निश्चित रूप से उस भाषा में सक्षम होगी जिसमें उसने शिक्षा ग्रहण की है। परिनिष्ठित हिन्दी आज भी मात्र साहित्य और कविताओं में विराजमान है। अध्यापन, तकनीक, चितन, सिद्धान्त आदि की भाषा नहीं बन पायी है, इन क्षेत्रों में आज भी उत्कृष्ट लेखकों/विचारकों का अभाव है।

यह निर्विवाद सत्य है कि हिन्दी के विकास में भारतीय सिनेमा उद्योग व संगीत उद्योग का बहुत बड़ा हाथ रहा है। बॉलीवुड की लोकप्रियता और ग्राह्यता इतनी विशाल है कि अब विभिन्न भाषाई प्रान्तों और यहाँ तक कि विदेशी कलाकार भी हिन्दी सिनेमा जगत में शामिल हो रहे हैं और इसके लिए वे हजारों-लाखों रुपये देकर हिन्दी सीख भी रहे हैं। किन्तु जिन भारतीयों को यह भाषा नैसर्गिक उपहार के तौर पर मिली है वो ही बड़े-बड़े मंच और पुरस्कार समारोह में ऐसा बर्ताव करते हैं मानो हिन्दी की परिकल्पना भी उनकी कल्पना से परे है और आज भारतीय समाज का एक बड़ा हिस्सा इन्हीं लोगों को फॉलो करता है।

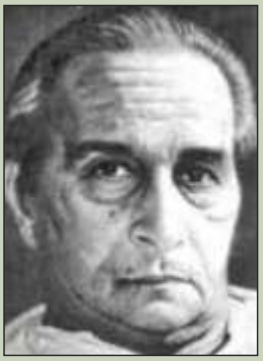

प्रजातंत्र में
सबसे बडा दोष है
तो यह कि
उसमें योग्यता को
मान्यता नहीं मिलती,
लोकप्रियता को मिलती है ।
हाथ गिने जाते हैं
सर नहीं तौले जाते ।

– हरिशंकर परसाई

भाषाई आत्मसम्मान का नहीं होना: मूकि हिन्दी भारतीयो के लिए एक नैसर्गिक देन है और बिना धन और श्रम के व्यक्ति हिन्दी सीख जाता है तो इसका मूल्य वह उतना नहीं समझ पाता जितना वह एक व्यक्ति समझता है जिसने अतिरिक्त प्रयास और धन देकर इस भाषा को सीखा हो। यही तथ्य अंग्रेजी के क्रम में लागू होता है। चूंकि अंग्रेजी को सीखने के लिए हम अतिरिक्त श्रम/समय धन और ट्यूशन लगाते हैं तो वह मोह आवश्यक हो जाता है। इसके प्रति किए गए श्रम और त्याग को हम नहीं भूल पाते।

कुछ लोग जानबूझकर गलत हिन्दी शब्दों का प्रयोग करते हैं या हिन्दी के एक वाक्य में 70% अंग्रेजी शब्दों का उपयोग करके गौरवान्वित महसूस करते हैं, वहीं कुछ घनघोर राष्ट्रवादी हिन्दी के नाम पर केवल उसी हिन्दी को दूसरों से बोलवाने के लिए ज़ोर देते हैं। जिसमें केवल संस्कृत के शब्द हो, इससे हिन्दी अपनी सहजता और सरलता से दूर हो जाती है इस प्रकार की तुच्छ मानसिकता से उबर पाना एक टेढ़ी खीर है। सरकार की भूमिका यहाँ भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि सरकारी स्कूलों में शिक्षा के साथ-साथ पाठ्येतर गतिविधियों को भी सुदृढ़ और सुसपन्न किया जाए। भाषा की शुद्धता पर विशेष जोर दिया जाए ताकि शुद्ध भाषा शिष्ट व्यक्तित्व को तैयार करे।

हिन्दी में स्तरीय व उम्दा सामग्री (कंटैंट) का अभाव : विगत दशकों में भारत में हिन्दी में प्रकाशित होने वाले पत्र- पत्रिकाओं, साहित्य, गीत-संगीत की गुणात्मकता में संकुचन दिखाई पड़ता है। मुख्य रूप से हिन्दी में उत्कृष्ट व्यावसायिक व आर्थिक समाचार पत्रों और न्यूज चैनलों की संख्या तथा मनोरंजन के साधनों में स्तरीय व विचारपूर्ण कंटेंट की कमी होने की वजह से भी बुद्धिजीवी वर्ग के लोग समाचार व मनोरंजन आदि के लिए अंग्रेजी या अन्य भाषाओं में विस्थापित हो

रहे हैं। समाचार पत्र-पत्रिकाएँ एवं न्यूज चैनल जनसंचार एवं सूचनाओं के सम्प्रेषण का अहम हिस्सा होते तो हैं ही साथ ही पाठकों के भाषाई शुद्धता, शब्दभंडार, विचार व चिंतनधारा को प्रभावित करने में भी सहयोग करते हैं। न्यूज चैनल और पत्रिकाओं की बात करें तो समाचार के विषय-वस्तु को मसालेदार और आकर्षक बनाने के लिए न्यूजआइटम को विवादित, पक्षपातपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते नज़र आते हैं। यही नहीं नकारात्मक तथ्यों को सकारात्मक तथ्यों की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया जाता है।

सोशल मीडिया की भूमिका : सोशल मीडिया आज के दौर में एक सशक्त उपकरण है यह वह दोधारी तलवार है जो किसी भी मानक/अस्तित्व का रक्षण और संहार करने में पूर्णतः सक्षम है। भाषाई आत्मसम्मान और शिक्षा की कमी (उच्च शिक्षा को नहीं प्राप्त करना) के कारण देश के लोग विश्लेषण और विमर्श करने में पिछड़े रह जाते हैं और ऐसे पिछड़े लोग नकारात्मक संदेशों को परिचालित करते हैं और संस्कृति की कब्र खोदने में अधिक मेहनत करते हैं। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि अल्प शिक्षितों से समाज को सबसे ज्यादा खतरा है और ऐसे लोगों के हाथ में सोशल मीडिया की दोधारी तलवार का होना विध्वंस का आह्वान ही है।

राजभाषा नीति-नियम का केवल 'प्रेरणा और प्रोत्साहन' की नीति पर आधारित होना भी कभी-कभी हिन्दी के गौरव को चोट पहुंचाने वालों को बढ़ावा देती है। देश में राष्ट्रध्वज, राष्ट्रीय संपत्ति, राष्ट्रीय पशु-पक्षी आदि के अपमान अथवा हनन पर दंड/ सजा का प्रावधान काफी आम है किन्तु देश की राजभाषा के अपमान, नीतियों के उल्लंघन आदि पर दंड या जुर्माने का कोई प्रावधान न होना भी अल्पविकसित मानसिकता वाले आबादी को दुस्साहस करने का मौका देती है।

भाषा एक साधन है, विचारों को व्यक्त करने का माध्यम है और शिक्षा का मानक है, लेकिन यह वाक्य सभी भाषाओं पर समान रूप से लागू होती है। दूसरे शब्दों में हमारी शिक्षा का स्तर हमारी अभिव्यक्ति शैली और दूसरों तक बात सकारात्मक तरीके से पहुंचा देने के कौशल पर निर्भर करती है, परंतु भारत के संदर्भ में मान्यता भिन्न है, यहाँ अधिकांश जनसंख्या के अंदर एक विचित्र मनोविकार है जिसके अनुसार केवल और केवल अंग्रेजी भाषा का बोलना आ जाना शिक्षा या कौशल का मानदंड है। यदि किसी व्यक्ति को अंग्रेजी नहीं आती तो यह उसकी खामियों में गिना जाता है अर्थात अंग्रेजी को यहाँ 'भाषा' नहीं 'कौशल' माना जाता है। यह मानसिकता हिन्दी की लोकप्रियता और सर्वग्राह्यता को खा रही है।

शुभांक शील
मंडल प्रबंधक
आंचलिक निरीक्षणालय, दिल्ली

कविता

बचपन की अभीलाषा

क्रोध जहाँ पर मिलता है,
वहाँ कहाँ बचपन खिलता है।
क्रोधित स्वर में कही गयी बात,
बच्चा कहाँ समझता है।।

कोमल मन की माटी को,
हौले हौले पकना होता है।
पर क्रोध की भट्टी में वह,
हर क्षण जल जल कर झरता है।।

घुटन भरे माहौल में बच्चा,
खुद को अकेला ही पाता है।
क्या इसीलिए वह फूल,
इस धरती पर जन्माता है।।

नए युग के ये मम्मी पापा,
पैसे तो बहुत कमाते हैं।
पर वह इस आपाधापी में,
बच्चे का प्यार गंवाते हैं।।

अपनी महत्वाकांक्षाओं का बोझ,
बच्चे पे थोपा करते हैं।
उसकी कोमल इच्छाओं का,
गला घोंटा करते हैं।।

काश समय मेरे बचपन सा,
मैं अपने बच्चे को दे सकूं।
उसी तरह मैं उसको भी,
प्यार से बड़ा कर सकूँ।।

हर बच्चा अपने में अनोखा और मेधावी है,
बस उसकी इच्छा का सम्मान ही करना बाकी है।
प्रेम का भाव बच्चे की हर आशा पूरी करता है,
उसके सर्वांगीण विकास में मील का पत्थर बनता है।।

आलेख

भारतीय भाषाएं, प्रौद्योगिकी एवं एआई

रीनु मीना
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, बिलासपुर

हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है तथा हिंदी भाषा सदियों से भारत की संस्कृति और इतिहास का अभिन्न अंग रही है। तकनीक के आगमन के साथ ही इस भाषा का संरक्षण और संवर्धन करना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक ऐसी तकनीक है जिसका इस्तेमाल हिंदी भाषा के विकास के लिए किया जा रहा है।

एआई आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का अर्थ है बनावटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता। जिसके माध्यम से कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रही है और ऐसा माना जा रहा है कि आगे आने वाले दशकों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बदौलत दुनिया का कायाकल्प होने वाला है। हिंदी के साथ – साथ हमारी भारतीय भाषाएं भी इस बदलाव से अछूती नहीं रहने वाली और न ही उन्हें इससे अप्रभावित रहना चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की प्रासंगिकता : जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता कि बात सामने आती है तो स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न अपने आप ही आ जाता है कि हिंदी भाषा के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्या प्रासंगिकता है एवं वह इस भाषा के भविष्य को किस तरह प्रभावित कर सकती है? इसे समझने के लिए हमें हिंदी की वर्तमान चुनौतियों, अवसरों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता में निहित शक्तियों पर विचार करने की आवश्यकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ तकनीक की उस शक्ति से है जिसका प्रयोग करते हुए वह इंसानों की ही तरह (किंतु उनकी तुलना में बहुत बड़े पैमाने पर) सीख सकती है, विशाल स्तर पर आंकड़ों का विश्लेषण कर सकती है, चीजों पर निगरानी रख सकती है, भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का मंथन कर सकती है, अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर सकती है, निर्णय ले सकती है और परिणाम दे सकती है। यह सामान्य प्रौद्योगिकी से बहुत अलग है जो निर्धारित रूप से काम करती है, अपनी सीमाओं में रहती है और पहले से दिए गए निर्देशों (प्रोग्रामिंग) के आधार पर परिणाम देती है। वह न ही बदलती है और न ही निरंतर और अधिक बेहतर बनाने में सक्षम है।

एआई कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जो बुद्धिमान मशीनों को विकसित करने पर केंद्रित है और जो उन कार्यों को कर सकते हैं जिन्हें आमतौर पर मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है। हिंदी भाषा एआई अनुसंधान का प्रमुख केंद्र रही है क्योंकि यह दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिंदी भाषा में एआई के इस्तेमाल से भाषा सीखने, अनुवाद और पाठ से भाषण में बदलाव के नए रास्ते खुल गए हैं। एआई और हिंदी भाषा के महत्वपूर्ण घटनाक्रमों में से एक चैटबॉट का निर्माण है। चैटबॉट कंप्यूटर प्रोग्राम हैं जिन्हें मानव उपयोगकर्ताओं के साथ बातचीत का अनुकरण करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ये चैटबॉट हिंदी प्रश्नों को समझ सकते हैं और उनका जवाब दे सकते हैं और वास्तविक समय में सहायता प्रदान कर सकते हैं। इनका उपयोग ग्राहकों के प्रश्नों का उत्तर देने, जानकारी प्रदान करने और वेबसाइटों और अनुप्रयोगों को नेविगेट करने में उपयोगकर्ताओं की मदद करने के लिए किया जा सकता है।

लेकिन बात यहीं तक सीमित नहीं है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आगमन के बाद साहित्य की दुनिया भी बड़े बदलावों से साक्षात्कार करने वाली है। न सिर्फ अंग्रेजी, बल्कि भारतीय भाषाओं का साहित्य भी। लेखकों द्वारा विषयों के चयन या पुस्तक की परिकल्पना से लेकर रचना के पाठक तक वितरित होने तक की पूरी प्रक्रिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका होने वाली है। यह एक मददगार के रूप में तो है ही, एक सर्जक के रूप में भी सामने

आ चुकी है और 'कृत्रिम साहित्य' (एआई लिटरेचर) नामक एक नई धारा उत्पन्न हो रही है।

एआई के इस दौर में हिंदी अभूतपूर्व तरक्की की राह पर है। कभी सिमटती संभावनाओं की भाषा समझी जानेवाली हिंदी आज हर एक इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म से लेकर ई-कामर्स तक, एडटेक से लेकर एंटरटेनमेंट प्लेटफार्म तक अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। तकनीकी विकास ने जिस तरह स्थानीय भाषाओं को मज़बूती दी है, उसकी सबसे बड़ी लाभार्थी रही है हिंदी भाषा। आज इंटरनेट पर प्रचुर मात्रा में एवं गुणवत्तापूर्ण हिंदी सामग्री उपलब्ध है। कभी कंप्यूटर और मोबाईल पेड केवल रोमन लिपि को समझते थे, वे अब हिंदी में ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं से भी अच्छी तरह परिचित हो गए हैं।

एआई आधारित इस युग में आज हिंदी के व्यवहारिक और रोज़गारमूलक भाषा न होने की बाधा दूर हो गई है। आज शिक्षा, चिकित्सा और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में हिंदी की ऑन लाइन सामग्री ने महानगरों को ही नहीं छोटे शहरों - कस्बों के तकनीकी क्रांति से हिंदी के व्यावहारिक और रोज़गारमूलक भाषा न होने की बाधा दूर हो गई है। शिक्षा, चिकित्सा और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में हिंदी की ऑनलाइन सामग्री ने महानगरों को ही नहीं छोटे शहरों - कस्बों के बच्चों को प्रतिस्पर्धा में ला दिया है। आज बाज़ार में एजुकेशन लर्निंग एप की बहुतयता हो चुकी है। ये एप हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध करा रहें हैं। ई-कॉमर्स क्षेत्र के दिग्गजों ने भी हिंदी में एप लॉन्च कर माना है कि बाज़ार बढ़ाने के लिए उसकी कितनी अहमियत है।

एआई से होगा भाषाओं के विकास में सहयोग : हिंदी भाषा एआई अनुसंधान का प्रमुख केंद्र रही है क्योंकि यह दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिंदी भाषा में एआई के इस्तेमाल से भाषा सीखने और अनुवाद सीखने की सुविधा बढ़ गई हैं। एआई और हिंदी भाषा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण घटनाक्रमों में से एक चैटबॉट का निर्माण है। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा कंप्यूटर, कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट या सॉफ्टवेयर को मानव मस्तिष्क की तरह बुद्धिमानी से सोचने में सक्षम बनाया जाता है। एआई को मानव मस्तिष्क के पैट्रन का अध्ययन करके और संज्ञानात्मक प्रक्रिया का विश्लेषण करके पूरा किया जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी एवं नए मीडिया ने साहित्यकारों को कई अर्थों में सहयोग दिया है। लेखन और प्रकाशन के नए मंच सामने आएं हैं तो ब्लॉगिंग जैसे अभिव्यक्ति के नए माध्यम लोकप्रिय हुए हैं। किताबें ई-पुस्तकें जैसे नए स्वरूपों को अपना रही हैं। साहित्यिक विमर्श के डिजिटल और आभासी मंचों ने साहित्य तथा लेखकों को लाभान्वित किया है।

हमारे रचनाक्रम को भौगोलिक सीमाओं से परे एक बहुत बड़े पाठक, दर्शक तथा श्रोता वर्ग तक पहुँचाने में नए मीडिया ने कमाल का योगदान दिया है।

ए आई से मिलती है गूगल को ताकत : गूगल ने हाल ही में अमेरिका के बाद भारत में एआई आधारित सर्च की सुविधा शुरू की है। भारतीय यूज़र के लिए नए सर्च लैब में खास तरह की सुविधाएं जोड़ी गई हैं। यदि अंग्रेजी में प्राप्त किसी खोज परिणाम को हिंदी में सुनना है, तो केवल लैंग्वेज स्विचर पर क्लिक करना होगा।

गूगल वॉइस टाइपिंग से भारतीय भाषाओं में टंकण करना : अपनी आवाज़ का इस्तेमाल करके, गूगल स्लाइड्स में प्रज़ेंटर के नोट लिखे जा सकते हैं, उनमें बदलाव किए जा सकते हैं और कैप्शन दिखाए जा सकते हैं। साथ ही, गूगल दस्तावेज़ में लिखा और बदलाव किया जा सकता है। बोली को लिखाई या कैप्शन में बदलने की सुविधा चालू करने पर, बोले जा रहे शब्दों को टेक्स्ट में बदलने की प्रक्रिया आपका वेब ब्राउज़र कंट्रोल करता है। आपका वेब ब्राउज़र तय करता है कि आपकी बोली को कैसे प्रोसेस किया जाएगा। इसके बाद, यह गूगल डॉक्स या गूगल स्लाइड्स पर टेक्स्ट भेजता है। बोलकर टाइप करने या निर्देश देने की सुविधा का इस्तेमाल करने के लिए, आपके कंप्यूटर में माइक्रोफ़ोन का चालू होना और ठीक से काम करना ज़रूरी है।

भाषिणी भारत का अपना गूगल ट्रांसलेटर : इंटरनेट पर भाषाई बाधा को दूर करने के उद्देश्य से इलेक्ट्रानिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय मिशन भाषिणी (भाषा-इंटरफेस) संचालित कर रहा है। यह तकनीक आम भारतीयों तक इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं को उनकी मातृभाषा में पहुंचा रही है। ध्वनि सहायकों का विकास हिंदी भाषा में एआई का एक और महत्वपूर्ण अनुप्रयोग रहा है। वॉयस असिस्टेंट बुद्धिमान वर्चुअल असिस्टेंट होते हैं जो वॉयस कमांड को समझ सकते हैं और उनका जवाब दे सकते हैं। सिरी, एलेक्सा और गूगल

असिस्टेंट जैसे वॉइस असिस्टेंट के उदय से हैप्टिक और हैलो इंग्लिश जैसे हिंदी वॉइस असिस्टेंट का रास्ता साफ हो गया है। ये वॉयस असिस्टेंट यूजर्स को हिंदी भाषा सीखने और प्रैक्टिस करने में मदद कर सकते हैं।

इतना ही नहीं, मशीनी अनुवाद में भी हिंदी भाषा का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया है। मशीन अनुवाद कंप्यूटर एल्गोरिदम का उपयोग करके एक भाषा से दूसरी भाषा में पाठ का अनुवाद करने की प्रक्रिया है। मशीन अनुवाद में एआई के उपयोग ने अनुवाद की सटीकता और गति में काफी सुधार किया है। हिंदी भाषा बोलने वाले अब अपने पाठ को कई भाषाओं में आसानी से अनुवाद कर सकते हैं।

कंप्यूटर पर हिंदी में टंकण : आज सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड की सुविधा उपलब्ध है। जिसका उपयोग कर हिंदी में आसानी से पत्र/ई-मेल बनाए जा सकते हैं।

अंत में, एआई ने हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चैटबॉट, मशीन लर्निंग, वॉयस असिस्टेंट और मशीन अनुवाद में एआई के इस्तेमाल ने सीखने, संचार और सहयोग के नए रास्ते खोल दिए हैं। एआई में निरंतर अनुसंधान और नवाचार के साथ हिंदी भाषा और प्रौद्योगिकी का भविष्य आशाजनक लग रहा है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि भाषा हमारी संस्कृति और विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसे प्रौद्योगिकी की मदद से संरक्षित और प्रचारित किया जाना चाहिए। इस लेख का उद्देश्य बस इतना-सा है कि आज के इस दौर में हिंदी में कार्य करना बहुत ही आसान हो गया है। अपनी भाषा को संरक्षित तथा प्रचारित करते हुए अधिक से अधिक कार्य हिंदी में कर अपनी भाषा से जुड़े रहें क्योंकि जैसे सुमित्रा नन्दन पंत ने कहा है **हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।**

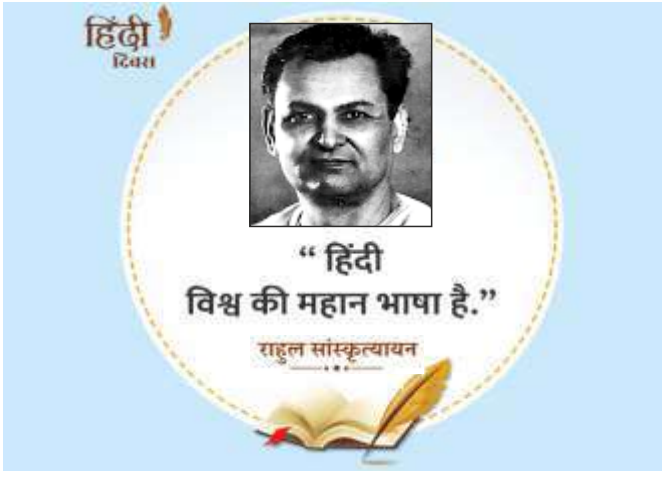

जतिन कुमार
प्रबंधक
औद्योगिक संबंध अनुभाग
प्रधान कार्यालय

कविता

माँ

परदेस में कहाँ से लाऊँ, मैं अपनी माँ के हाथ का खाना,
किसी के बस की बात नहीं, माँ जैसा प्यार निभाना,
जब माँ के आंचल तले हैं गुज़रा बचपन मेरा सुहाना,
जो दूर रह सकूं माँ से, रब्बा किया क्यों मुझे सयाना...

माँ का गोद में सर रख, लोरी गा के मुझे सुलाना,
नज़र लगे ना मुझे इसलिए काला टीका लगाना,
बचपन की यादों से फिर आँखों में पानी भर जाना,
जो दूर रह सकूं माँ से, रब्बा किया क्यों मुझे सयाना...

माँ के प्यार से बढ़ कर जग में नहीं है कोई खज़ाना,
माँ का हाथ हो सर पर, फिर चाहे दुश्मन बने ज़माना,
जिसकी वजह से मुमकिन हुआ है दुनिया में मेरा आना,
जो दूर रह सकूं माँ से, रब्बा किया क्यों मुझे सयाना...

माँ को मेरी जन्म-जन्म तक मेरी माँ ही बनाना,
खुदा गुज़ारिश यही है, उसी का बेटा है कहलाना,
जल्दी से फिर पास मुझे मेरी माँ के तू ले आना,
और दूर रह सकूं माँ से, रब्बा कभी वो वक्त ना लाना...

आलेख

हिंदी हैं हम : तेज़ी से बदलती डिजिटल तकनीक के साथ हिंदी का बढ़ता प्रभाव

प्रमोद कुमार विश्वकर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
अध्ययन व विकास केंद्र, चंडीगढ़

वर्ष 2024 में भारत में मोबाइल और इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के बारे में कुछ आँकड़े इस प्रकार हैं: इंटरनेट उपयोगकर्ता: भारत में वर्तमान में 820 मिलियन से अधिक सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं। उनमें से आधे से अधिक - 442 मिलियन-अब देश के ग्रामीण इलाकों से आते हैं। 2023 में, इंटरनेट की पहुंच साल-दर-साल आठ प्रतिशत बढ़ी। 2024 की शुरुआत में भारत की इंटरनेट पहुंच दर 52.4% थी, जिसका अर्थ है कि देश की आधी से अधिक आबादी के पास इंटरनेट का उपयोग है। इससे भारत सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के मामले में विश्व में दूसरे स्थान पर आ गया है। मोबाइल कनेक्शन : 2024 की शुरुआत में भारत में 1.12 बिलियन सक्रिय सेलुलर मोबाइल कनेक्शन हैं, जो कुल जनसंख्या का 78% है। सोशल मीडिया उपयोगकर्ता : जनवरी 2024 में भारत में 462 मिलियन सोशल मीडिया उपयोगकर्ता थे, जो कुल जनसंख्या का 32.2% है। मोबाइल इंटरनेट उपयोगकर्ता: भारत में 480 मिलियन से अधिक लोग मोबाइल इंटरनेट से अनभिज्ञ हैं, जो कि लगभग तीन में से एक व्यक्ति है। गैर-पारंपरिक उपकरणों पर इंटरनेट का उपयोग: स्मार्ट टीवी, स्मार्ट स्पीकर, फायरस्टिक्स, क्रोमकास्ट, ब्लूरे और गेमिंग कंसोल जैसे गैर-पारंपरिक उपकरणों के उपयोग में वृद्धि हुई है। समाचार तक पहुंच: डिजिटल माध्यम अब समाचार प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका बन गया है।

आइए, अब हम एक और आंकडे की बात करते हैं जो इस प्रकार है: भारत की 1.30 बिलियन जनसंख्या में से 41% से अधिक लोग आधिकारिक राजभाषा हिंदी को अपनी प्राथमिक भाषा के रूप में उपयोग करते हैं। विश्व में 615 मिलियन से अधिक लोग हिन्दी बोलते हैं, जिससे यह विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। हिंदी, भारत में सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली अनुसूचित भाषा है और देश की आधिकारिक भाषा है।

भारत की जनगणना 2001 के अनुसार, भारत में लोग 122 प्रमुख भाषाएँ और 1599 अन्य भाषाएँ बोलते हैं जिनमें से 22 को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस तथ्य के बावजूद कि भारत की 90% आबादी अंग्रेज़ी नहीं बोलती, भारत में इंटरनेट का ज़्यादातर हिस्सा अंग्रेज़ी में है।

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार बच्चों की सीखने की क्षमता को हीनता बोध से बाहर लाने के लिए मातृभाषा में शिक्षा की बात की गई है। जिस पर आज़ादी के समय से ही बहस चल रही थी जिसमें मुख्य रूप से महात्मा गांधी द्वारा नई तालीम शिक्षा प्रणाली मातृभाषा के द्वारा शिक्षा की हिमायती थी। लेकिन आज़ादी के बाद यह व्यवस्था गाँधी जी की मृत्यु के उपरांत उनके विचार बनकर रह गई। भारत में भाषाओं की क्या स्थिति है इसे नई शिक्षा नीति की रिपोर्ट से जाना जा सकता है जिसमें कहा गया कि दुर्भाग्य से भारतीय भाषाओं को समुचित ध्यान और देखभाल नहीं मिल पाई जिसके तहत देश ने विगत 50 वर्षों में 220 भाषाओं को खो दिया है।

यूनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को लुप्तप्राय घोषित किया है। विभिन्न भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं विशेषत: वे भाषाएं जिनकी लिपि नहीं है। नई शिक्षा नीति बेशक आज मातृभाषा में शिक्षा की पहल कर रही है लेकिन वह उसकी अनिवार्यता पर अभी खामोश है। इसमें तकनीकी क्रांति व नवाचार को तो शिक्षा का अहम हिस्सा बनाया लेकिन उसके माध्यम की भाषा तय नहीं की गई है।

अध्ययन एवं विकास केंद्र में कार्य करने की वजह से मैंने यह ज़रूर अनुभव किया है कि जब आप अपनी स्थानीय भाषा में बात करते हैं तो आप सामने वाले व्यक्ति से आसानी से कनेक्ट हो जाते हैं। मेरा मानना है कि इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की मांग हमेशा से रही है, यह इंटरनेट पर कोई नई मांग नहीं है। असली समस्या समानता में है जो भारतीय इंटरनेट पर भाषा समानता के हमारे दृष्टिकोण से भी जुड़ी

हुई है और इसे केवल लाखों लोगों के साथ उनकी स्थानीय भाषाओं से जुड़कर ही हासिल किया जा सकता है।

अगर आप इंटरनेट के आने से पहले के पारंपरिक मीडिया का उदाहरण लें तो प्रिंट, रेडियो, टेलीविज़न और मूवी थिएटर जैसे मीडिया में 90% से ज़्यादा उपयोगकर्ता भारतीय भाषाओं में जुड़े हुए हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि सामग्री सरल, सहज है और उपयोगकर्ता अपनी स्थानीय भाषा में इन सामग्रियों से जुड़ने में सक्षम हैं।

जब हम इंटरनेट के उदय के बारे में बात करते हैं, तो स्थिति थोड़ी अलग है। दुर्भाग्य से, इसे अंग्रेज़ी बोलने वाले लोगों के लिए विकसित किया गया था और इसके परिणामस्वरूप भारतीय भाषा उपयोगकर्ताओं के लिए बाधाएँ उत्पन्न हो गई। यदि आप भारत और चीन में इंटरनेट के विकास को देखें, तो आप पाएंगे कि इसकी शुरुआत लगभग एक ही समय में हुई थी। भारत और चीन दोनों के पास अंग्रेजी में इंटरनेट अपनाने या इसे अपनी भाषाओं में ढ़ालने के बीच चयन करने का विकल्प था। जब चीन ने अपनी भाषा में इंटरनेट बनाने का फैसला किया, तो भारत का रास्ता अंग्रेज़ी उपयोगकर्ताओं के लिए इंटरनेट बनाना था और अब हम भारतीय भाषाओं को अपनाने का प्रयास कर रहे हैं। इसलिए मूल रूप से यह बड़ी बाधा है जो बढ़ती जा रही है।

मेरी एक सहकर्मी हिंदी भाषा का कुशल प्रयोग करती हैं। लेकिन उनके पास भी संवाद संबंधी कई गलतियाँ हैं। वे बताती हैं, एक बार, अपनी होने वाली बहू के साथ ऑनलाइन चैटिंग करते समय मैंने बताया कि वह 'सादी' (Simple) शैली में लिखती है, लेकिन उसने इसे (सड़ी Sadi)' पढ़ा, जिसका अर्थ है सड़ा हुआ। कई दिनों तक वह सोचती रही कि मुझे उसकी लेखन शैली सड़ी हुई लगती है, जब तक कि मेरे बेटे ने उसे यह बात स्पष्ट नहीं कर दी!

इस बाधा से निपटने में आने वाली चुनौतियाँ: इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) की रिपोर्ट के अनुसार, हमारे देश में ऐसे व्यवसाय जो बहुत अच्छे से स्थापित हो चुके हैं, उनके लिए स्थानीय भाषाएं उच्च प्राथमिकता पर हैं। वे शहरी उपभोक्ताओं तक पहुंच बनाने के बाद, अब ग्रामीण क्षेत्र के बाज़ारों में स्थापित होने के लिए स्थानीय भाषा के माध्यम से जुड़ाव को एक अहम कारक के रूप में देखते हैं। फिर भी मांग और आपूर्ति के बीच अंतर बना हुआ है। जबकि 615 मिलियन मूल हिंदी भाषा बोलने वाले हैं, केवल 0.04% वेबसाइटें हिंदी में हैं। यह अंग्रेज़ी के विपरीत है, जिसे दुनिया भर में 335 मिलियन लोग बोलते हैं लेकिन इसका इस्तेमाल 54.1% वेबसाइटों पर किया जाता है। जब आप अन्य भारतीय भाषाओं को इसमें जोड़ते हैं तो यह विसंगति और भी स्पष्ट हो जाती है: विभिन्न भारतीय भाषाओं अर्थात बंगाली, हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु और उर्दू के 727.6 मिलियन मूल वक्ता हैं, जबकि दुनिया की 0.1% से भी कम वेबसाइटें इन भाषाओं में बनाई गई हैं।

हिंदी वर्णमाला 13 स्वरों और 39 व्यंजनों से बनी है, और भाषा डेवलपर्स के लिए यह पता लगाना एक चुनौती रही है कि सबसे लोकप्रिय या अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले उपयुक्त संयोजन कौन से हैं। फिर लोगों को कीबोर्ड पर बार-बार फ़्लिप किए बिना छोटी स्क्रीन में सब कुछ फ़िट करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। गूगल में भाषा अंतर्राष्ट्रीयकरण की कार्यक्रम प्रबंधक, ऋचा सिंह चित्रांशी कहती हैं, हिंदी या किसी अन्य भारतीय भाषा में टाइप करने के लिए, पूरे फ़ोन की सेटिंग उस भाषा में होनी चाहिए थी। कई लोग दो कारणों से अपनी इंटरफ़ेस भाषा सेटिंग बदलना नहीं चाहते; या तो वे अंग्रेज़ी ऑपरेटिंग सिस्टम से सहज हैं या उन्हें डर होता है कि दूसरे लोग सोचेंगे कि वे अंग्रेज़ी नहीं पढ़ सकते; जो उनकी छवि के लिए एक झटका महसूस होता है। किसी से भी हिंदी में टाइप करवाना मुश्किल था। इसे संबोधित करने के लिए, हमने डिवाइस को ठीक से ट्यून किया है ताकि लोग अब अपने फ़ोन की सेटिंग अंग्रेज़ी में रखते हुए हिंदी में इंस्टॉल और टाइप कर सकें।

तकनीकी कठिनाइयों और उपभोक्ता वरीयताओं को अलग रखते हुए, भारत के भीतर भाषाओं का व्यापक विखंडन हिंदी सामग्री को अपनाने में एक और प्रतिरोध की तरह कार्य करता है। असमिया, बंगाली, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू सहित 14 अन्य आधिकारिक भाषाओं के साथ, हर भाषा के मूल वक्ताओं की आशाओं को पूरा करना अधिकांश व्यवसायों के लिए बहुत अधिक महंगा हो जाता है। क्योंकि भारत में दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अंग्रेजी बोलने वाली आबादी है इसलिए कंपनियों के पास पहले से ही किसी भी मानक से काफी बड़े लगभग 125 मिलियन अंग्रेजी बोलने वाले उपभोक्ता हैं – जिनके लिए सामग्री बनाना है बहुत आसान है, जिससे उन्हें अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए कम से कम संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है।

इस विविधता से निपटने में बैंकों के सामने आने वाली चुनौतियाँ:

50% से अधिक भारतीय इंटरनेट उपयोगकर्ता डिजिटल बैंकिंग चैनलों का उपयोग करने में झिझकते हैं; इसके बजाय, वे अपने बैंक की शाखाओं में जाना पसंद करते हैं। शाखा बैंकिंग में कोई भाषा की बाधा नहीं होती है, ग्राहक अपनी आवश्यकताओं के बारे में अपने रिलेशनशिप मैनेजर से सीधे संवाद करते हैं जैसे कि फंड ट्रांसफर, स्टेटमेंट, सुरक्षा जमा और बहुत कुछ अपनी स्थानीय भाषा में प्राप्त नहीं कर पाते है।

आइए देखें कि डिजिटल बैंकिंग में क्या होता है; नीचे दिए गए कुछ उदाहरण दर्शाते हैं कि भाषा संबंधी बाधाएं भारतीय भाषा उपयोगकर्ताओं के लिए इसे किस प्रकार कठिन बना देती हैं:

उपयोगकर्ता का खाता सारांश, भुगतानकर्ता सूची, धन हस्तांतरण, बिल भुगतान, एटीएम पिन जनरेट करना, क्रेडिट कार्ड भुगतान और अन्य मोबाइल बैंकिंग सेवाएं केवल अंग्रेज़ी में उपलब्ध हैं जिससे किसी भी आपात स्थिति में रिपोर्ट करना उनके लिए कठिन हो जाता है।

कुछ साल पहले, आपके पैन कार्ड को आपके आधार कार्ड से लिंक करने की प्रक्रिया के बारे में कई संदेश प्रसारित हुए थे। वे संदेश पूरे देश में अंग्रेज़ी में वितरित किए गए थे। मैंने किसी भी उपयोगकर्ता को अंग्रेज़ी के अलावा किसी अन्य भाषा में एक भी संदेश आते नहीं देखा। अंग्रेज़ी की समझ की कमी के कारण, लोग इसे ठीक से समझ नहीं पाए।

विमुद्रीकरण प्रक्रिया के दौरान बैंकों में उपलब्ध सभी विमुद्रीकरण फॉर्म अंग्रेज़ी में लिखे गए थे तथा उन्हें ऐसी भाषा में औपचारिक बैंकिंग चैनलों तक पहुंच नहीं थी, जिसे वे समझ सकें।

चूंकि जागरूकता की कमी के कारण लोग डिजिटल चैनलों का सही ढंग से उपयोग करना नहीं जानते इसलिए अधिकांश ऑनलाइन धोखाधड़ी उन कमज़ोर लोगों के बीच होती है जो अंग्रेज़ी नहीं बोलते और इसलिए उन्हें यह पता नहीं होता कि ऑनलाइन धोखाधड़ी से खुद को कैसे बचाएं।

ये कुछ उदाहरण हैं जो मैं दे सकता हूँ। अगर हम डिजिटल बैंकिंग को देखें या अगर किसी को मोबाइल बैंकिंग करनी है, तो वे भाषा की इस बाधा को कैसे पार करेंगे? जैसा कि आप देख सकते हैं, हम जिस स्तर के अनुभव के बारे में बात कर रहे हैं, वह इंटरनेट बैंकिंग या डिजिटल बैंकिंग में बैंकों द्वारा वर्तमान में प्रदान किए जा रहे अनुभव के स्तर से बहुत अलग है।

भारत के डिजिटल परिदृश्य में हिंदी का बढ़ता महत्व:

बेशक, अंग्रेजी दुनिया भर में और भारत में ऑनलाइन सबसे ज़्यादा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा है। गूगल डेटा पर पता चलता है कि हिंदी के उपयोग में 94% की वृद्धि दर है। वैश्विक व्यवसाय के इस बात को ध्यान में रखते हुए अपनी रणनीतियों के हिस्से के रूप में हिंदी पर ज़ोर दे रहे हैं। कुछ साल पहले फेसबुक यूजर लॉगिन स्क्रीन पर हिंदी में लिखा देखकर चौंक गए थे। इसके बाद, अमेरिका स्थित विज़ुअल डिस्कवरी प्लेटफ़ॉर्म पिंटिरेस्ट ने इसका हिंदी संस्करण जारी किया जिससे यह भारत में भी इस्तेमाल करने वालों के लिए उपलब्ध हो गया। गूगल अब स्थानीय भाषाओं, मुख्य रूप से हिंदी में गूगल मैप्स जैसे प्रमुख उत्पादों के उपयोग को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, ताकि टियर 2 और 3 शहरों में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की सेवा की जा सके।

आज वित्तिय क्षेत्र के अधिकांश बैंक अपने मोबाईल एप्लीकेशनों को हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं मे पेश कर रहे हैं।

आज भारत के डिजिटल स्पेस में हिंदी को प्रमुखता मिल रही है:

जैसा कि हम लगातार चर्चा कर रहे हैं, भारत में लगभग 40% लोग हिंदी को अपनी पहली भाषा के रूप में बोलते हैं, जिससे यह देश में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। यह दर्शाता है कि वेब प्लेटफ़ॉर्म हिंदी में सामग्री तैयार करके भारत में काफी बड़े दर्शकों तक पहुँच सकते हैं।

भारत में सस्ते सेल फोन और डेटा प्लान की उपलब्धता के कारण इंटरनेट का उपयोग समग्र रूप से और ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ गया है। परिणामस्वरूप अधिक भारतीय इंटरनेट से जुड़ रहे हैं और ऑनलाइन सामग्री तक पहुँच रहे हैं। इस बढ़ते पाठक वर्ग को ध्यान में रखते हुए अधिक हिंदी सामग्री ऑनलाइन तैयार की जा रही है।

चूंकि लोग ऐसी सामग्री चाहते हैं जिससे वे जुड़ सकें और बेहतर समझ सकें, इसलिए भारत में क्षेत्रीय भाषा की सामग्री की खपत में बदलाव आया है। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म हिंदी भाषी आबादी को उस भाषा में बनाकर जोड़ने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हैं।

भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया बनाने और हिंदी को आधिकारिक भाषाओं में से एक घोषित करने के प्रयासों से ऑनलाइन हिंदी सामग्री का विस्तार हुआ है। इसके कारण वेब प्लेटफ़ॉर्म हिंदी सामग्री के उत्पादन और प्रचार में अधिक धन निवेश कर रहे हैं।

हिंदी कॉन्टेंट की बढ़ती मांग:

74% साक्षर लोगों में से केवल 10% ही अंग्रेजी पढ़ते हैं; अधिकांश लोग स्थानीय मीडिया का उपयोग करते हैं। 53% लोग अभी भी अपनी मातृभाषा में साक्षर हैं। इंटरनेट और मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया और आईएमआरबी इंटरनेशनल द्वारा हाल ही में किए गए शोध में पाया गया कि स्थानीयकृत सामग्री की उपलब्धता से भारत में इंटरनेट का उपयोग 24% तक बढ़ सकता है।

हिंदी भारत की सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली भाषा है, इसके बावजूद, अंग्रेजी ने ऐतिहासिक रूप से भारत के ऑनलाइन समुदाय पर अपना दबदबा बनाए रखा है क्योंकि देश के शुरुआती

इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में से अधिकांश अंग्रेजी बोलने वाले शहरी थे। हालाँकि, इंटरनेट उपयोगकर्ताओं का एक नया समूह विकसित हुआ है जो सस्ते सेल फोन और इंटरनेट सेवाओं के प्रसार के कारण अपनी मूल भाषा में जानकारी का उपभोग करने में अधिक सहज महसूस कर रहा हैं। इसके कारण भारत के इंटरनेट वातावरण में हिंदी सामग्री तेज़ी से लोकप्रिय हो गई है।

डिजिटल मार्केटिंग में हिंदी भाषा की क्षमता:

मीडिया और मनोरंजन व्यवसाय के सभी क्षेत्रों में हिंदी सामग्री अधिक लोकप्रिय हो रही है और व्यवसायी डिजिटल मार्केटिंग के लिए हिंदी की क्षमता को समझने लगे हैं। व्यवसायियों के पास अब इस बढ़ते बाज़ार समूह तक पहुँचने और अपनी चुनी हुई भाषा में ऐसा करने का शानदार मौका है। हिंदी में कॉन्टेंट ग्राहकों के साथ मजबूत संबंध बनाने में मदद कर रही है, जो डिजिटल मार्केटिंग में इसे इस्तेमाल करने के महत्वपूर्ण लाभों में से एक है। हिंदी का उपयोग करने से व्यवसायियों को हिंदी बोलने वाले ग्राहकों से जुड़ने में मदद मिलती है क्योंकि उपभोक्ता उस जानकारी के साथ बातचीत करने की अधिक संभावना रखते हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है। चूंकि यह दर्शाता है कि कंपनी दर्शकों की भाषा और संस्कृति के बारे में जानती है और उसका सम्मान करती है, इसलिए हिंदी सामग्री व्यवसायियों को हिंदी बोलने वाले ग्राहकों का विश्वास और विश्वसनीयता हासिल करने में भी मदद करती है।

हिंदी भाषा का महत्व

हिंदी के भारत में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर इतनी महत्वपूर्ण भाषा होने के कई कारण हैं। हिंदी के महत्व के कुछ कारण इस प्रकार हैं:

हिंदी भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख भाषा है, 615 मिलियन से ज़्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली हिंदी भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख भाषा है, उसके बाद बंगाली और तेलुगु का स्थान आता है। यह वह भाषा है जिसका इस्तेमाल भारत के विभिन्न क्षेत्रों और राज्यों के बीच संचार के लिए सबसे ज़्यादा किया जाता है।

हिंदी भारत सरकार की आधिकारिक भाषा है: जैसा कि पहले बताया गया है, हिंदी भारत सरकार की आधिकारिक राजभाषा है और इसका उपयोग सभी आधिकारिक संचार और दस्तावेज़ीकरण के लिए किया जाता है। इसका मतलब है कि अगर आप सरकारी क्षेत्र में काम करना चाहते हैं या किसी भी तरह से सरकार के साथ बातचीत करना चाहते हैं, तो आपको हिंदी में पारंगत होना चाहिए।

हिंदी स्कूलों में शिक्षा का माध्यम है: भारत के कई राज्यों, खासकर उत्तरी और मध्य क्षेत्रों के स्कूलों में हिंदी शिक्षा का माध्यम है। इसलिए यदि आप भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो हिंदी पर अच्छी पकड़ होना आवश्यक है।

मीडिया में हिंदी का इस्तेमाल होता है: हिंदी वह भाषा है जिसका इस्तेमाल भारतीय मीडिया में किया जाता है, चाहे वह टेलीविजन हो, रेडियो हो या प्रिंट। इसलिए यदि आप भारत में नवीनतम समाचारों और घटनाओं से अपडेट रहना चाहते हैं तो आपको हिंदी की अच्छी समझ होनी चाहिए।

हिंदी साहित्य और संस्कृति की भाषा है: हिंदी में साहित्य और संस्कृति की समृद्ध परंपरा है जो कई सदियों पुरानी है। कई प्रसिद्ध हिंदी कवि और लेखक हैं जिनकी रचनाएँ आज भी व्यापक रूप से पढ़ी और सराही जाती हैं। हिंदी दुनिया की सबसे बड़ी फिल्म इंडस्ट्री बॉलीवुड की भाषा भी है, जिसका मतलब है कि अगर आप भारतीय सिनेमा को समझना और उसकी सराहना करना चाहते हैं, तो आपको हिंदी पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए।

हिंदी व्यापार की भाषा है: भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, इसलिए व्यापार और वाणिज्य के लिए हिंदी एक महत्वपूर्ण भाषा बन गई है। कई अंतरराष्ट्रीय कंपनियों और संगठनों की भारत में मौजूदगी है और इसलिए उनके लिए ऐसे कर्मचारियों का होना ज़रूरी है जो हिंदी में कुशल हों।

सूचना एवं डिजिटल तकनीक के साथ सोशल मीडिया ने निस्संदेह हिंदी भाषा के वैश्वीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दुनिया भर में हिंदी बोलने वालों ने हिंदी भाषा एवं संस्कृति को बढ़ावा दिया, सांस्कृतिक सुविधा प्रदान की। विनिमय और अंतरराष्ट्रीय समुदायों को बढ़ावा दिया। हालाँकि यह भाषा की शुद्धता जैसी चुनौतियाँ भी लाता है। जैसे-जैसे सोशल मीडिया का विकास जारी है, यह देखना दिलचस्प होगा कि कैसे हिंदी की वैश्विक उपस्थिति हमारे परस्पर जुड़े भाषाई और सांस्कृतिक परिदृश्य को और अधिक उजागर और आकार देती है। जैसे-जैसे सोशल मीडिया उपयोगकर्ता और उपभोक्ता बढ़ रहे हैं, हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति की लोकप्रियता बढ़ रही है। डिजिटल एवं सोशल मीडिया चैनलों के माध्यम से हिंदी भाषा का विस्तार उल्लेखनीय है, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हिंदी भाषा की लोकप्रियता के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान करते हैं साथ ही लोगों को जोड़ने, सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और भाषा सीखने की सुविधा भी प्रदान कर रहे हैं। इन माध्यमों से हिन्दी का विकास न केवल एक भाषाई विकास की एक घटना मात्र है बल्कि हमारी दुनिया को आकार देने में तकनीकी की शक्ति का एक प्रमाण भी है जिसकी वजह से आज हिंदी वास्तव में भाषाओं के मस्तक पर बिंदी की तरह सुशोभित हो रही है।

हिंदी दिवस शुभारंभ कार्यक्रम 2024

हिंदी दिवस शुभारंभ कार्यक्रम 2024

अंचल/क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी दिवस की झलकियाँ

अंचल/क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी दिवस की झलकियाँ

कविता

प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता

आशीष रंजन
वरिष्ठ प्रबंधक सह संकाय
केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान, मणिपाल

होश उड़ जाता है कोई ध्यान नहीं रहता,
भले बुरे का कोई ज्ञान नहीं रहता;
शरीर में कोई जान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

प्यार होता है महान, ज़माना है कहता,
जब तक हो बर्दाश्त, हर कोई ये सहता;
ईमानदारों का भी इसमें ईमान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

प्यार में लोग, मौत से नहीं डरता,
इसमे लहू तो पानी के तरह है बहता;
प्यार में किसी का शान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

प्यार है जो कहता, वही है लोग करता,
इसमें रोज जीता और रोज है मरता;
प्यार पर किसी का एहसान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

प्यार में लोग, हर वादा है निभाता,
प्यार के लिए हर रिश्ता है गंवाता;
प्यार होने के बाद, आपका, ये जहान नहीं रहता;
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

प्यार में खुद को कोई रोक नहीं पाता,
किसी की भी बात समझ में नहीं आता;
सच्चे साथी का इसमें पहचान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

प्यार हमेशा सबका कहाँ हो पाता है पूरा,
इसका पहला अक्षर ही होता है अधूरा;
फिर दिल में कोई अरमान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

अपने प्यार पर विश्वास इतना है होता,
ये टूट जाने पर दिल बहुत है रोता;
पर जीवन में तन्हा कोई महान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

प्यार तो किसी से भी हो जाता है,
इसमें कोई पाता और कोई खो जाता है;
प्यार में कोई हिन्दू और मुसलमान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

फिर से प्यार करने की हिम्मत नही करता,
अब दोस्त के दोस्ती से भी दिल डरता;
पर हर कोई यहाँ बेईमान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

दिल और जान से अगर कोई तुम्हे है पूजता,
बना लो उसे अपना अगर दिल यही है कहता;
समय किसी पर यूहीं हमेशा मेहरबान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

प्यार मे जब किसी का सब कुछ लूट जाता है,
तब वो सीधा 'आशीष' के पास चला आता है;
क्योकि उसके साथ भाग्य और भगवान नहीं रहता,
प्यार में इंसान, इंसान नहीं रहता!!

यात्रा वृत्तांत

मेरी धार्मिक यात्रा

बृजेश कुमार पाठक
सहायक महाप्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय दक्षिण, बेंगलूरु

धूप में निकलो, घटाओं में नहा कर देखो
ज़िंदगी क्या है, किताबों को हटा कर देखो

यदि भारत में पर्यटन की बात हो तो दक्षिण भारत हमेशा से मेरी प्रथम पसंद रही है और यहां के मंदिरों की तो बात ही निराली है। मंदिरों की बेजोड़ स्थापत्य कला बरबस ही सबका ध्यान अपनी ओर खींचती है और मंदिरों से एक जुड़ावसा महसूस होने लगता है। दक्षिण भारत में मीनाक्षी अम्मा मंदिर, रामेश्वरम मंदिर, लेपाक्षी मंदिर, चेन्नाकेशवा मंदिर या पद्मनाभ मंदिर और न जाने ऐसे ही कितने और मंदिर, ऐसे ही नायाब उदाहरण हैं जो हमारे देश के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को आज तक संजोए हुए हैं।

इस बार मेरा यात्री मन केरल राज्य की राजधानी तिरुवनन्तपुरम में स्थित 'श्रीपद्मानाभ स्वामी' जी के दर्शन के लिए लालायित था तो हम निकल पड़े उस ओर बेंगलूरू से लगभग 730 किमी. की दूरी पर तिरुवनंतपुरम में यह मंदिर स्थित है। हमारे पास केवल दो दिन ही थे, समय कम और दूरी अधिक थी इसलिए हमने हवाई यात्रा को चुना।

केरल को तो **भगवान का अपना देश** कहा ही जाता है पर क्यों..??? ये वहां पहुंच के पता चला, एक पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान परशुराम जो भगवान विष्णु के एक अवतार थे, ने वैष्णव मतावलंबियों के शांतिपूर्वक निवास के लिए भूमि विकसित करने के लिए विशाल सागर में अपना फरसा फेंक दिया जिससे सागर के मध्य जो भूमि का टुकड़ा निकला वो भगवान का देश और कालांतर में केरल कहलाया। यदि इससे इतर भी हम देखें तो इसके एक तरफ विशाल खूबसूरत समुद्र तट है और दूसरी ओर पश्चिमी घाट में स्थित हरीतिमा से आच्छादित पहाड़ियों का अद्भुत नैसर्गिक सौंदर्य, जो स्वर्गसी अनुभूति करा रहा था। केरल संस्कृति एवं साहित्य का अनूठा संगम है। इन सभी अमूल्य प्राकृतिक निधियों के मध्य स्थित है पद्मनाभ स्वामी मंदिर। मंदिर का स्थापत्य देखते ही बनता है मंदिर के निर्माण में महीन कारीगरी का भी कमाल देखने योग्य है। मंदिर का गोपुरम द्रविड़ शैली में बना हुआ है। पद्मनाभ स्वामी मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला का अदभुत उदाहरण है। मंदिर परिसर बहुत विशाल है और सात मंजिला ऊंचे गोपुरम को कलाकृतियों से सुसज्जित किया गया है।

मंदिर शहर के सभी मुख्य मार्गों से जुड़ा हुआ है। प्रतिदिन यहां भक्तों की भीड़ लगी रहती है परन्तु छुट्टियों के दिनों में तो भीड़ का आलम ही अलग होता है। हम लोग जब मंदिर पहुंचे तो सुबह के 8 बज रहे थे

और मंदिर परिसर में जन-समुद्र हिलोरें मार रहा था। इस अथाह भीड़ को देख कुछ क्षण को लगा कि आज दर्शन नहीं हो पाएगें फिर मन में प्रभु का स्मरण करते हुए लाइन में लग गए पर दर्शन कब और कैसे होगें यही एक प्रश्न मस्तिष्क में चल रहा था। पर प्रभु की महिमा अपरंपार है। कुछ समय ही बीता था कि हमारे बैंक से ही रिटायर एक मैडम जो तिरुवनन्तपुरम में ही रहती थीं और प्रतिदिन मंदिर दर्शन के लिए आती थीं, ने हम लोगों को लाइन में लगे हुए देखा और पहचान लिया, फिर क्या था उन्होंनें हम लोगों के लिए दर्शन का प्रबंध करवाया। तथा दर्शन के उपरांत संपूर्ण मंदिर के स्थापत्य के साथ मंदिर के इतिहास की भी पूरी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि तिरुवनंतपुरम शहर के बीच में बना विशाल किले की तरह दिखने वाला पद्मनाभ स्वामी मंदिर का इतिहास काफी पुराना है। महाभारत के मुताबिक श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम इस मंदिर में आए थे और यहां पूजा-

अर्चना की थी। मान्यता है कि मंदिर की स्थापना भी 5000 साल पहले कलयुग के प्रथम दिन हुई थी। पर जो निर्माण हम अभी देख रहे हैं, वो आठवीं शताब्दी में हुआ था परन्तु समय के साथ मंदिर की संरचना में सुधार कार्य कई बार किए जाते रहे हैं। सन 1733 ई. में इस मंदिर का पुनर्निर्माण त्रावनकोर के महाराजा मार्तंड वर्मा ने करवाया था और अभी भी राजपरिवार मंदिर प्रबंधन में सहयोग करता है। मैडम ने मंदिर का इतिहास हमें ऐसे बता दिया जैसे कोई मंझा हुआ गाईड समझता है। हमने मैडम को इतना समय देने और दर्शन को सुगम बनाने के लिए उनका आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया।

एक विशाल किले की भांति दिखने वाले पद्मनाभ स्वामी मंदिर में भगवान तीन मुद्राओं में विराजमान हैं। भगवान विष्णु की प्रतिमा अनंत विश्राम की मुद्रा में, नरसिंह और श्रीकृष्ण की खड़े हुए। मुख्य कक्ष या गर्भगृह में विष्णुजी की शेषनाग पर लेटकर विश्राम (शयन) करते हुए प्रतिमा है, वहां कई दीपक जलते हैं। इन्हीं दीपकों के उजाले से भगवान के दर्शन होते हैं। स्वामी पद्मनाभ की मूर्ति में भगवान विष्णु की नाभि से निकले कमल पर जगत पिता ब्रह्मा की मूर्ति स्थापित है। भगवान पद्मनाभ की मूर्ति के आसपास दोनों रानियों श्रीदेवी और भूदेवी की मूर्तियां हैं। भगवान पद्मनाभ की शयन मुद्रा की मूर्ति पर शेषनाग के मुंह इस तरह खुले हुए हैं, जैसे शेषनाग भगवान विष्णु के हाथ में लगे कमल को सूंघ रहे हों। यहां मूर्ति का दर्शन अलग-अलग तीन दरवाजों से किया जा सकता है। पहले दरवाजे से पैर दिखते हैं, दूसरे से शरीर का मध्य भाग अर्थात पेट जिसमें भगवान विष्णु की नाभि से निकले कमल पर जगत पिता ब्रह्मा की मूर्ति दिखती है और तीसरे दरवाजे से भगवान का चेहरा दिखाई पड़ता है। यहां भगवान विष्णु का श्रृंगार शुद्ध सोने के आभूषणों से किया जाता है। मैनें अभी तक जितने भी मंदिर प्रांगण देखें हैं उन सभी में श्रीपद्मानाभ स्वामी मंदिर का परिसर सबसे अधिक भव्य और विशाल है।

श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर अपनी सुंदरता और भव्यता के लिए तो प्रसिद्ध है, लेकिन मंदिर एक और चीज के लिए सबसे ज़्यादा जाना जाता है, वो है यहां का रहस्यमयी खजाना। ये मंदिर अपने गुप्त और रहस्यमयी खजाने को लेकर खबरों में बना रहता है। श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर को भारत का सबसे अमीर हिंदू मंदिर माना जाता है। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार मंदिर के भीतर सात तहखाने मौजूद हैं। कहा जाता है कि मंदिर का सारा खजाना इन सात अलग-अलग तहखानों में रखा हुआ है। साल 2011 में जब इसके 6 दरवाज़ों को खोला गया था तो उसमें से बेशुमार मात्रा में खजाने की प्राप्ति हुई थी। हालांकि सातवें दरवाजे को खोलने को लेकर काफी विवाद हुआ। इसे देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने उस दौरान इस मामले में दखल दिया और सातवें दरवाजे को खोलने पर रोक लगा दी। पर मुझे वहां ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं दिया। पूछने पर पता चला कि केवल मुख्य पुजारी और राजपरिवार के सदस्य ही उस ओर जा सकते हैं।

देव दर्शन और पूरा मंदिर प्रांगण देख कर जब हम बाहर निकले तो मन पूर्णतः संतुष्ट था कि जितना सोचकर हम आये थे, श्रीपद्मानाभ स्वामी के दर्शन उससे भी अच्छी तरह से हो गए। अब बारी थी शहर के बाकी जगहों पर घूमने की और केरल की नैसर्गिक सौंदर्य को आत्मसात करने की।

मन से मांगी जाएं तो हर दुआ में असर होता है,
मंज़िलें उन्हीं को मिलती हैं, जिनकी ज़िंदगी में सफ़र होता है।

"हिंदी भाषा वह नदी है जो साहित्य, संस्कृति और समाज को एक साथ बहा ले जाती है।"

– रामधारी सिंह दिनकर

कविता

हिंदी भाषा – एक सुदृढ़ नींव

ब्रिजेश कुमार श्रीवास्तव
प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

बच्चों की खिलखिलाहट से.....,
जो पहली आवाज निकले, उसे व्यक्त करती है भाषा !
दो लोगों में जो वार्तालाप हो......,
उसे व्यक्त करती है भाषा !
स्वयं की संवेदना को सबके सम्मुख.......,
व्यक्त करती है भाषा !
कुछ ना कह कर भी, जो सब कुछ व्यक्त कराये........,
उसे भी कहते हैं भाषा ।।

इस भाषा के भी अनेक रूप...,
कोई बोलचाल की भाषा,
तो कोई मूक भाषा,
कोई सम्पर्क भाषा,
तो कोई कामकाज़ी भाषा !!

इस भाषा का एक विशाल आकर्षणीय स्वरूप है,
हिंदी भाषा !
देश की अनेकता में एकता,
सभ्यता – संस्कृति के मूल प्रकृति
के अविरल प्रसार
का सुगम माध्यम है......
हिंदी भाषा !!

संस्कृति अनेक, सभ्यता अनेक, धर्म अनेक, बोली अनेक,
पर, असीमित संस्कृति के सौहार्दपूर्ण मिलान का माध्यम है......
हिंदी भाषा ।।
कामकाज़ी क्षेत्र अनेक, व्यवसायिक माध्यम अनेक,
पर, कामकाज़ी वातावरण को सभी से मिलनसार बनाती है........
हिंदी भाषा।।

राज्य अनेक, भौगोलिक वातावरण अनेक,
पर, विभिन्न राज्यवासियों के सौहार्दपूर्ण मिलन का माध्यम है......
हिंदी भाषा !

शिक्षक अनेक, शिक्षा अनेक, डिग्री अनेक, विद्यार्थी अनेक,
पर, विभिन्न विद्वानों के ज्ञान के प्रचार – प्रसार का माध्यम है.....
हिंदी भाषा !

बोलने ना भी आये,
तो भी, भावों को समझने में...............
कृष्ण के मुरली की तरह,
मंत्र मुग्ध कर आकर्षणीय करने वाली बांसुरी रूपी........
भाषा है हिंदी ।।

गंगोत्री की तरह,
विभिन्न नदियों (भाषाओं) को समेकित करते हुये,
कश्मीर से कन्याकुमारी तक,
पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक ....
अविरल धारा के समान बहते हुये
अनेकता में एकता का परिचय कराती है,
हिंदी भाषा...।।

"हिन्दी हमारे देश
और
भाषा की प्रभावशाली
विरासत है।"

– माखनलाल चतुर्वेदी

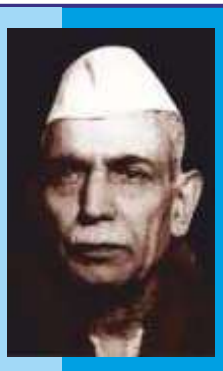

आलेख

क ख ग से... कारोबार और रोजगार तक... राजभाषा हिंदी

विश्वनाथ प्रसाद साहू
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

हिंदी भाषा में प्रारंभिक शिक्षा हिंदी वर्णमाला के वर्णों क ख और ग से दी जाती है। इसके बाद शब्द संरचना और फिर वाक्यों का निर्माण सिखाया जाता है। देश की शिक्षा नीति के अनुसार तमिलनाडु राज्य को छोड़कर लगभग सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के सरकारी स्कूलों में हिंदी भाषा की शिक्षा के लिए कुछ इसी प्रकार की व्यवस्था की गई है। हमारे देश में राज्यों के एकीकरण एवं रेखांकन में भाषा एक महत्वपूर्ण कारक रही थी, जिसके कारण आजादी के बाद से ही भाषा एक संवेदनशील विषय रहा है। भाषा के महत्व को ध्यान में रखते हुए देश के संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं का उल्लेख किया गया है और राज्यों को अपने क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषाओं के अनुसार अपनी राज्यभाषा को अंगीकृत करने का विकल्प दिया गया। साथ ही, देश में संसूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में प्रावधान किए गए। स्पष्टतया संविधान निर्माता सभा ने हिंदी भाषा की सहजता, सरलता और सुगमता को ध्यान में रखकर ही हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया है। बदलते परिवेश में, हिंदी केवल बोलचाल की भाषा ही नहीं रही, अब यह भाषा नई संभावनाओं और रोजगार की भाषा भी है।

हिंदी भाषा में कारोबार की अनंत संभावनाएं हैं, वजह यह है कि ईक्कीसवीं सदी में हमारा देश एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था के रूप में प्रस्फूटित हुआ है। मल्टीनेशनल कंपनियों ने देश में नए ग्राहक आधार की संभावनाओं को तलाश किया है और देश में इज़ ऑफ डूइंग बिजनेस की नीति के प्रसार ने भी कारोबारियों को भारतीय बाजार में निवेश करने के लिए आकर्षित किया है। यह सर्वविदित है कि देश की सर्वाधिक बोली, सुनी जाने वाली भाषा हिंदी ही है और इसलिए इन कंपनियों ने भी कारोबार की मुख्य भाषा के रूप में हिंदी को ही प्राथमिकता दी है। विदेशी मल्टीनेशनल कपनियां जैसी अमेजॉन जैसी कपड़ों, घरेलु वस्तुओं आदि की विक्रेता कंपनियां हों या फिर गूगल, सैमसंग, एचपी जैसी लैपटॉप, मोबाईल और तकनीक के क्षेत्र की विश्वव्यापी कंपनियां हों सभी ने हिंदी भाषा में अपने उत्पाद एवं सेवाओं को ग्राहकों तक पहुंचाया है। सरकार द्वारा लागू की गई द्विभाषा और त्रिभाषा संबंधी दिशानिर्देश जो ग्राहकों तक उत्पाद एवं सेवाओं को क्षेत्रीय भाषा या हिंदी में पहुंचाने के लिए निर्णीत किए हैं, ने भी हिंदी के प्रचार में महती भूमिका निभाई है। यदि ग्राहक को उत्पाद एवं सेवाएं अपनी भाषा में हीं मिलें तो इस प्रकार का कारोबार मॉडल ग्राहकों के लिए भी लाभकारी तो होता ही है साथ ही कंपनियों के सेल्स ग्राफ को भी ऊपर ले जाता है। सरकारी कार्यालयों द्वारा जनहित के विज्ञापनों में हिंदी का प्रयोग अंतिम लाभार्थी तक सरकारी योजनाओं के लाभ प्राप्त करना सुनिश्चित करता है। बैंकों द्वारा ऋण प्रदान करना अथवा जमा प्राप्त करने हेतु प्रयोग किए जाने वाले दस्तावेजों को हिंदी में तैयार करना ग्राहकों के हित में किए गए कार्यों को परिभाषित करते हैं। इसी प्रकार बीमा कंपनियों द्वारा अपने प्रपत्रों

को हिंदी या द्विभाषी रूप में प्रस्तुत करना ग्राहकों की बोधगम्यता को पृष्ठांकित करने के उत्तम उदाहरणों में गिने जाएंगे। हिंदी का प्रयोग कर निजी क्षेत्र के व्यवसाय भी फल-फूल रहे हैं। सड़कों के साइन बोर्ड, दुकानों और ठेलों पर हिंदी में लिखे शब्दों के व्यापक प्रयोग मिल जाते हैं, जो आम जनता की रोजमर्रा की जरूरत की वस्तुओं की खरीद की समझ को पूरा करते हैं।

मदन मोहन मालवीय ने हिंदी भाषा के संबंध में कहा था कि:

हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जिसे बिना भेद-भाव के प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता ह।

हिंदी भाषा केवल एक संवाद के माध्यम से कहीं बढ़कर रोजगार का माध्यम भी बनी है। हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त करके युवा अपना करियर संवार रहे हैं, या यूं कहें की हिंदी एक नियोक्ता की भूमिका निभा रही है। देश को जोड़ने के क्रम में हिंदी भाषाओं का योगदान अमूल्य है, राजभाषा नीति और नियमों के अनुपालन को सुदृढ़ करने के क्रम में हिंदी को पूरे देश में लागू करने हेतु भारत सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि में राजभाषा से संबंधित कार्मिकों की नियुक्तियां बड़े पैमाने पर की जा रही हैं। संघ लोक सेवा आयोग से लेकर कर्मचारी चयन आयोग द्वारा भी नियमित आधार पर राजभाषा संवर्ग में अधीनस्थ वर्ग से अधिकारी वर्ग में रिक्तियां निकाली जाती हैं। राज्य कर्मचारी चयन आयोग द्वारा भी हिंदी के पदों को भरा जाता है। इसके अलावा अदालतों में अनुवादक, स्कूलों में हिंदी शिक्षक, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हिंदी व्याख्याता के पद अनिवार्य रूप से भरे जाते हैं। देश की आजादी से ही विकास को गति प्रदान करने के लिए कई शहरों नगरों में फैक्ट्रियां लगाईं गई, जैसे सन् 1955 में भिलाई स्टील प्लांट सोवियत संघ के सहयोग से लगाया गया इसी प्रकार अनेक संस्थाओं का निर्माण किया गया। इस प्रक्रिया में विदेशी इंजीनियर और वैज्ञानिकों द्वारा कारखानों के निर्माण में अहम भूमिका निभाई जाती है, जिनकी भाषा हिंदी से परे है। इनके लिए दुभाषियों अर्थात जो हिंदी और संबंधित विदेशी भाषा का ज्ञान रखता हो और संवाद में दोनों पक्षों को सही अनुवाद करते हुए विषय को संसूचित करें। हमारे देश के मंत्रीगण जब विदेश में भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं अथवा दूसरे देशों के राजनेता जब भारत का दौरा करते हैं तो दुभाषियों की दरकार होती है, जिससे दोनों देशों के विभिन्न मुद्दों पर सरल वार्ता की जा सके। इसके अतिरिक्त, हिंदी समाचार चैनलों में एंकर और समाचार पत्रों के लिए संवाददाता की आवश्यकता होती है। लोकसभा और राज्यसभा सचिवालय में दस्तावेजों को समुचित रूप से द्विभाषी जारी करने हेतु हिंदी अनुवादकों की नियुक्ति की जाती है। फिल्मों में भी वाइस आर्टिस्ट का सहारा लिया जाता है जो दूसरी भाषा के संवाद को हिंदी अथवा हिंदी भाषा के संवाद को अन्य किसी भाषा में प्रस्तुत करते हैं। मनोरंजन जगत में भी हिंदी की महत्ता को स्वीकारा है, हिंदी रूपांतरित चलचित्रों ने भी अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त की है, हाल ही में रिलीज़ हुई बाहुबली और पुष्पा जैसी फिल्में इसका उदाहरण रहीं हैं, जो मूलतः तो तेलगु भाषा की फिल्में हैं किंतु हिंदी में डबिंग के कारण हिंदी भाषी दर्शकों में भी बहुत प्रचलित रहीं थीं। हिंदी साहित्य एक व्यापक परंपरा है जिसमें अनेक विधाएं जैसे हिंदी काव्य पाठ, कहानियां या उपन्यास लेखन के क्षेत्र में भी करियर बनाया जा सकता है। मनोरंजन जगत में बॉलीवुड भी हिंदी के बूते ही इतना दीप्तमान हुआ है। ग्राहकों को सेवा प्रदान करने वाले कॉल सेंटर में भी रोजगार के अवसर देखे जा सकते हैं।

गृह मंत्रालय ने हिंदी भाषा के कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से निष्पादित करने के लिए दंड की बजाए प्रोत्साहन का रास्ता अपनाया है। इस क्रम में, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से

हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन पर केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों को वार्षिक आधार पर नगर स्तर पर सम्मानित करती है। साथ ही आठ क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से पूरे देश में राजभाषा के कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा और निगरानी सहित उत्कृष्ट प्रदर्शनकर्ता संस्थाओं को चिन्हित कर पुरस्कृत करती है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिंदी भाषा के क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, राजभाषा गौरव पुरस्कार की घोषणा करते हुए 14 सितंबर यानि हिंदी दिवस के दिन भाषाई क्षेत्र क ख और ग के तहत हिंदी कार्यान्वयन, हिंदी पत्रिका के प्रकाशन, हिंदी आलेख, हिंदी पुस्तक लेखन संवर्ग में संबंधित उत्कृष्ट संस्थाओं, कार्मिकों और हिंदी प्रेमियों को भारत के महामहिम राष्ट्रपति के कर कमलों से पुरस्कृत किया जाता है।

हिंदी भारत के अलावा नेपाल, बंग्लादेश, पाकिस्तान, यमन, संयुक्त राज्य अमेरिका, मॉरिसस, सुरिनाम, त्रिनीदाद एवं टोबेगो जैसे देशों में

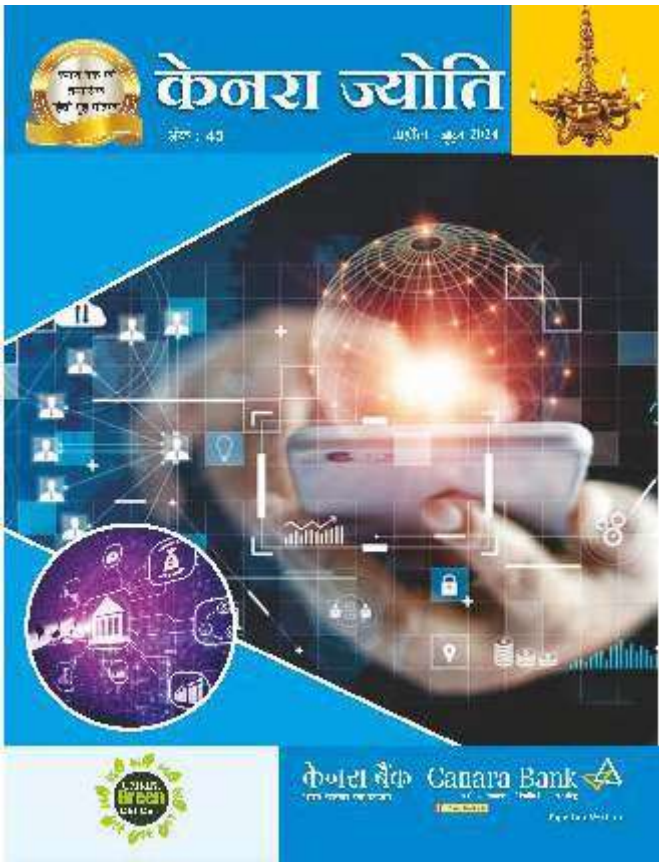

भी बड़ी आबादी द्वारा बोली जाती है। पोर्ट लुइस और मॉरिसस में 2018 में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना भी की गई है। 10 जनवरी 1975 को नागपूर में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था, इसलिए 10 जनवरी को प्रतिवर्ष विश्व हिंदी दिवस भी मनाया जाता है। हिंदी यूनेस्को की नौ कामकाजी भाषाओं में से एक है। संयुक्त राष्ट्र ने भी हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया है। देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी से वर्तमान प्रधानमंत्री ने भी संयुक्त राष्ट्र संघ की सभा में हिंदी में व्यक्तव्य दिए हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है राजभाषा हिंदी केवल बोलचाल की भाषा तक सीमित नहीं है अपितु कारोबार और रोजगार के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान है।

ज्ञात हो कि वित्त वर्ष 2023-24 के लिए ग क्षेत्र के तहत पत्रिका श्रेणी में हमारी गृह पत्रिका केनरा ज्योति को हिंदी का सबसे प्रतिष्ठित सम्मान राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस उपलब्धि के लिए बैंक की राजभाषा टीम के साथ समस्त कार्मिकों को अपार शुभकामनाएं.....

जय हिंद! जय हिंदी.....

अस्मिता द्विवेदी
अधिकारी
खोवामंडी, जबलपुर शाखा

कविता

हमारी हिंदी

जब प्रार्थना में उठते हैं हाथ,तो शब्दों में होती है हिंदी
जब करनी होती है मन की बात तो विचारों में होती है हिंदी

हिंदी माध्यम है गहरी पकड़ बनाने का
हिंदी माध्यम है अपनापन जताने का
ये भाषा मात्र नहीं, ये सम्मान है हमारा
भारत के शीष पर शोभित मुकुट है प्यारा

माना कि देश में अंग्रेजी ने भी स्थान बनाया है
पर हिंदी जैसा अपनापन बस हिन्दी से ही पाया है
ये मां के आंचल की तरह निश्छल सी होती है
बोलने में आसान, समझने में भी सरल होती है

ये निरंतर बहती नदी की तरह वेग जनित होती है
युगों पुरानी होकर भी नित नई सी होती है
हिंदी की वर्णमाला वास्तव में एकता की माला है
जो देश के विभिन्न वर्णों को एक धागे में बांधती है

जब हम गर्व से कहते हैं की हम हिंदी हैं
हमारी हिंदी भी गर्व से कहती है कि, हां मैं तुम्हारी हिंदी हूं
आओ अपनी इस धरोहर का विश्व में बखान करें
हिंदी पढ़ें, हिंदी लिखें, हिंदी का गुणगान करें

लघु–आलेख

तमिलनाडु में हिंदी के प्रारंभिक काल का संक्षिप्त परिचय

मेकला बापू
वरिष्ठ प्रबंधक
खदरा आस्ति केन्द्र, रंगारेड्डी

1956 की भाषावार प्रदेश रचना के पूर्व दक्षिण के चारों राज्यों (तमिलनाडु, आँध्रा, कर्नाटक और केरल) की दो तीन रियासतों को छोड़कर एक इकाई मानी जाती थी और तमिलनाडु(मद्रास) में राजधानी स्थित थी। 1956 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रचार कार्यालय के रूप में हिंदी प्रचार केंद्र का श्रीमती बेसेंट ने उद्घाटन किया। गाँधीजी के पुत्र देवदास गाँधी प्रथम प्रचारक बनकर आये। स्वामी सत्यदेव परिब्राक ने हिंदी की पहली पुस्तक लिखी। 1922 तक दक्षिणी युवकों के चार दल इलाहबाद में हिंदी पढ़ने के लिए भेजे गये। गाँधीजी के अह्वान पर उत्तर प्रदेश और बिहार से कई उत्साही नवजवान प्रचार हेतु दक्षिण में आये। रघुवर दयाल मिश्र तथा शिवराम शर्मा तमिलनाडु के तथा हृषीकेश शर्मा मद्रास के आदिम हिंदी प्रचारक बने। 1922 में पुस्तकों की छपाई के लिए हिंदी प्रचार प्रेस खरीदा गया। 1922 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का स्वतंत्र अस्तित्व बना जिसके आजन्म अध्यक्ष गाँधीजी रहे।

तमिलनाडु के मुख्य शहरों (तंजाऊर, तिरुच्चि, कुंभकोणम, मदुरै, कोयंबत्तूर आदि) में 1922 से कार्य चलने लगा। हिंदी प्रचारक तैयार करने के लिए ईरोड में प्रथम हिंदी प्रचारक विद्यालय रामस्वामी नायकर के घर में चला जिसका उद्घाटन मोतीलाल नेहरू ने किया था।

हिंदी प्रचार को राष्ट्रीय महत्व प्राप्त होने के कारण तमिलनाडु के सभी कांग्रेसी नेताओं का समर्थन हिंदी को मिलता रहता था। राजाजी तो बीस साल तक मद्रास सभा के अध्यक्ष रहे और जब 1938 में मद्रास में कांग्रेस मंत्रिमंडल बना उसके मुख्य मंत्री की हैसियत से दक्षिण के स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई अनिवार्य बनाई थी।

इस प्रकार तमिलनाडु में हिंदी प्रचार का प्रारंभ राष्ट्रीय संग्राम के साधन के रूप में जोश–खरोश के साथ आगे बढा था।

प्रीति सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु

कविता

बचपन की सुहानी यादें

क्या दिन थे वो बचपन के जो पीछे छूट गए।
जिन्दगी की इस भीड़ में हम आगे बढ़ गए।।

पर दिल आज भी तलाशता है उन हसीन पलों को।
पल में झगड़े और पल में दोस्ती के लम्हों को।।

जब बाज़ार से पचास पैसे की टॉफी खरीद कर।
खुश हो जाया करते थे।।
जब घर में मामा, मौसी, बुआ के आने।
पर दिल से खिलखिलाते थे।।

जब दोस्तों के लिए जान हाजिर किया करते थे।
जब कम्प्यूटर पर नहीं हम सड़को पर खेला करते थे।।

जब होली, दिवाली को हम पूरे उत्साह से मनाते थे।
जब सेल्फी में नहीं हम अपनों के साथ समय बिताते थे।।

जब घर की रोटी–दाल हमे ज्यादा भाते थे।
जब पिज्जा बर्गर खाना हमारे दिमाग में ही नहीं आते थे।।

जब टीवी पर समय–समय पर कार्टून और सीरियल देखा करते थे।
जब इंटरनेट और यूट्यूब पर पूरा दिन नहीं बिताते थे।।

जब आम की कच्ची कैरियां हम खुद तोड़ के खाया करते थे।
जब घर में बैठ के ऑनलाइन डिलीवरी नहीं हुआ करते थे।।

दिमाग की सतह में अनेक ऐसी यादें हैं।
जो समय के साथ धुंधली–सी हो गई है।।

ये यादें यदा–कदा याद आ जाती और।
होठों पे हल्की–सी मुस्कान देके वापस चली जातीं।।

आलेख

श्री अन्न (मिलेट्स) का उत्पादन : स्वर्णिम भारतीय इतिहास एवं भविष्य की राह

सुमित कुमार
ग्राहक सेवा सहयोगी
सारस्वत खत्रीपाठशाला शाखा

भूमिका

हमारे देश में आज़ादी के पूर्व तक आमतौर पर मोटे अनाजों का उत्पादन एवं खपत ही प्रायः हुआ करता था। हमारी संस्कृति की तरह ही मोटे अनाजों में भी विविधता देखने को मिलती हैं। मोटे अनाज हमारे कृषि, समाज एवं संस्कृति का हिस्सा रहें हैं और इनकी लोकप्रियता दिनोदिन बढ़ती जा रही है। पिछली कई शताब्दियों से मोटे अनाज हमारे दैनिक आहार के अभिन्न अंग रहें हैं। न सिर्फ स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बल्कि पर्यावरण, मृदा क्षरण, उत्पादन के लिए कम जल की खपत की वजह से ये सम्पूर्ण मानव जाति के लिए उत्तम आहार हैं। केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय के आँकड़ो के अनुसार देश में हरित क्रांति (वर्ष 1965 से 1970 के दौर को हरित क्रांति का समय मानते हैं) से पहले कुल 37 हजार हेक्टेयर में मोटे अनाजों की खेती होती थी। जबकि उत्पादन 17 हजार टन था। तो वहीं एक हेक्टेयर में 15 हजार किग्रा का उत्पादन था। देश के कुल अनाज उत्पादन में मोटे अनाजों का हिस्सा 20 फीसदी था जोकि एक बड़ी मात्रा थी। फिर सत्ता हस्तांतरण के उपरांत हमारे देश की आबादी तो बढ़ी किन्तु खाद्यान्न उत्पादन अपेक्षाकृत नहीं बढ़ा। चूंकि भारत की अधिकांश आबादी कृषि पर आधारित थी और बढ़ती हुई जनसंख्या का पेट भरने के लिए खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने की तत्काल आवयशकता थी। इस खाद्यान्न संकट से उबरने में सी. सुब्रह्मण्यम (1946 की संविधान सभा के सदस्य बाद मे विधि मंत्री एवं अन्य पदों पर रहें, भारत में हरित क्रांति के पिता कहे जाते हैं) की बेहतर कृषि नीतियाँ तथा मशहूर वनस्पति विज्ञानी एम. एस. स्वामीनाथन (हरित क्रांति के मुख्य शिल्पकार) के दिशानिर्देशों के गठजोड़ से देश के किसानों ने हरित क्रांति के माध्यम से गेहूं और चावल के उत्पादन में अनापेक्षित वृद्धि दर्ज की क्योंकि इसी के लिए मुख्य रूप से हरित क्रांति हुई थी और देश इस प्रकार खाद्यान्न उत्पादन तथा खाद्यान्न गहनता मे आत्मनिर्भर हो गया तथा देश की बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकी और सिर्फ इतना ही नहीं हम खाद्यान्न का निर्यात करने की स्थिति में आ गए। हरित क्रांति से पूर्व देश में मोटे अनाजों की खेती का रकबा तो अधिक था लेकिन उत्पादन अपेक्षाकृत कम था। हरित क्रांति का प्रभाव मोटे अनाजों की खेती पर भी पड़ा और वो यह था कि किसानो ने मोटे अनाज की खेती कम कर दी थी और गेहूं तथा चावल की खेती बढ़ा दी थी। मोटे अनाजों की खेती का रकबा तो कम हो गया था क्योंकि गेहूँ और चावल की खेती का रकबा बहुत अधिक बढ़ गया था लेकिन मोटे अनाजों का उत्पादन रकबा कम होने के बावजूद अपेक्षाकृत रूप से बढ़ गया था। जिसकी प्रमुख वजह यह रही कि वैज्ञानिकों ने हरित क्रांति के दौरान उन्नत किस्म के बीजों को विकसित किया जिसकी वजह से कम रकबे के बावजूद मोटे अनाजों का उत्पादन बढ़ पाया। केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय के आँकड़ो के अनुसार मोटे अनाजों की खेती का रकबा 2020 तक लगभग 56 फीसदी घटा है लेकिन उत्पादन आश्चर्यजनक रूप से 228 फीसदी बढ़ा है। सबसे नवीनतम आंकड़ों की माने तो 2015-20 के दौर में हमारे देश के किसानो ने मात्र 14 हजार हेक्टेयर में मोटे अनाजों की फसल लगाई और 15 हजार टन का उत्पादन रहा। इस तरह 1 हेक्टेयर में 37 हजार किग्रा का भारी उत्पादन किया। इस प्रकार देश के किसानों ने मोटे अनाजों के उत्पादन स्तर को हरित क्रांति से पूर्व के 15 हजार किग्रा प्रति हेक्टेयर से बढ़ाकर 37 हजार किग्रा प्रति हेक्टेयर पर ला दिया। ये उपलब्धि हमारे देश के किसानों के पुरषार्थ और वैज्ञानिकों के कौशल को दर्शाती है एवं हमारे देश को एक कृषि प्रधान देश और अर्थव्यवस्था को कृषक अर्थव्यवस्था के तौर पर स्थापित करती है।

श्री अन्न या मिलेट्स : एक परिचय

वस्तुतः छोटे बीज वाली विभिन्न फसलों के लिए संयुक्त रूप से प्रयुक्त एक शब्द है जिन्हें समशीतोष्ण, उपोष्ण और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के शुष्क भूभागों के सीमांत भूमि पर अनाज फसलों के रूप में उगाया जाता है। इन अनाजों के प्राचीनतम साक्ष्य सिंधु सभ्यता से प्राप्त हुए अवशेषों से लगाया जा सकता हैं और मानव द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला प्रथम अनाज जौ था। माना जाता है कि ये खाद्य के लिए उगाये गए प्रथम फसलों में से एक थे। डॉक्टर खादर वली को भारत का मिलेट मैन कहा जाता हैं जिनके अनुसार यदि हम अपने भोजन में नियमित रूप से मोटे अनाजों को स्थान दें तो हमें औषधियों की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इन्होंने पिछले दो दशकों से मोटे अनाजों को लेकर अभियान चला रखा हैं जिसके लिए इन्हें भारत सरकार द्वारा 2023 में नागरीक सम्मान 'पद्मश्री' देकर सम्मानित किया। विश्व के 131 देशों में इनकी खेती की जाती हैं और एशिया एवं अफ्रीका के लगभग 60 करोड़ लोगों के लिए ये पारंपरिक आहार है। इन्हे प्रायः मोटा अनाज, कदन्न, मिलेट्स, सुपरफूड या श्री अन्न के नाम से जानते हैं। इनको 'मोटा' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनको उगाने में ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ती है और लागत भी कम आती है। ये अनाज कम पानी और कम उपजाऊ भूमि पर भी आसानी से उग जाते हैं। मोटे अनाजों का उत्पादन किसानों के लिए लाभकारी है क्योंकि इसमें पानी काफी कम लगता हैं एवं ये पथरीली भूमि पर भी उगाया जा सकता है। मोटे अनाजों का वर्गीकरण दो भागों में किया जाता है। प्रथम भाग में मोटे बीज वाले अनाज आते हैं जिसमें मुख्य रूप से बाजरा एवं ज्वार आतें हैं तथा दूसरे प्रकार में छोटे दाने वाले मोटे अनाज हैं जिसमें रागी, सांवा, चीना, कुकुम, कोदो और कुटकी सम्मिलित हैं। इन छोटे दाने वाले मोटे अनाजों को ही साधारणतया कदन्न अनाज कहा जाता है। मोटे अनाज सभी महत्वपूर्ण पोषक तत्वों से परिपूर्ण होने के कारण इन्हे सुपरफूड भी कहा जाता हैं, मोटे अनाजों को इस नाम से प्रधानमंत्री मोदी जी ने नयी दिल्ली 2023 मे मोटे अनाजों पर हुए एक सम्मेलन में संभोदित किया। इन्हें श्री अन्न भी कहा जाता है अर्थात एक ऐसा अन्न जिसमे दैवीय कृपा हो। दरअसल कृषि विशेषज्ञों के अनुसार मोटे अनाज को कर्नाटक राज्य में सिरी धान्य कहा जाता है क्योंकि ये न सिर्फ स्वादिष्ट और पोषण से भरपूर होते हैं बल्कि इनमें ढेर सारे औषधीय गुण भी होते हैं। प्रधानमंत्री जी ने कर्नाटक के तुमकुरु में एक जनसभा को संबोधित करते हुए यह बताया कि मोटे अनाजों के इतने विशिष्ट गुणों के कारण इन्हें अब से पूरे देश में श्री अन्न के नाम से ही जाना जाएगा और ये इसका आधिकारिक नाम भी होगा एवं श्री अन्न का अर्थ है सभी अनाजों में सर्वोत्तम।

मोटे अनाजों की उपयोगिता –

मोटे अनाज में ओमेगा थ्री फैटी एसिड प्रचुर मात्रा में होने के कारण ये हमें हृदय रोगों से बचाते हैं। मिलेट शरीर में स्थित अम्लता यानी एसिड दूर करता हैं। इसमें विटामिन होता है जो शरीर में मेटाबोलिज़्म की प्रक्रिया को ठीक रखता है जिससे कैंसर जैसे रोग नहीं होते हैं। मिलेट प्रकार 1 और 2 मधुमेह रोग को रोकने में कारगर है क्योंकि इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता हैं। इनका सेवन फलियों के रूप में करने पर ये प्रोटीन के अच्छे स्त्रोत होते हैं। भारत जैसे देश में जहां पोषण का स्तर कम हैं, मोटे अनाजों की उपयोगिता और भी बढ़ जाती हैं। उच्च पोषण स्तर के अलावा मोटे अनाजों को बढ़ते धरती के तापमान में जीवन रक्षक माना जा सकता हैं। इसके अतिरिक्त मोटे अनाजों का उपयोग चारा एवं ईंधन आदि में भी किया जाता है।

मोटे अनाज को महत्वपूर्ण पोषक अनाज क्यों माना जाता हैं –

- **जलवायु – प्रत्यास्थी प्रधान खाद्य फसलें :** मोटे अनाज सूखा प्रतिरोधी होतें हैं, कम जल की आवश्यकता रखतें हैं, कम पोषक मृदा दशाओं में तथा अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में भी उगाएँ जा सकते हैं। ये गुण मोटे अनाजों को अप्रत्याशित मौसम चक्र और जल की कमी वाले क्षेत्रों के लिए एक उपयुक्त खाद्य फसल बनाता है।
- **पोषक तत्वों से भरपूर :** मोटे अनाजों में आहार फाइबर,लौह तत्व, प्रोटीन, ओमेगा थ्री फैटी एसिड, विटामिन्स, कैल्शियम, खनिज, एंटी–ऑक्सीडेंट एवं सूक्ष्म पोषक तत्व आदि पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। आईसीएमआर के एक अध्ययन के अनुसार, भारत जोकि मधुमेह रोगियों की संख्या के हिसाब से विश्व की राजधानी कही जा रही हैं। क्योंकि पूरे विश्व के कुल मधुमेह मरीजों की संख्या का लगभग 17 फीसदी भारत में हैं

और लगभग 136 मिलियन पूर्व-मधुमेह रोगी हैं जिन्हें तत्काल बचाव या रोकथाम की आवश्यकता है। मोटे अनाज इस लिहाज से भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण पोषक आहार हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण मोटे अनाज जैसे रागी की बात करें तो - रागी को भारतीय मूल का माना जाता है और यह उच्च पोषण वाला मोटा अनाज होता है जिसमें 344 मिग्रा प्रति 100 ग्राम कैल्शियम और 3.9 मिग्रा प्रति 100 ग्राम लौह तत्व होता है। जो बाजरे को छोड़कर सभी प्रकार के मोटे अनाजों से अधिक हैं। अतः रागी बच्चों और महिलाओं की हड्डियों की मजबूती एवं खून की कमी को पूरा कर सकता है। मोटे अनाज उच्च रक्तचाप और मोटापे की समस्या से ग्रसित लोगों के लिए भी एक वरदान हैं। इस पर एक कहावत भी है, मोटापे के दुश्मन चार - जौ, बाजरा, रागी और ज्वार। इतने पोषक तत्वों की वजह से भारत जैसे विकासशील देश में जहां पाँच वर्ष तक की आयु के बच्चों में कुपोषण ज्यादा हैं, मिलेट्स क्रांति उन गरीबों और उनके बच्चों के लिए वरदान साबित होगी एवं एक स्वस्थ्य समाज का निर्माण करेगी।

- **ग्लूटेन फ्री :** मोटे अनाज प्राकृतिक रूप से ग्लूटेन फ्री या लस मुक्त होते हैं, जो उन्हें सीलियेक रोग या लस असहिष्णुता वाले लोगों के लिए उपयुक्त खाद्य अनाज बनाते हैं।

- **अनुकूलन योग्य :** मोटे अनाज को विभिन्न प्रकार की मृदा और जलवायु दशाओं में उगाया जा सकता हैं, जिससे वे किसानों के लिए एक बहुमुखी फसल का निर्माण करते हैं। मोटे अनाजों का उत्पादन मृदा के स्वास्थ्य वर्धन के लिए उत्तम होता हैं, क्योंकि मोटे अनाजों की जड़ें खोखली होती हैं जो मृदा के पोषक तत्वों को छरण होने से रोकती हैं और इस प्रकार से मृदा छरण रोककर मृदा की उत्पादकता में वृद्धि करती हैं।

- **संवहनीय :** मोटे अनाज प्रायः पारंपरिक कृषि तकनीकों का उपयोग करके उगाये जाते हैं। जो आधुनिक तथा औद्योगिक कृषि पद्धतियों की तुलना में अधिक संवहनीय तथा पर्यावरण के दृष्टिकोण से अनुकूल हैं क्योंकि मोटे अनाजों की खेती में रसायन और उर्वरकों का इस्तेमाल किए बिना ही इन्हें उगा सकते हैं। भारत के मोटा अनाज मिशन को बढ़ावा देने से करीब ढाई करोड़ लघु एवं सीमांत किसानों को फ़ायदा होगा।

- **आर्थिक पोषण :** संयुक्त राष्ट्र के कृषि एवं खाध संगठन की मानें तो, भारत ने वर्ष 2020-21 के दौरान 597.5 करोड़ रुपये और 2021-22 के दौरान 642.8 करोड़ रुपये का श्री अन्न का निर्यात किया था। भारत दुनिया में श्री अन्न के उत्पादन में शीर्ष पर हैं और साथ ही अफ्रीका के बाद भारत दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश भी है। वर्ष 2023 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में मोटे अनाजों का उत्पादन 50.9 मिलियन टन से ज्यादा का हैं जोकि एशिया के कुल मोटे अनाज उत्पादन का 80 फीसदी है और वैश्विक उत्पादन का 20 फीसदी हैं। भारत में कदन्न उत्पादन में राजस्थान राज्य का सर्वाधिक योगदान हैं। भारत के शीर्ष पाँच मोटा अनाज उत्पादक राज्य हैं क्रमशः - राजस्थान(27%), कर्नाटक(18%), महाराष्ट्र(14%), उत्तर प्रदेश(12%) एवं गुजरात(7%)। भारत जिन प्रमुख देशों को मोटे अनाज का निर्यात करता हैं, उनमे संयुक्त अरब अमीरात, नेपाल, सऊदी अरब, लीबिया, ओमान, मिस्र, ट्यूनीशिया, यमन, ब्रिटेन और अमेरिका है। भारत के मोटे अनाज के निर्यात कुल उत्पादन का सिर्फ 1 फीसदी है। भारत के मोटे अनाज के निर्यात में मुख्य रूप से सम्पूर्ण अनाज हैं जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कनेरा और कुट्टू जबकि संसाधित मोटे अनाजों का निर्यात प्रतिशत बहुत कम हैं। लेकिन अनुमान हैं कि वर्ष 2025 तक मोटे अनाज का बाजार वर्तमान 9 बिलियन डॉलर मूल्य से बढ़कर 12 बिलियन डॉलर हो जाएगा।

मोटे अनाजों के प्रकार – भारत में दो प्रकार के मोटे अनाज उगाये जाते हैं। प्रमुख मोटे अनाज में ज्वार, बाजरा और रागी शामिल हैं। जबकि गौण मोटे अनाज में काँनी, कुटकी, कोदो, वरिगा/पुनर्वा और सांवा शामिल है। ज्वार को औषधि के रूप में काफी उपयोगी माना जाता हैं। इसमें पाये जाने वाले अनेक गुणों विशेषकर कार्बोहाइड्रेट के कारण इसे मोटे अनाजों का राजा कहा जाता हैं। दुर्लभ प्रकार के बाजरे की 30 किस्मों को उगाने एवं संरक्षित करने एवं सैंकड़ों महिलाओं को बाजरे के खेती के बारे में प्रशिक्षित करने की वजह से रायमति धुरिया को बाजरे की रानी की संज्ञा दी गयी है।

वर्ष 2021-22 के लिए चौथे अग्रिम अनुमान के अनुसार, भारत में बाजरे का उत्पादन लगभग 16 मिलियन टन हुआ था। जो राष्ट्रीय खाद्यान्न बास्केट का लगभग 5 फीसदी हैं। इसकी बाजार मे हिस्सेदारी सबसे ज्यादा 9.62 मिलियन टन है, इसके बाद 4.23 मिलियन टन के साथ ज्वार का उत्पादन दूसरे स्थान पर हैं। रागी एक अन्य महत्वपूर्ण बाजरा है, जो देश के उत्पादन में 1.70 मिलियन टन का योगदान करता है और अन्य बाजरे का उत्पादन 0.37 मिलियन टन हैं।

शाकाहारी खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग के लिए बाजरा एक वैकल्पिक खाद्य प्रणाली प्रदान करता है। बाजरा संतुलित आहार के

साथ-साथ एक सुरक्षित वातावरण के निर्माण में योगदान देता है। बाजरा एक जलवायु अनुकूल फसल है जिसका उत्पादन पानी की कम खपत, कम कार्बन-उत्सर्जन और सूखे में भी किया जा सकता हैं। इसकी खेती ग्रामीण भारत में खाद्यान्न और पशु चारे, दोनों के लिए की जाती हैं। बाजरा एक अनाज हैं लेकिन गेहूं, मक्का और चावल से अलग हैं क्योंकि इसमें पोषक तत्व बहुत अधिक होते हैं। यजुर्वेद में प्रियंगव अनावा और काली उँगली नामक मोटे अनाजों की पहचान की गयी है, जिससे ये स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि भारतीय संस्कृति में बाजरे की खपत बहुत आम बात थी जोकि भारतीय कांस्य युग 4500 ईसा पूर्व से पहले की थी। बाजरा 4 से 5000 साल पहले खेती की जाने वाली फसलों में से एक था और सबसे पहले अफ्रीकी देश माली में उगाया गया था। बाजरे के फ़ायदों पर एक विशेष गीत पीएम मोदी जी ने ग्रैमी विजेता गायक फालू द्वारा प्रस्तुत अबन्द्वस इन मिलेट्स जून, 2023 को जारी किया। इसका वैज्ञानिक नाम - पेन्नीसेटुम ग्लौकुम है। ये मानव जाति के लिए एक प्राकृतिक उपहार है। बाजरा सूक्ष्म पोषक तत्वों, विटामिन और खनिजों का भंडार है। भारत के अधिकांश राज्य एक या एक से अधिक बाजरे की प्रजातियों की खेती करते हैं। पिछले पाँच वर्षों की अवधि में, हमारे देश में 13.71 से 18 मिलियन टन के करीब बाजरे का उत्पादन हुआ है जिसमे 2020-21 उच्चतम उत्पादन का वर्ष रहा हैं। गुणों की खान एवं कम ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन होने की वजह से बाजरे को चमत्कारी अनाज और भविष्य की फसल कहा जाता है।

एशिया और अफ्रीका बाजरे के प्रमुख उत्पादन और उपभोग करने वाले क्षेत्र हैं। भारत, नाइज़र, सुडान और नाइजीरिया बाजरा के प्रमुख उत्पादक देश हैं। ज्वार और प्रोसो बाजरा(सामान्य बाजरा) क्रमशः 112 और 35 देशों में सबसे ज्यादा उगाये जाने वाले बाज़रा हैं। ज्वार और पर्ल बाजरा 90 फीसदी से ज्यादा क्षेत्र और उत्पादन को कवर करतें हैं। शेष उत्पादन में रागी, चीना, कांगनी और अन्य गैर-पृथक बाजरा शामिल है।

मोटे अनाजों के प्रति समाज में जागरूकता लाने के तरीक़े – केंद्र एवं राज्य सरकार की तरफ से मोटे अनाजों की खूबियों को जनता को बताने का पूरा प्रयास किया जा रहा हैं। सितंबर, 2023 मे प्रथम बार भारत की अध्यक्षता में हुए जी-20 शिखर सम्मेलन में, अंतर्राष्ट्रीय मेहमानों को भी श्री अन्न से बने पकवान परोसे गए एवं जी-20 में दो दिवसीय वैश्विक बाजरा सम्मेलन का आयोजन किया गया था। भारतीय संसद की कैंटीन में भी मिलेट्स से निर्मित व्यंजन परोसे जाने लगें हैं, जैसे-भाकरी, बाजरा-खिचड़ी, ज्वार-उपमा आदि। सरकार के द्वारा की गयी अन्य पहलें -

- केंद्र सरकार ने बाजरे के न्यूनतम समर्थन मूल्य मे वृद्धि की है जो किसानो के लिए एक बड़े मूल्य प्रोत्साहन के रूप में हैं।
- इसके अलावा उपज के लिए स्थिर बाजार प्रदान करने हेतु केंद्र सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली में मोटे अनाज को शामिल किया हैं।
- केंद्र सरकार ने किसानों की सहायता हेतु बीज किट का प्रावधान शुरू किया है तथा किसान और उत्पादक संगठनो के माध्यम से मूल्य श्रृंखला का निर्माण किया है और मोटे अनाजों की बिक्री का समर्थन किया हैं।
- घरेलू खपत एवं भंडारण क्षमता बढ़ाने और बाजरा उत्पादों की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ब्रांडिंग के लिए सहायता प्रदान की जाएगी।
- भारत के लिए बाजरा सतत विकास लक्ष्यों को पूर्ण करने का एक महत्वपूर्ण घटक हैं।
- केंद्र सरकार की तरफ से मोटे अनाजों की खूबियों को जनता तक लाने, उनकी उपज बढ़ाने और खपत को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष 2018 को राष्ट्रीय बाजरा-ज्वार वर्ष घोषित किया गया था।

- केन्द्रीय बजट 2023-24 में मोटे अनाज पर विशेष ध्यान देने के लिए केंद्र सरकार ने हैदराबाद स्थित भारतीय बाजरा अनुसंधान संस्थान को सर्वोत्तम प्रथाओं, अनुसंधान और प्रोध्योगिकी के उत्कृष्ट केंद्र के रूप में स्थापित करने का प्रण लिया हैं।
- इनके अतिरिक्त केंद्र सरकार के माईगौवकौम प्लैटफ़ार्म पर बाजरे से जुड़ी बहुत सारी स्वादिष्ट पकवान बनाने की रेसिपी दी हुई है।
- कुछ राज्य की सरकारों ने अपने राज्यों में राज्य बाजरा मिशन चला रखा है जैसे-यूपी, एमपी, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, राजस्थान, कर्नाटक आदि।

भविष्य की राह – भारत सरकार की अंतर्राष्ट्रीय मैत्री एवं उत्तम विदेश नीति की वजह से वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष के तौर पे पूरे विश्व में मनाने के लिए भारत के प्रस्ताव को वर्ष 2018 में खाद्य और कृषि संगठन द्वारा अनुमोदित किया गया था तथा संयुक्त राष्ट्र महासभा ने मार्च 2021 में अपने 75 वें सत्र में वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष के रूप में घोषित किया था और इसकी थीम थी - 'स्वस्थ बाजरा, स्वस्थ लोग'। इसे संयुक्त राष्ट्र के एक प्रस्ताव द्वारा अपनाया गया और इसका नेतृत्व भारत ने किया तथा 70 से अधिक देशों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया था। भारत का अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष को जनांदोलन बनाने के साथ-साथ भारत को वैश्विक पोषक अनाज हब के रूप में स्थापित करने का उद्देश्य हैं। अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष - 2023 का स्लोगन है - विरासत से समृद्ध, संभावनाओं से भरपूर। इसके अतिरिक्त हमारे जीवन में बाजरे के महत्व को दर्शाने के लिए प्रति वर्ष पूरी दुनिया में 19 दिसम्बर के दिन अंतर्राष्ट्रीय बाजरा दिवस मनाया जाता है।

उद्धरण –

- www.google.com
- www.quora.com
- www.fao.org
- www.timesofindia.indiatimes.com
- https://en.wikipedia.org
- https://apeda.gov.in
- www.kisantak.com
- www.drishtiias.com
- www.testbook.com

कविता

अंबरमाला

दिव्या प्रजापति
अधिकारी
जी टी रोड़, एटा

सूरज की सुनहरी किरण थामकर
जीवन ने नयी करवट ली।
ऐसा जैसे किसी कारीगर ने
फिर से हाथ में खरवट ली।
और फिर फ़ँसा दी उस करवट में
मेरी सारी इच्छाएं,
कुछ इधर से छांटा कुछ उधर से
और बना दी किसी की अपेक्षाएं।
फिर अपेक्षाओं का दौर हुआ शुरु
तोला गया तराजू पर,
कुछ कम था कुछ था ज्यादा
किंकर्तव्यविमूढ़ मैं क्या करूं?
और सुनहरी किरण सांझ की डोर पड़कर लौट गई,
पर मेरे मन के सागर में कुछ मोती वह छोड़ गई।
मोती का रंग था बिल्कुल चांद जैसा श्वेत,
जैसे जीवन के सार का समेटा सारा अंतरभेद।
मैंने भी चाँद की शीतल छाया में अपना सपना बुन डाला,
और थामकर शीतल किरण जीवन को दी श्वेत अंबरमाला।

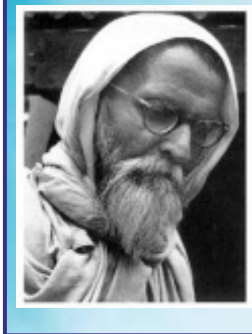

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, पर मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, ये मैं सह नहीं सकता।

– आचार्य विनोबा भावे

आलेख

हिंदी भारत की राष्ट्रीय भाषा नहीं है : यह मिथक क्यों जारी है?

लीना ज्ञानवानी
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु दक्षिण

एक राष्ट्र के संबंध में, हम अनेक यादों से परिचित हैं। क्रिकेट हमारा राष्ट्रीय खेल नहीं है, शेर हमारा राष्ट्रीय पशु नहीं है और भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में से एक हिंदी, हमारी राष्ट्रीय भाषा नहीं है।

एक राष्ट्रीय भाषा को लेकर बहस और उत्साह – राजनीतिक होने के अलावा – इतिहास, संस्कृति और एकता के मायावी विचार के बारे में भी है।

राष्ट्रभाषा के मुद्दे पर संविधान काफी हद तक मौन है। संविधान की **आठवीं अनुसूची में हिंदी सहित 22 क्षेत्रीय भाषाओं** का उल्लेख है। हिंदी भी देश के विशेष क्षेत्रों तक ही सीमित है – जिस प्रकार बंगाली, गुजराती, उड़िया या कन्नड़। हालाँकि, भ्रम तब शुरू हुआ जब राजभाषा संबंधी **संवैधानिक अनुच्छेद** 343 के तहत देवनागरी लिपि में **हिंदी एवं अंग्रेजी को आधिकारिक भाषा** के रूप में नामित किया गया – अर्थात आधिकारिक पत्राचार के लिए उपयोग की जाने वाली भाषाएँ।

इसके अलावा, राष्ट्रभाषा संबंधी स्पष्ट अधिसूचना की कमी के कारण कि भारत की कोई राष्ट्रीय भाषा नहीं है, यह भ्रम पैदा हुआ और इसे पनपने का मौका मिला। आम तौर पर, भारत में अधिकांश लोगों ने हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है व कई लोग हिंदी बोलते हैं और देवनागरी लिपि में लिखते हैं, लेकिन आधिकारिक सुझाव देने के लिए रिकॉर्ड पर कुछ भी नहीं है कि हिंदी को देश की राष्ट्रीय भाषा घोषित करने के लिए कोई प्रावधान किया गया है या आदेश जारी किया गया है।

इस भ्रम को जोड़ते हुए **अनुच्छेद** 351 एक निर्देशात्मक आदेश, कहता है कि हिंदी के प्रसार को बढ़ावा देना सरकार का कर्तव्य है, ताकि यह भारत की समग्र संस्कृति को व्यक्त करने के एक तरीके के रूप में कार्य करें। यह भी एक द्वन्द्वात्मक स्थिति ही है।

एक और कानूनी पूर्वाग्रह **संविधान के अनुच्छेद** 348(2) **और राजभाषा अधिनियम,** 1963 **की धारा** 7 में परिलक्षित होता है, जो बिहार और राजस्थान जैसे हिंदी भाषी राज्यों को अपने संबंधित उच्च न्यायालयों में हिंदी का उपयोग करने की अनुमति देता है। हालाँकि तमिलनाडु सरकार ने केंद्र से तमिल के लिए समान प्रावधान करने का आग्रह किया, लेकिन अदालत ने यह तर्क देते हुए याचिका खारिज कर दी कि इस तरह के बदलाव से पूरे भारत में उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के स्थानांतरण और पोस्टिंग पर असर पड़ेगा।

अभी हाल ही में, प्रधान मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री या वित्त मंत्री द्वारा संबोधनों में – अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ बोलने वाले लोगों को छोड़कर – आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी के उपयोग ने इसे और अधिक प्रमुखता प्रदान की है। रेलवे टिकट केवल हिंदी और अंग्रेजी में मुद्रित होते हैं और सरकारी वेबसाइट शायद ही कभी इन दो भाषाओं से आगे बढ़ती हैं। परीक्षाएं और पाठ्यक्रम ज्यादातर अंग्रेजी और हिंदी में पेश किए जाते हैं।

हिंदी राष्ट्रीय चेतना में एक विशेष स्थान रखती है क्योंकि यह विश्वास है कि यह भारत में अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती है, 2011 की जनगणना के अनुसार हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग 44% है। हिंदी को **राजभाषा** के रूप में **गौरवपूर्ण स्थान** दिया गया है, **न कि 'राष्ट्रीय' भाषा के रूप में,** जैसा कि वांछित है, लेकिन फिर भी यह एक महत्वपूर्ण भाषा है, जिसके परिणामस्वरूप कई विसंगतियाँ पैदा हुई।

यकीनन, भारत में कुछ राज्यों की मूल भाषा हिंदी है। लेकिन इन क्षेत्रों में भी, शोध से पता चलता है कि स्थानीय लोग या तो अपने समुदायों से जुड़ी बोलियों में बात करते हैं या हिंदी के उस रूप में बातचीत करते हैं जो मुख्यधारा के संस्करण से काफी अलग है। उदाहरण के लिए, बिहार में भोजपुरी बोली या मातृभाषा मैथिली अधिक आम है; छत्तीसगढ़ में लोग छत्तीसगढ़ी नामक बोली का प्रयोग करते हैं।

यहां कुछ ऐतिहासिक मुद्दे भी हैं। विभाजन के बाद हिंदी की खूबी यह थी कि यह अंग्रेजी की एकमात्र विशिष्ट साथी के रूप में अस्तित्व में थी। इसके अलावा हिंदी अंग्रेजी और उससे जुड़े **अभिजात्यवाद** की विरोधी बन गई। उत्तरी राज्यों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, लोगों के केवल एक छोटे से वर्ग द्वारा अंग्रेजी बोली जाती है। अंग्रेजी और हिंदी की इस झूठी बाइनरी का मतलब यह हुआ कि हिंदी उन लोगों के लिए अपेक्षाकृत आसान विकल्प बन गई जो अंग्रेजी तक पहुंच नहीं सकते थे।

आज भी 'हिंदी राष्ट्रभाषा नहीं है' यह मिथक कायम क्यों है?? क्योंकि सभी व्यावहारिक अर्थों में, हिंदी शहरी परिवेश में, आम राष्ट्रीय भाषा के रूप में कार्य करती है। जैसे-जैसे कामकाजी मध्यम वर्ग शहरों की ओर पलायन करता है, वे सुविधा और तार्किक आसानी के लिए हिंदी को अपनाते हैं, जिससे अनिवार्य रूप से भाषा का वर्चस्व बढ़ता है। सामान्य लोग सरकारी अधिकारियों से निपटने के लिए मानक भाषा सीखना चाहते हैं अन्यथा उन्हें साक्षर नहीं माना जाएगा और उनकी आवाज़ नहीं सुनी जाएगी।

सरकार द्वारा एकभाषी नीति की ओर बढ़ने का प्रयास किया है। 2017 में भारत ने हिंदी को **संयुक्त राष्ट्र की भाषा** के रूप में शामिल करने पर जोर दिया - जो संक्षेप में इसे '**राष्ट्रीय भाषा**' का दर्जा दिलाने का एक पिछले दरवाजे का प्रयास था। उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने 2018 में सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि हिंदी राष्ट्रीय भाषा होनी चाहिए।

हिंदी को बढ़ावा देने वाली राष्ट्रीय एकता के निर्माण की इच्छा के बीच तनाव अन्य भाषाई समूहों के बहिष्कार से बिल्कुल विपरीत है। यह एक विचार पर आधारित है: क्या राष्ट्रीय एकता को लोगों की भाषाई और सांस्कृतिक पहचान पर प्राथमिकता दी जा सकती है। यकीनन, भाषा हर राजनीतिक और सामाजिक विमर्श की कुंजी बनी हुई है, इसलिए भाषा का सवाल सिर्फ थोपने का नहीं है - बल्कि किसी व्यक्ति की सांस्कृतिक पहचान को खतरे में न डाल कर हिंदी को प्रचारित करने का है।

भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है और इसलिए भारत में बोली जाने वाली अन्य सभी भाषाओं की तुलना में हिंदी को विशेषाधिकार देना इसकी विविधता को भी दर्शाता है।

पूनम सिंह
अधिकारी
ऑनलाईन बैंकिंग समूह
डिजिटल बैंकिंग सेवाएँ विभाग

कविता

प्रकृति की गुहार

हे मानव!!!
कहती तुमसे प्रकृति, लगाती यही गुहार
मत काटो जंगल, वृक्ष है उसका श्रृंगार

झीनी है मनुष्य की यह देह
न सह पायेंगी यह प्रकृति का वार
मत हो विनाश की ओर अग्रसित
संतुलन का खेल सारा इतना सा है सार

नम है आज धरती की आखें, करती रुद्र विलाप
अब तो जागो चेतना से, मानो प्रकृति का आभार
जब यह प्राकृति रौद्र रूप दिखाएगी.
तब सब यह काया मिट्टी में मिल जाएगी

एक पल में डह जाएंगे सारे रचना निमार्ण
थमजा मानव, विवेचना कर प्रकृति को लेकर आधार
कहती तुमसे प्रकृति,
लगाती यही गुहार
मत काटो जंगल, वृक्ष है
उसका श्रृंगार

यात्रा वृत्तांत

हैदराबाद – मोतियों का शहर

आस्था आहूजा
प्रबंधक
केंद्रीय पेंशन प्रसंस्करण केंद्र
प्रधान कार्यालय एनेक्स

परिचय

मेरे कई शौक में यात्रा करना शामिल है। यह मेरा सौभाग्य था कि मेरे आदरणीय पिताजी एक बैंकर थे और मुझे विभिन्न स्थानों पर जाने का अवसर मिला। हालाँकि सभी स्थान मेरे गृह राज्य उत्तर प्रदेश के भीतर थे। इसलिए जब मुझे हैदराबाद स्थानांतरित किया गया, तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि आखिरकार मुझे अपना सपना पूरा करने

और दक्षिण भारत में रहने का मौका मिल रहा था। मेरे गृह राज्य और तेलंगाना की विकास स्थिति के बीच भारी अंतर ने मुझे इसे अपना स्थायी पता बनाने के लिए प्रेरित किया। हालाँकि एक बैंकर के रूप में सभी खुशियाँ अस्थायी हैं और तेलंगाना में 7 शानदार वर्षों के बाद जिनमें से 5 हैदराबाद शहर में थे मेरा तबादला कर दिया गया। मैं भाग्यशाली थी कि मुझे हैदराबाद स्थानांतरित कर दिया गया और उस दौरान मैंने शहर और आस-पास के इलाकों में घुमी। एक पूर्व निवासी के रूप में मैं प्रमुख पर्यटन स्थलों के अलावा कुछ स्थानों को साझा करना चाहूंगी जो हैदराबाद को अद्वितीय बनाते हैं।

हैदराबाद दक्षिण भारत के प्रमुख शहरों में से एक है। मूसी नदी के किनारे स्थित यह निज़ाम के युग से राजधानी है और वर्तमान में तेलंगाना राज्य की राजधानी के रूप में कार्य कर रहा है। शहर की प्रमुख विशेषता विभिन्न धर्मों के लोगों का एक साथ मिलजुल कर रहना है। जहां पुराने शहर में बहुसंख्यक मुसलमान आबादी है, वहीं दूसरी ओर हिंदू आबादी है। परिणामस्वरूप ईद और दिवाली, दोनों (प्रमुख त्योहार) भव्य पैमाने पर मनाए जाते हैं।

हैदराबाद सांस्कृतिक विरासत से भी समृद्ध है। एक तरफ इसमें चारमीनार जैसे ऐतिहासिक चमत्कार हैं, तो दूसरी तरफ इसमें प्रतिष्ठित हाईटेक सिटी-साइबराबाद-आईटी हब है जो बुनियादी ढांचे के मामले में आधुनिक दुनिया के किसी भी अंतर्राष्ट्रीय शहर के साथ प्रतिस्पर्धा करता है। यह आधुनिकता के साथ परंपरा का एक आदर्श मिश्रण है

चारमीनार और गोलकुंडा किला

प्रत्येक पर्यटक के लिए प्रमुख यात्रा स्थान प्रतिष्ठित चारमीनार और गोलकुंडा किला है। वास्तव में एक वास्तुकला चमत्कार चारमीनार

का निर्माण 16वीं शताब्दी में मुहम्मद कुली कुतुब शाह द्वारा किया गया था। हालांकि यह मुश्किल हो सकता है, लेकिन ईद के दौरान चारमीनार का दौरा करना अपने आप में एक अनुभव है। पास के निमराह कैफे में चाय और मिलन जूस सेंटर में शाहदूत मलाई एक वास्तविक आनंद है। चारमीनार के निकट लाड बाजार चूड़ियों के लिए प्रसिद्ध है।

एक पहाड़ी पर काकतीय शासकों द्वारा बनाया गया गोलकोंडा किला, कुतुब शाही राजवंश के लिए शासन स्थल के रूप में भी काम करता था। हालाँकि आज इसका अधिकांश हिस्सा खंडहर हो चुका है, लेकिन इसके शीर्ष पर एक मंदिर है जो बोनालु उत्सव के दौरान जीवंत हो उठता है। बोनालु उत्सव में हैदराबाद के विभिन्न हिस्सों में महाकाली मंदिरों में यात्रा निकाली जाती है। यह तेलंगाना राज्य के प्रमुख त्योहारों में से एक है और किसी एक कार्यक्रम में भाग लेना जीवन भर का अनुभव है।

हुसैन सागर झील

यह कृत्रिम झील सिकंदराबाद और हैदराबाद के जुड़वां शहरों के जंक्शन पर स्थित है। संपूर्ण परिधि में फुटपाथ और पार्क हैं और यह स्थानीय लोगों के लिए प्रमुख घूमने का स्थान है। प्रसिद्ध बुद्ध प्रतिमा,

जो गौतम बुद्ध की विश्व की एक ही पत्थर से बना हुआ सबसे ऊंची प्रतिमा है, झील के बीच में स्थित है और लुंबिनी पार्क से नावों द्वारा पहुंचा जा सकता है। नवनिर्मित सचिवालय भवन, बीआर अंबेडकर की तीसरी सबसे ऊंची प्रतिमा और तेलंगाना शहीद स्मारक जो दुनिया का सबसे बड़ा सीमलेस स्टेनलेस स्टील है, पास में ही है। प्रसिद्ध बिड़ला मंदिर भी हुसैन सागर झील के पास ही है।

रामप्पा मंदिर

यह मंदिर, जो अब यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, भगवान शिव को समर्पित काकतीय शैली का मंदिर है और हैदराबाद से लगभग 200 किलोमीटर दूर स्थित है। इसमें जटिल नक्काशी वाले कई स्तंभ हैं और

एकमात्र मंदिर है जिसका नाम अपने वास्तुकार के नाम पर रखा गया है। जटिल नक्काशी एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य प्रस्तुत करती है। यह स्थान एक दिन के भ्रमण के लायक है।

अम्मापल्ली मंदिर

यह मंदिर आरजीआई एयरपोर्ट के पास है। इस मंदिर के बारे में उल्लेखनीय बात यह है कि गर्भ ग्रह के अंदर की मूर्तियाँ राम, सीता और लक्ष्मण की हैं, लेकिन हनुमान की नहीं। मंदिर की बाहरी दीवार को राजस्थानी वास्तुकला में शैलीबद्ध किया गया है, जो उसी समय के आसपास बने अन्य मंदिरों से भिन्न है। इसके परिसर में एक बावड़ी भी है। यह मंदिर पहले फिल्मों की शूटिंग स्थल के रूप में लोकप्रिय था और अब युवा जोड़े अपनी शादी से पहले की शूटिंग करते हुए देखे जा सकते हैं।

बतुकम्मा त्योहार

यह फूलों का उत्सव शरद नवरात्रि के दौरान होता है और तेलंगाना के प्रमुख त्योहारों में से एक है। यह फसलों और फसल की प्रचुरता के लिए देवी को धन्यवाद देने के लिए मनाया जाता है। महिलाएं नौ दिन देवी को फूल गोपुरम और विभिन्न प्रसाद अर्पण करती हैं। यह आनंद, नृत्य और उत्सव का समय है। मेरे हैदराबाद प्रवास के दौरान, हम कार्यालय परिसर में बतुकम्मा के अंतिम दिन का त्योहार मनाते थे। उत्सव में भाग लेना वास्तव में एक समृद्ध अनुभव है।

पोचमपल्ली हथकरघा

हैदराबाद से लगभग 50 किलोमीटर दूर यदाद्री भुवनगिरी जिले में स्थित यह गांव पोचमपल्ली साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। डिज़ाइन इकत शैली में हैं। ये खूबसूरत साड़ियां हर महिला के वॉर्डरोब में जरूर होनी चाहिए। गांव में प्रवेश करते ही हर घर से आती हथकरघा मशीनों की आवाजें सुनाई देती हैं। पोचमपल्ली साड़ियों में जीआई (भौगोलिक संकेत) टैग है और बुनकरों को राज्य सरकार द्वारा इसके लिए डिज़ाइन की गई विभिन्न योजनाओं के माध्यम से समर्थन दिया जाता है। एक बैंकर के रूप में, मैं जिले में तैनात होने और कारीगरों का समर्थन करने और भारत की परंपरा और विरासत को संरक्षित करने में मदद करने के लिए भाग्यशाली थी।

अन्य जगहें

रामोजी फिल्म सिटी, सालार जंग संग्रहालय, शिल्परामम, नेहरू चिड़ियाघर भी शहर में काफी लोकप्रिय पर्यटन स्थल हैं। वारंगल भी यात्रा के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य है जो अपने किले और हजार खंभों वाले मंदिर के लिए प्रसिद्ध है और हैदराबाद से लगभग 150 किमी दूर है। मेदक शहर में मेदक कैथेड्रल एशिया का सबसे बड़ा और दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सूबा है। श्रीशैलम और नागार्जुन सागर झरने भी हैदराबाद से एक दिन की यात्रा के लिए उपयुक्त हैं।

निष्कर्ष

हालाँकि ऐसी कई जगहें हैं जिन्हें एक छोटे लेख में शामिल नहीं किया जा सकता है। हैदराबाद न केवल अपने मोतियों और बिरयानी के लिए मूल्यवान है, बल्कि इसकी एक समृद्ध विरासत, इतिहास, संस्कृति और आईटी केंद्र है जो इस शहर को भारत के प्रमुख शहरों में मोती बनाता है।

"हिन्दी
उन सभी
गुणों से अलंकृत है,
जिनके बल पर वह
विश्व साहित्य भाषा की
अगली श्रेणी
में समासीन हो
सकती है।"

– मैथिलीशरण गुप्त

कविता

मित्रता

गौरव संतोष पांडेय
ग्राहक सेवा सहयोगी
तिरोरा शाखा

पहुंचे नए शहर जब कल तो मन में एक खयाल ये था,
मित्र बनाने होंगे नये अब, कैसे पर? सवाल ये था।

नया शहर है, जगह नयी है, लोग ना जाने कैसे होंगे,
सरल, सुशील, मधुर मिलेंगे या तेज बड़े चालाक से होंगे।

मित्र, सखा, दोस्त हमें जो बचपन में मिल जाते है,
मेरा ख़याल है सारी उम्र भर वही दोस्ती निभाते हैं।

बड़ा कठिन है आज के युग में दोस्त किसी को बनाना,
सगा भी कोई साथ न देता, तब दूजे को अपनाना।

जैसे द्वापर में निषादराज को राम मिलें,
और सुदामा को त्रेता में मेरे प्रिय घनश्याम मिलें।

देख लो रण महाभारत का सबकी हस्ती मिट जाती है,
कर्ण-दुर्योधन की मित्रता मगर याद सभी को आती है।

दोस्त हो ऐसा खुशियों में नाचता गाता आये जो,
दुख-विपत्ति कैसी भी हो साथ न कभी छुड़ाये जो।

सरल बात है मित्र जो हो वो अपना हो, न पराया सा,
अपनी जमीन पर अपना घर हो, न हो कोई किराया सा।

पर दिल कहता है इस शहर में भी अपना परचम लहरायेगा,
जब जब होगा ज़िक्र दोस्ती का, नाम हमेशा ही आयेगा।

आनंद श्रीवास्तव
सहायक महाप्रबंधक
साख प्रशासन व निगरानी विभाग

कविता

त्योहार एवं मानवता

ये चाँद किसी का मामा है,
ये चाँद किसी की माशूका।
ये चंद वृत्ती करवा का है,
ये चाँद ईद की खुशियों का।।
सच तो ये है बस यार मेरे,
वह जो भी है परमेश्वर है।
चाहे राम कहो, चाहे कृष्ण कहो,
चाहे ईसा, अल्लाह, रहबर है।।
आओ उसको सब नमन करें,
भले तरीका कैसा हो।
मानवता उसमें शामिल हो,
जीवन का सलीका ऐसा हो।।
त्योहार कभी भी कोई हो,
आओ मिलजुलकर मनाएँ सब।
जब ऐसा हो तब ही खुश हों,
ईश्वर, ईसा या फिर रब।।

आलेख

हिंदी दिवस और कुछ रोचक तथ्य

ऋतिका अग्रवाल
प्रबंधक
जयपुर अंचल कार्यालय

सागर में मिलती धारा
हिंदी सबकी संगम है
शब्द, नाद, लिपि से भी आगे
एक भरोसा अनुपम है,
गंगा कावेरी की धारा
सात मिलाती हिंदी है
पूरब पच्छिम, कलाम पंखुड़ी
सेतु बनाती हिंदी है....

14 सितंबर हिंदी दिवस का दिन हर भारतीय के लिए गर्व का दिन है। पुरे देश के स्कूलों, कॉलेजों और सरकारी कार्यालयों में हिंदी दिवस बेहद उत्साह और जोश से मनाया जाता है। हिंदी सिर्फ हमारी मातृभाषा ही नहीं बल्कि ये राष्ट्रीय अस्मिता और गौरव का प्रतीक है। हिंदी अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों के दिलों की दूरियों को मिटाती है और सभी को एकता के सूत्र में बांधती है।

वर्ष 1949 में भारत के संविधान सभा द्वार हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने के दिन को चिन्हित करने के लिए भारत में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस या राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है। प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाने का फैसला लिया गया था।

हिंदी से जुड़ी कुछ दिलचस्प बातें

1. मत बंटने से हिंदी नहीं बन पाई देश की राष्ट्रभाषा:

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दी को जनमानस की भाषा कहा था। वह चाहते थे कि हिन्दी राष्ट्रभाषा बने। उन्होंने 1918 में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए कहा था। आज़ादी मिलने के बाद, लंबे विचार- विमर्श के बाद आख़िरकार 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में हिन्दी को राजभाषा बनाने का फैसला लिया गया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के विचार से बहुत से लोग खुश नहीं थे खासतौर पर दक्षिण भारतीय। कइयों का कहना था कि सबको हिंदी ही बोलनी है तो आज़ादी के क्या मायने रह जाएंगे। ऐसे में हिंदी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकी। राजभाषा होने के चलते राज्य इसे अपने राजकाज के काम में लाते हैं।

2. आज 14 सितंबर को होता है राष्ट्रीय हिंदी दिवस और 10 जनवरी को होता है विश्व हिंदी दिवस:

हिंदी को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए 1975 में 'विश्व हिंदी सम्मेलन' का आयोजन शुरू किया गया था। इसमें 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। हिंदी को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए 10 जनवरी को हर साल विश्व हिंदी दिवस भी आयोजित किया जाता है। पहली बार यह वर्ष 2006 में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा मनाया में गया था। इसका मकसद दुनिया भर में हिंदी भाषा को बढ़ावा देना है।

3. क्यों मनाया जाता है हिंदी दिवस:

आज़ादी मिलने के दो साल बाद 14 सितबंर 1949 को संविधान सभा में एक मत से हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया था। इस निर्णय के बाद हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर 1953 से पूरे भारत में 14 सितंबर को हर साल हिंदी दिवस के रूप में जश्न मनाया जाने लगा। 14 सितंबर 1953 को पहली बार देश में हिंदी दिवस मनाया गया।

4. इंग्लिश और मंदारिन के बाद हिंदी विश्व की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है।

5. दुनिया की सबसे प्रसिद्ध ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी (शब्दकोश) हर साल भारतीय शब्दों को जगह दे रही है। ऑक्सफोर्ड आत्मनिर्भरता, चड्डी, बापू, सूर्य नमस्कार, आधार, नारी शक्ति, अच्छा, अरे यार!', भेलपूरी, चूड़ीदार, ढाबा, बदमाश, चुप, फंडा, चाचा, चौधरी, चमचा, दादागीरी, जुगाड़, पायजामा, कीमा, पापड़, करी, चटनी, अवतार, चीता, गुरु, जिमखाना, मंत्र, महाराजा, मुग़ल, निर्वाण, पंडित, ठग, बरामदा जैसे शब्दों जगह दे चुका है।

6. भारत के बाहर कई अन्य देशों में भी हिंदी बोली जाती है। दक्षिण प्रशांत महासागर क्षेत्र में फिजी नाम का एक द्वीप देश है जहां हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया है।

7. भारत, फिजी के अलावा मॉरीशस, फिलीपींस, अमेरिका, न्यूजीलैंड, यूगांडा, सिंगापुर, नेपाल, गुयाना, सुरिनाम, त्रिनिदाद, तिब्बत, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी और पाकिस्तान में कुछ परिवर्तनों के साथ ही सही लेकिन हिंदी बोली और समझी जाती है।

8. हिंदी सिर्फ भाषा या संवाद का ही साधन नहीं है, बल्कि हर भारतीय के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक सेतु भी है। हिंदी का महत्व इस बात से पता लगता है कि दुनिया भर में 170 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी एक भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। अमेरिका में लगभाग 150 से ज्यादा एजुकेशनल इंस्टिट्यूट में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है।

9. हिंदी में उच्चतर शोध के लिए भारत सरकार ने 1963 में केंद्रीय हिंदी संस्थान की स्थापना की। सरकार हिंदी में योगदान के लिए हर साल के लिए पुरस्कार प्रदान करती है।

10. हिंदी का नाम फारसी शब्द 'हिंद' से लिया गया है, जिसका अर्थ है सिंधु नदी की भूमि। फ़ारसी बोलने वाले तुर्क जिन्होनें गंगा के मैदान और पंजाब पर आक्रमण किया, 11वीं शताब्दी की

शुरुआत में सिंधु नदी के किनारे बोली जाने वाली भाषा को हिंदी नाम दिया था। ये भाषा संयुक्त अरब अमीरात में एक मान्यता प्राप्त अल्पसंख्यक भाषा भी है।

11. उर्दू के स्थान पर हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने वाला बिहार पहला राज्य था।

12. 1805 में प्रकाशित लल्लू लाल की प्रेम सागर हिंदी की पहली प्रकाशित पुस्तक है।

13. हिंदी साहित्य इस विविधता और समृद्धि को अपने विभिन्न रूपों और शैलियों में दर्शाता है। बोलियों और उप-बोलियों के विशाल पहुँच के साथ-साथ हिंदी में लेखन की तीन व्यापक शैलियाँ हैं: गद्य, पद्य और प्रोसिमेट्रम। उत्पादन की तारीख के आधार पर इसके पांच प्रमुख रूप हैं: आदि काल (14वीं शताब्दी ई.पू. से पहले और इसमें शामिल), भक्ति काल (14वीं-18वीं शताब्दी ई.पू.), रीति काल (18वीं-20वीं शताब्दी ई.पू.), आधुनिक काल (1850 ई.पू. के बाद)।) और नयवोत्तर काल (1980 ई. से आगे)।

डॉ जगदीश व्योम

माँ भारती के भाल का शृंगार है हिन्दी
हिंदोस्ताँ के बाग की बहार है हिन्दी

घुट्टी के साथ घोल के माँ ने पिलाई थी
स्वर फूट पड़ रहा, वही मल्हार है हिन्दी

तुलसी, कबीर सूर और रसखान के लिए
ब्रह्मा के कमंडल से बही धार है हिन्दी

कहानी

प्रथमेश और अनेक सलाहकार

रोचक दीक्षित
प्रबंधक
डिजिटल बैंकिंग सेवाएं विभाग
प्रधान कार्यालय

प्रथमेश एक सत्ताईस वर्षीय युवा था, जिसकी ज़िन्दगी स्थिरता के घेरे में कैद थी। उसकी नौकरी सुरक्षित और नियमित थी, हालांकि थोड़ी नीरस लगती थी। उसने इसे इसलिए अपनाया था क्योंकि इसमें कोई जोखिम नहीं था। प्रथमेश को जीवन की अनिश्चितताओं से भय था। उसे हमेशा खुद को सुरक्षित रखने की चिंता रहती थी, इसलिए वह ज्योतिषियों, वित्तीय सलाहकारों, परिवार के सदस्यों, डॉक्टरों और विशेषज्ञों से लगातार सलाह लेता रहता था। प्रथमेश का दिन सुबह जल्दी शुरू होता था, लेकिन दिन के उजाले का मतलब सिर्फ एक और दिन था, न कि किसी नई संभावना का। उसकी ज़िन्दगी में हर चीज एक निर्धारित गति से चलती थी और वह किसी भी अप्रत्याशित स्थिति से बचना चाहता था। यही वजह थी कि वह जीवन की हर समस्या का समाधान खोजने की कोशिश में लगा रहता था। आज भी एक ऐसा ही दिन था।

हर सुबह, उसकी पहली बात यह तय करना होता था कि आज कौन सा रंग पहनना है। इसके लिए उसने अपने ज्योतिषी से परामर्श लेना शुरू किया था। 'आज नीला पहनना शुभ है या हरा?' यह सवाल वह हर दिन उनसे पूछता, जैसे कोई युद्ध के लिए हथियार चुन रहा हो। एक दिन, ज्योतिषी ने उसे 'सफेद' पहनने की सलाह दी। उत्साहित होकर उसने सफेद पहन लिया। घर से निकलते ही बारिश शुरू हो गई मगर वह खड़े खड़े भीगता रहा। उसके पास छाता होते हुए भी वह उसे खोल न सका क्योंकि ज्योतिषी ने कहा था कि बारिश में उस दिन छाता खोलना अशुभ है। तभी रास्ते में उनकी कमीज पर थोड़ा सा कीचड़ छलक गया, वह तुरन्त घर लौटा और कमीज बदल कर दूसरी सफेद कमीज पहनकर दोबारा दफ्तर गया। फिर आती थी वित्तीय और कानूनी सलाहकार की बारी। उसने एक बार एक कलम खरीदने से पहले भी उनसे परामर्श किया था। 'क्या आप सोचते हैं कि यह कलम मेरी आर्थिक स्थिति के लिए सही है?' उसकी वित्तीय सलाहकार ने उसे समझाया कि वह कलम उसकी स्थिति को बदलने वाली नहीं है। लेकिन वह लगातार सोचता रहा कि वह कलम खरीदना आर्थिक रूप से ठीक है या नहीं। इसी तरह, उसके कानूनी सलाहकार ने उसे कहा, 'कलम खरीदने के लिए कानूनी सलाह की ज़रूरत नहीं है, लेकिन अगर वह कलम बैगनी रंग की है तो शायद आपके लिए सफल साबित होगी। फिर क्या था, उसने झट से कलम का पूरा डिब्बा खरीद लिया। कभी वो कढ़ी के साथ शकरकंद खाता तो कभी सांबर के साथ अनार के दाने। कोई सलाह उसका डॉक्टर देता, कोई ज्योतिष, तो कोई डायटीशियन और वो सारे लाभ के लालच में सब उपाय मिला जुला लेता।

प्रथमेश की ज़िन्दगी में अचानक एक दिन एक बड़ा मोड़ आया। एक नई नौकरी का प्रस्ताव उसकी दहलीज़ पर खड़ा था, जिसमें उसे न केवल शानदार वेतन की पेशकश थी, बल्कि यह नौकरी उसे ऊंचा पद भी दे रही थी। यह ऑफर उसकी वर्तमान नौकरी से कहीं अधिक आकर्षक था जिससे उसकी जिंदगी की स्थिरता को एक नई दिशा मिल सकती थी। पहली बार उसने सोचा कि उसका जीवन विलासिता से भरा होगा। हालाँकि, जैसे ही उसने नई नौकरी के प्रस्ताव को गंभीरता से लेना शुरू किया, उसे एक और दिलचस्प घटना का सामना करना पड़ा – एक व्यवस्थित विवाह प्रस्ताव।

प्रथमेश को यह प्रस्ताव तब मिला जब उसकी ज़िन्दगी स्थिरता की राह पर चल रही थी। वह लड़की उसकी पसंदीदा थी। उसकी सादगी, उसकी हँसी और उसकी बातों में एक खास आकर्षण था, जिसे देखकर प्रथमेश ने उसे मन ही मन अपना जीवन साथी मान लिया था। उसके माता-पिता भी उस लड़की को अपनी बहू के रूप में स्वीकार करने के लिए खुशी-खुशी तैयार थे। सब कुछ सही था लेकिन वह अपने विशेषज्ञों से सलाह लेना चाहता था। उसकी सलाह लेने की प्रक्रिया शुरू ही हुई थी और अचानक एक चौंकाने वाली खबर मिली। जब उसके माता-पिता ने प्रथमेश की नई नौकरी के बारे में लड़की के माता-पिता को बताया, तो उन्हें इस रिश्ते पर संदेह हुआ। वे अपनी बेटी की शादी उसी शहर में करना चाहते थे।

वह एक तरफ तो अपनी पेशेवर ज़िन्दगी में एक नई शुरुआत की उम्मीद देख रहा था, जबकि दूसरी ओर, उसका दिल उस प्रस्तावित शादी के प्रति खिंचाव महसूस कर रहा था। नौकरी का प्रस्ताव उसे एक नए शहर की ओर ले जाने वाला था, जहाँ वह बेहतर वेतन और संभावनाएं देख रहा था, लेकिन इसका मतलब था कि उसे उस लड़की और उसके परिवार को छोड़ना पड़ेगा। वह सोचने लगा कि क्या उसे अपनी सफलता की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए नई नौकरी स्वीकार करनी चाहिए या फिर अपने दिल की सुनते हुए, उस लड़की और उसकी ज़िन्दगी में स्थिरता के प्रस्ताव को चुनना चाहिए। नौकरी की चमक और भविष्य की नई संभावनाएँ थीं, जबकि दूसरी ओर शादी का प्रस्ताव था, जिसमें एक खुशहाल पारिवारिक जीवन और प्यार की संभावनाएँ थीं। अब उसे अपने सलाहकारों की और भी अधिक आवश्यकता महसूस होने लगी।

जब प्रथमेश ने अपनी ज़िन्दगी के इस मोड़ पर निर्णय लेना शुरू किया तो उसने सलाहकारों की एक पूरी फौज को जुटा लिया जो उसकी स्थिति पर अपने-अपने अद्वितीय दृष्टिकोण लेकर आए। पहले वह गया अपने ज्योतिषी के पास गया, जिन्होंने सितारों की चाशनी में डुबोते हुए कहा, इस लड़की के साथ शादी करने से आपके जीवन के बंद दरवाज़े खुल जाएंगे। आप देखिएगा, एक साल के भीतर ही आपके जीवन में इतना शुभचिंतन आएगा कि खुद ब्रह्मा भी शॉक में आ जाएंगे! ज्योतिषी के इस पूर्वानुमान ने उसे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या उसकी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सफलता का राज एक शादी की जुगलबंदी में ही छिपा हुआ है।

इसके बाद, उसने अपने वित्तीय सलाहकार से संपर्क किया जो अपने चश्मे के ऊपर से उसे देखे बिना कहे बिना नहीं मानते थे। यह नई नौकरी आपके जीवन को एक नया मोड़ देगी। आपका बैंक बैलेंस ऐसा उछलेगा जैसे रॉकेट लॉन्च हो रहा हो। आप न केवल अपनी आर्थिक स्थिति को चमकाएंगे बल्कि विदेश यात्रा और महंगे शौक भी आपकी नियमित दिनचर्या का हिस्सा होंगे। इसमें कोई दो राय नहीं कि यह नौकरी आपके जीवन की गाड़ी को नेक्स्ट गियर में डाल देगी! वित्तीय सलाहकार की इस सलाह ने उसे ये सोचने पर मजबूर कर दिया कि शायद एक बेहतर वेतन और खुशहाल जीवन उसका हर सपना पूरा कर सकता है।

लेकिन फिर आया एक और विशेषज्ञ, जो न तो ज्योतिषी था और न ही वित्तीय सलाहकार, बल्कि खुद को 'सर्वश्रेष्ठ जीवन सलाहकार' मानता था। उन्होंने गंभीरता से कहा, 'अरे भाई, तुम्हारे लिए तो ये दोनों ही खराब हैं। लड़की के साथ शादी करोगे तो घर भी गंवाना पड़ेगा। नौकरी में तो तुम्हें ज्यादा काम मिलेगा और काम का बोझ भी बढ़ेगा। दोनों के बीच में झूलने से बस यही होगा कि तुम एक ही समय में दो जगहों पर हारोगे। तुम्हें इन दोनों चीज़ों से दूर रहना चाहिए - एक पुरानी कहावत है, 'दो नाव में सवार होने वाला बेशक़ डूबता है!

इस असामान्य सलाह ने प्रथमेश को भ्रम में डाल दिया। एक ओर तो उसे सितारों की चमक और नए करियर की उड़ान की आशा थी, जबकि दूसरी ओर जीवन के विशेषज्ञ की सलाह ने उसे पूरी तरह से निराश कर दिया। अब वह सोचने लगा कि एक ही स्थिति में तीन अलग-अलग सलाहों के साथ कैसे काम करें? उसने महसूस किया कि सलाहकारों की यह भीड़ उसकी ज़िन्दगी को उलझन में डाल रही थी और एक ही समय में एक दर्जन विकल्पों को सही मानने के बावजूद, उसे किसी भी निर्णय पर सही से ठहरने का साहस नहीं हो रहा था। मगर वह उन सलाहकारों पर इतना ज़्यादा यकीन करता था कि उनकी सलाह उसके लिए पत्थर की लकीर थी।

प्रथमेश ने अपनी बहन को सारी स्थिति को बारीकियों से समझाई। उसकी बहन ने ध्यान से सुना और फिर हंसते हुए कहा, 'अरे भाई, तुम्हें भी तो जैसे हर चीज के लिए एक सलाहकार चाहिए। कभी तो खुद का दिमाग भी इस्तेमाल करो। जीवन में सलाह लेनी चाहिए, लेकिन हर छोटी-मोटी बात पर नहीं। भगवान ने तुम्हें सोचने-समझने की ताकत दी है। तुम्हें खुद तय करना होगा कि तुम्हारे लिए क्या सही है और क्या नहीं। कोई भी सलाह तुम्हारी ज़िन्दगी की पूरी तस्वीर नहीं दे सकती। केवल तुम ही जानते हो कि कौन सा विकल्प तुम्हारे लिए बेहतर है। जो भी निर्णय लोगे, वह तुम्हारा होगा और तुम्हारी ज़िन्दगी में एक नया मोड़ ले आएगा। गलतियाँ होंगी, लेकिन कोई पछतावा नहीं होगा। खुद पर विश्वास रखो और एक मजबूत फैसला करो। तुम देखोगे कि तुम्हारे पास खुद को साबित करने का एक बेहतरीन मौका है।' उसकी बहन की बातें सुनकर प्रथमेश ने गहरी सांस ली और महसूस किया कि उसकी बहन का नज़रिया सही था। उसने फैसला किया कि अब समय आ गया है कि वह खुद पर विश्वास रखे और अपनी ज़िन्दगी का अगला कदम सोच-समझ कर उठाए।

प्रथमेश ने लड़की के परिवार से मिलने का तय किया और उनकी स्थिति को समझने की पूरी कोशिश की। जब उसने उनसे मुलाकात की तो उन्होंने अपने दिल की बात खुलकर रखी। लड़की के माता-पिता ने कहा, 'हमारी बेटी हमारी एकमात्र संतान है और हम चाहते हैं कि हम अपनी बेटी को दूर से ही सही मगर हमेशा देख सकें। हम अपने जीवन के अंतिम समय तक एक ही शहर में रहें, यही हमारी एक मात्र इच्छा है।' प्रथमेश ने उनकी भावनाओं को समझते हुए कहा, 'मैं आपकी चिंता और प्यार को पूरी तरह से समझता हूँ। आपकी बेटी के साथ मैं भी खुश रहना चाहता हूँ, लेकिन यह नई नौकरी मेरे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह न केवल मेरे जीवन को बेहतर बनाएगी, बल्कि आपकी बेटी को भी एक शानदार जीवन

जीने का मौका देगी। इससे न सिर्फ हमें आर्थिक सुरक्षा मिलेगी, बल्कि एक जीवनशैली की भी बेहतरी होगी, जिससे हम सब मिलकर आनंदित हो सकते हैं।' फिर, उसने उन्हें आश्वस्त करने के प्रयास में कहा, 'मैं जानता हूँ कि यह आपकी कठिनाई को दूर करने में मदद नहीं करेगा, लेकिन मैं आपको यह आश्वस्त करना चाहता हूँ कि मैं हर महीने आपके पास आऊँगा जिससे आपको कभी भी उसकी कमी न महसूस हो। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप अपनी बेटी के भविष्य के बारे में सोचें और उसे एक ऐसा जीवन दें जो उसके लिए सुखद हो और साथ ही हमारी जीवन की सुख-शांति भी सुनिश्चित हो।' प्रथमेश ने स्पष्ट किया कि उसकी सच्ची भावना यह है कि वह परिवार के साथ खुश और जुड़ा रहना चाहता है। लड़की के माता-पिता ने उसकी ईमानदारी और दयालुता को सराहा और इस पर विचार करने का आश्वासन दिया।

प्रथमेश ने नई संस्था को एक ईमेल भी भेजा जिसमें उसने अपने अनुरोध को पेश किया। उसने समझाया कि वर्तमान शहर में ही रहने से उसे व्यक्तिगत और पारिवारिक कारणों से बड़ी सुविधा होगी। इसके अलावा, उसने अपने पेशेवर कौशल और अनुभव की बात की, यह दर्शाते हुए कि वह कंपनी के लिए एक मजबूत उम्मीदवार है और उसकी क्षमता से संगठन को सफलता मिल सकती है। उसने विनम्रतापूर्वक अनुरोध किया कि क्या कंपनी उसे वर्तमान शहर में एक पद प्रदान कर सकती है? और आश्वस्त किया कि वह पूरी मेहनत और समर्पण के साथ काम करेगा। संस्था ने उसकी स्थिति को समझते हुए सकारात्मक जवाब दिया और उसे उसी शहर में एक नई भूमिका का प्रस्ताव दिया। वह चकित था और उनका बहुत आभारी था।

प्रथमेश ने लड़की के माता-पिता का खुशखबरी देने के लिए उनके घर पर जाना तय किया। लेकिन जैसे ही वह उनके सामने बैठा उन्होंने कहा, 'पहले हमें अपनी बात कहने दो। हम तुम्हारे बारे में सोचते हैं कि तुम हमारी बेटी को हमेशा खुश रखोगे। तुम्हारे साथ शादी के लिए हम तैयार हैं भले ही हमें अपनी बेटी को किसी अन्य शहर में भेजना पड़े। हमारे लिए उसकी खुशी सबसे महत्वपूर्ण है।' यह सुनकर, प्रथमेश की आँखों में खुशी की चमक आ गई, लेकिन उसने अपने हर्ष को काबू में रखा और फिर से बोलना शुरू किया। उसने धीरे से कहा, 'मैं आपकी इस समझदारी और खुले दिल के लिए आभारी हूँ। लेकिन मुझे एक नई खुशखबरी भी साझा करनी है। मैंने अपनी नई नौकरी के प्रस्ताव पर बातचीत की है और अब कंपनी ने मुझे प्रस्तावित किया है कि मैं वर्तमान शहर में ही काम कर सकता हूँ। इसका मतलब है कि मैं इस शहर में रहकर ही आपकी बेटी के साथ अपने नए जीवन की शुरुआत कर सकता हूँ।'

इस खबर को सुनकर, लड़की के माता-पिता की आंखों में खुशी और भावुकता की झलक दिखी। उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था और उनकी आंखों में आंसू थे। उन्होंने खुशी के मारे प्रथमेश को गले लगा लिया। इस पल ने यह स्पष्ट कर दिया कि सभी के लिए चीज़ें जैसे कि वे चाहते थे, वैसे ही साकार हो गई थीं। सभी की इच्छाएं पूरी हो गईं और एक सुखद भविष्य की शुरुआत की दिशा मिल गई। प्रथमेश की खुशखबरी ने एक नई उम्मीद और खुशी का संचार किया और इस तरह सभी के दिलों में एक नए अध्याय की शुरुआत का एहसास हुआ।

जब प्रथमेश ने घर जाकर अपने माता-पिता को नई खुशखबरी सुनाई तो उनके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। न केवल उनके बेटे को एक बेहतर नौकरी मिली थी, बल्कि वे अब एक बहुत ही प्यारी बेटी भी प्राप्त करने वाले थे। यह ख़बर उनके लिए दोहरी खुशी का कारण बन गई। उनके माता-पिता की आंखों में गर्व और संतोष की झलक थी और उनका हर्ष स्पष्ट था। प्रथमेश की बहन की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसने अपने भाई में एक नई आत्म-विश्वास की चमक देखी जो पहले कहीं खो गई थी। उसकी आंखों में चमक और चेहरे पर मुस्कान ने इस बात को साबित कर दिया। बहन ने अपने भाई के साथ मिलकर इस खुशी को साझा किया और सभी ने मिलकर इस नई शुरुआत का स्वागत किया। यह दिन उनके परिवार के लिए एक नई उम्मीद और खुशी का प्रतीक बन गया जिसमें सभी की इच्छाएं पूरी हुई और उनके चेहरे पर संतोष की रौनक थी।

प्रथमेश ने इस यात्रा से एक महत्वपूर्ण जीवन का सबक सीखा। उसने समझा कि आत्म-विश्वास और अपने निर्णय स्वयं लेने की क्षमता ही उसे सही मार्ग पर ले जा सकती है। पहले सलाहकारों के सुझावों और भविष्यवाणियों के जाल में फंसकर वह अपनी जिंदगी के हर छोटे-छोटे निर्णयों को लेकर उलझन में रहता था। लेकिन अब उसने महसूस किया कि हर किसी की सलाह और भविष्यवाणी एक सीमित दृष्टिकोण देती है और व्यक्तिगत अनुभव और आत्म-निर्णय ही सबसे सटीक होते हैं। जब उसने देखा कि खुद के निर्णय और आत्म-विश्वास ने उसे न केवल एक बेहतर नौकरी दिलाई बल्कि एक खुशहाल पारिवारिक जीवन की शुरुआत की तो उसे गहरी राहत और खुशी मिली। अगर वह दूसरों की मूर्खतापूर्ण सलाह का पालन करता तो शायद वह कई अवसरों को खो देता। इस अनुभव के बाद उसने निर्णय लिया कि वह छोटी-छोटी चीज़ों के लिए किसी से सलाह नहीं लेगा और अपने जीवन को शांति और संतोष से जीने की कोशिश करेगा। अब वह सिर्फ अपने अनुभव और आत्म-विश्वास पर भरोसा करता है और छोटी-छोटी समस्याओं को खुद सुलझाता है। इस बदलाव ने उसकी ज़िन्दगी को एक नई दिशा दी जिससे वह हर दिन नई ऊर्जा और खुशी के साथ जीने लगा। उसकी यह यात्रा उसे हमेशा याद दिलाएगी कि आत्म-निर्णय और आत्म-विश्वास ही सबसे बड़ी सम्पत्ति होती है और इससे ही जीवन की सबसे बड़ी सफलताएँ मिलती हैं।

आलेख

हिन्दी में काम करके तो देखिए!!

अल्पना शर्मा
ग्राहक सेवा सहयोगी
मेरठ गंगानगर शाखा

वर्ष 2023 में एक दिन दफ्तर में काम करते समय मेरी नज़र एक ई-मेल पर पड़ी। हिन्दी की शब्दावली पर अंचल कार्यालय में एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। ये सितंबर माह की बात है, जब देश भर में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी पखवाड़ों में कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी भाषा को भारत की आधिकारिक भाषा घोषित किया था। इसी दौरान 1 सितंबर से 15 सितंबर तक का 15 दिन का हिन्दी पखवाड़ा भी हर दफ्तर में मनाया जाता है, जिसमें हिन्दी के प्रचार, प्रसार व जागरूकता के लिए तरह-तरह की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। मैंने पिछले दिनों की ई-मेल खोजी तो पता चला कि मेरे काफी सारे कार्यक्रम तो निकल चुके थे बस कविता लेखन प्रतियोगिता के लिए दो दिन बाद की आखिरी तारीख थी और हमारे बैंक की हिन्दी की अग्रणी पत्रिका 'केनरा ज्योति' में लेख भेजने का समय बचा था।

इस समय शायद ये बता देना सही होगा कि मेरे माता-पिता ने चालीस वर्ष केन्द्रीय कार्यालय में कार्य किया है। मेरे पिता कार्यालय में होने वाली प्रतियोगिताओ में भाग लेते रहे हैं। मेरी माँ भी हिन्दी के निबंधों और पत्र लेखन में पुरस्कार जीततीं रही हैं। मैंने माँ पर ही एक कविता अंचल कार्यालय को भेज दी और पत्रिका के लिए एक लेख भी भेज दिया। सच कहूँ तो उस समय मुझे लगा ही नहीं था कि मैं लेख या कविता में कुछ जीत पाऊँगी। पर नतीजा आया तो पता चला, मैंने कविता में प्रथम पुरुस्कार प्राप्त किया है और लेख भी पत्रिका के लिए स्वीकार कर लिया गया है। पहली ही सफलता के बाद मैंने अपने अंदर एक नई प्रतिभा को पहचाना। कविता का पुरस्कार देने के लिए सभी विजेताओं को अंचल कार्यालय बुलाया गया। मेरे लिए तो वो बिल्कुल नया अनुभव था। वर्ष भर हिन्दी में काम करने के लिए पुरुस्कार दिए गए और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत-सी योजनाएँ बताई गई। पहला पुरुस्कार मिलने के बाद मैंने और कार्यक्रमों में भी भाग लेना शुरू किया। कहीं सफलता मिली तो कहीं नहीं पर मुझे तो जैसे एक ध्येय मिल गया। मैं निबंध, लेख, कहानियाँ जगह-जगह भेजने लगी। इसी दौरान हमारी राजभाषा अधिकारी के माध्यम से मुझे एक दूसरे राष्ट्रीयकृत बैंक से एक प्रतियोगिता का पता चला। मैंने उसमें भाग लिया और जीत भी गई। राजभाषा अधिकारी ने बताया कि उस प्रतियोगिता का पुरस्कार आगामी नराकास (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति)की बैठक में दिया जाएगा।

पिता के केंद्रीय कार्यालय से जुड़े होने के कारण मुझे तो नराकास के बारे में पहले से ही पता था और ये भी लगा था कि नराकास द्वारा पुरस्कार मिलना कितने सम्मान की बात है पर मैंने जिससे भी इस बात को साझा किया तो किसी और को नराकास के बारे में जानकारी ही नहीं थी। मैं कभी किसी को हिन्दी में इसका मतलब समझाती तो कभी अंग्रेजी में। नराकास अर्थात 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' का गठन, 22 नवंबर 1976 को किया गया था। इस अधिनियम के अनुसार देश के उन सारे नगरों में जहाँ केन्द्रीय कार्यालयों की संख्या 10 या उससे अधिक है, वहाँ इस कार्यान्वयन समिति का गठन किया जा सकता है। इस समिति की अध्यक्षता, नगर में मौजूद केन्द्रीय सरकार के कार्यालय, उपक्रम या बैंक के वरिष्ठतम अधिकारियों में से किसी एक के द्वारा की जाती है। हमारा बैंक हमारे क्षेत्र का अग्रणी बैंक है, इसीलिए नगर के बैंक, बीमा कंपनियों या अन्य केन्द्रीय कार्यालयों की अध्यक्षता हमारे बैंक द्वारा ही की जाती है। समिति द्वारा एक वार्षिक पत्रिका 'प्रवाह' भी प्रकाशित की जाती है जिसका समिति की बैठक में विमोचन किया जाता है। इसी पत्रिका में मेरी एक कहानी और एक वित्तीय लेख भी प्रकाशित होने के लिए चुना गया था।

जिस दिन पुरस्कार के लिए मुझे बुलाया गया था उसी दिन उस पत्रिका का विमोचन भी था। रास्ते में पिता ने बताया कि केंद्र सरकार के कार्यालय में काम करने के कारण कभी उन्हें भी सम्मानित करने के लिए केनरा बैंक ने बुलाया था। मेरे लिए यह बहुत गर्व की बात थी कि

जिस समिति ने कभी मेरे पिता को सम्मानित किया था, वहाँ आज मुझे बुलाया गया है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वह 25वीं अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक थी। बैठक के मुख्य अतिथि राजभाषा विभाग कार्यान्वयन के उपनिदेशक श्री छबिल कुमार मेहर थे। उन्होंने हमें सरकार द्वारा जारी किए गए सॉफ्टवेयर जैसे अनुवादिनी, कंठस्थ, भाषिणी के बारे में अवगत कराया। हिन्दी में काम करने के अलावा सभी कार्यालयों में लगने वाले विज्ञापन व इश्तेहार, काम में आने वाली रबड़ की मोहरें द्विभाषी होनी चाहिए। राजभाषा के 1976 अधिनियम में देश को हिन्दी के ज्ञान के आधार पर तीन क्षेत्रों में बाँटा गया था। 'क' क्षेत्र में वो राज्य व संघ राज्य आते हैं, जहाँ हिन्दी ही प्रधान बोली है। 'ख' क्षेत्र में वो राज्य व संघ राज्य आते हैं, जहाँ की प्रधान भाषा हिन्दी न होने के बावजूद हिन्दी अधिकतम क्षेत्रों में बोली व समझी जाती है। अंत में 'ग' क्षेत्र में वह राज्य व संघ राज्य आते हैं, जहाँ की प्रधान बोली हिन्दी नहीं, बल्कि कोई प्रांतीय बोली है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए इतने प्रयास करने के बाद भी आजकल हमारे अधिकतम कर्मचारी हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी में काम करने को तरजीह देते हैं। हिन्दी में कार्य करने के लिए कार्यालयों को तिमाही रिपोर्ट भेजनी होती है जिसमें छोटे- छोटे कार्यों का ब्यौरा दिया जाता है, जैसे इस बार आपने कितने रेजिस्टरों में हिन्दी में कितने शब्द लिखे, आपने कितने पत्रों का जवाब हिन्दी में दिया, कितनी बार अपने हस्ताक्षर हिन्दी में किए। रिपोर्टों को भरते समय इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि आखिर हमारे वक्ता और श्रोता किस भाषा के हैं। क्या हम बात करने के लिए किसी और भाषा का प्रयोग करते हैं? क्या आपके कार्यालय में, बैंक की शाखा में, बीमा कंपनी में आप किसी और भाषा में काम करते हैं? और अगर ऐसा नहीं है तो हिन्दी में काम करने के लिए कहा जाना अपने आप में ही कोई काम नहीं है। हमारे बैंक में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाला 'केननेट', जिसे हर कर्मचारी दिन में एक बार खोलता ही है उसमें 'राजभाषा नेट' पर हिन्दी में काम करने के लिए बहुत-सी सामग्री मौजूद है। 'राजभाषा नेट' पर आपको एक 'आरबीआई की ग्लॉसरी' भी मिल जाएगी, जिसमें बैंकिंग शब्दावली की सभी अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराए गए हैं। ग्लॉसरी तक ना भी जाएँ तब भी आजकल ज्यादातर के फोन में गूगल ट्रांस्लेट होता ही है उसी से अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया जा सकता है। बैंक में तो किताबों की एक ई-लाइब्रेरी भी कैननेट में है, जिसमें हिन्दी की बहुत-सी किताबें हैं। हिन्दी में काम करने के लिए किसी अतिरिक्त प्रयास की जरूरत नहीं है। वो क्या नारा दिया था किसी ने:

हिन्दी में काम करना आसान है

आप शुरू तो कीजिए

आशुतोष कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
पुणे इकाई
आंचलिक निरीक्षणालय मुंबई

कविता

हिंदी हमारी प्यारी भाषा

हिंदी है हमारी अपनी भाषा
भारत मातृभूमी की प्यारी भाषा
हम भारत के लोग हैं बोलते
भिन्न- भिन्न तरह की अपनी भाषा

हिंदी जोड़े उनको सबसे
चाहे कोई बोले अपनी भाषा
चाहे उत्तर हो या दक्षिण
चाहे पूरब हो या पश्चिम

हिंदी है अपने वतन की
सबसे चहेती प्यारी भाषा
इसकी बोली में है मिठास
चाहे बोले कोई आम या खास

आओ हम खाये ये कसम
हिंदी को विश्व पटल पे
आगे ले जाएं हम
हिंदी है हमारी अपनी भाषा
भारत मातृभूमी की प्यारी भाषा

कहानी

सही मार्गदर्शन

अमित कुमार
अधिकारी
डुमराव शाखा

लोग कहते है कि मेहनत का फल मीठा होता हैं परंतु इस मीठे फल को पाने के लिए बहुत मसक्कत करनी पड़ती हैं। किसी भी इंसान की सफलता की कहानी आसान नहीं होती है। सफल होने के लिए बहुत सारे कठिनाइयों और मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। कई विषम परिस्थितियों का सामना करने के बाद कोई इंसान सफल होता है। जबतक सही मार्गदर्शन ना मिले तब तक सफलता हासिल करना बहुत मुश्किल होता है। ऐसी ही एक कहानी है राकेश की सफलता की।

बात उन दिनों की है जब राकेश चेन्नई से अपनी बीटेक की पढ़ाई खत्म करके वहीं पर जॉब की तलाश कर रहा था। उसने वहां करीब एक साल तक कई कंपनियों में जॉब के लिए ख़ाक छानी पर कहीं पर भी उसे मन चाहा जॉब नहीं मिल रहा था। अगर कहीं जॉब भी मिल रहा था तो बस 10-12 हजार तनख्वाह पर। जब राकेश जॉब ढूंढते - ढूंढते थक गया तो अंत में एक इलेक्ट्रिकल कंपनी में 10 हजार के महीने पर ज्वॉइन कर लिया। इस कंपनी में उसका काम था रजिस्टर बनाना। परंतु राकेश का इस काम में मन नहीं लगा और वो ये सब छोड़ कर चेन्नई से पटना वापस आ गया। चूंकि राकेश को अपने जॉब को लेकर टेंशन थी तो राकेश के एक बड़े भाई मुकेश जो कि पहले से बैंक में अधिकारी पद पर थे तो उन्होंने उसे सलाह दी कि क्यों 8-10 हज़ार रुपए की जॉब के लिए इधर-उधर जाओगे, इसलिए बेहतर होगा कि बैंक या एस एस सी की तैयारी करो। इसके बाद उन्होंने राकेश को पटना के सर्वोत्तम कोचिंग संस्थान कैरियर प्लानर में बैंकिंग तैयारी के लिए एडमिशन करवा दिया। उन्होंने राकेश को सलाह दी कि सिर्फ बैंकिंग पर पहले फोकस करो। राकेश भी अपनी इस नई यात्रा के लिए तैयार हो गया और बैंकिंग तैयारी में पूरे जोश-खरोश के साथ लग गया। चूंकि इस समय राकेश को पैसों की तंगी थी तथा राकेश का कोचिंग संस्थान लगभग 2-3 किलोमीटर दूर था तो राकेश प्रतिदिन पैदल ही आता-जाता था, कभी-कभी तो 2-3 बार आना- जाना पड़ता था फिर भी वो पैदल ही जाता था। यह उसके संघर्ष की शुरुआत थी।

पटना आने के बाद से घर के सदस्यों के बीमारियों के कारण राकेश की पढ़ाई हमेशा बाधित रही, इसलिए उसे सफलता भी बहुत मुश्किल और देर से मिलीं। उसकी पढ़ाई शुरू होने के 2-3 महीने बाद ही उसकी मां के घुटनों का ऑपरेशन करवाना पड़ा, चूंकि मां को गठिया की बीमारी थी तो उनका चलना-फिरना पूरी तरह से बंद हो चुका था। ऑपरेशन और हॉस्पिटल का जो भी खर्चा आया उसके बड़े भाई ने दे दिया परंतु ऑपरेशन के बाद राकेश को ही मां के साथ हॉस्पिटल में क़रीब एक महीने तक रहना पड़ा, जिसके कारण उसकी पढ़ाई एक महीने से ज्यादा बाधित हो गई। इसके बाद फिर से राकेश अपनी पढ़ाई शुरू की और करीब 1-2 महीने बाद पढ़ाई फ़िर से पटरी पर आ गई। धीरे- धीरे उसकी तैयारी इतनी अच्छी हो गई थी कि वह क्लास में भी टॉप-3 में आने लगा था जिससे कि उसका आत्मविश्वास और बढ़ता गया। समय - समय पर उसके कोचिंग के मेंटर भूपेश कुमार उसका हमेशा हौसला बढ़ाते रहते थे। इसके कुछ महीनों बाद ही राकेश ने आईबीपीएस के क्लर्क और ऑफिसर के साथ ही साथ आरआरबी के क्लर्क और ऑफिसर के लिखित परीक्षा को 6 महीने के पढ़ाई से ही उत्तीर्ण कर लिया और फिर सभी का इंटरव्यू भी दिया परन्तु कुछ नंबर से उसका फाइनल सेलेक्शन नहीं हो पाया। राकेश अंदर से बहुत हताश हो गया। वह पूरी तरह से टूट गया। फिर उसके कोचिंग के मेंटर और बड़े भाई (बैंक अधिकारी) ने उसे बहुत समझाया - की असफलता से घबराना नहीं है, हिम्मत नहीं हारना है बल्कि और ज्यादा मेहनत करना है, तो जरूर सफलता मिलेगी। कहां कमी रह गई उसमें सुधार करना है। दोनों के समझाने के बाद राकेश अपनी तैयारी में और ज्यादा लगन से लग गया।

इसी बीच दो-तीन महीने बाद उसके पिताजी को हार्ट अटैक आ गया जिसके बाद उनको तुरंत पटना के जीवक हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया। कुछ दिन बाद पटना के डॉक्टर्स ने पिताजी को बाईपास सर्जरी

कराने के लिए दिल्ली एम्स रेफर कर दिए। इसके बाद राकेश और बड़े भाई तुरंत दिल्ली के लिए रवाना हो गए। वहां पर दोनों करीब एक महीना रहें परन्तु पापा को हाई ब्लड शुगर होने के कारण ऑपरेशन नहीं हो पाया जिसके कारण दोनों वापस पटना आ गए। इस प्रकार राकेश की पढ़ाई फिर से 1-2 महीने के लिए बाधित हो गई। कुछ दिनों के बाद राकेश फिर से अपनी पढ़ाई में पूरी लगन के साथ लग गया। नवंबर - दिसंबर में फिर से उसकी आईबीपीएस की सभी परीक्षा थी और उसे इस बार पूरा भरोसा था कि फाइनल सिलेक्शन हो जाएगा परन्तु इसी बीच अक्टूबर में ही उसके पिताजी का पुनः हार्ट अटैक आने के कारण अकाल मृत्यु हो गई। राकेश पूरी तरह से टूट गया था। राकेश के पिताजी उसके मुख्य स्तंभ थे। उसे पढ़ने में जरा सा भी मन नहीं लग रहा था। वो तो इस बार परीक्षा भी देने के मूड में नहीं था। फिर घरवालों ने उसे बहुत समझाया - बुझाया की परीक्षा नजदीक है, मन लगाकर पढ़ाई करके जॉब ले लो वरना आगे बहुत मुश्किल हो जाएगी अब! इस घटना के कारण करीब 1 महीने तक राकेश अपनी पढ़ाई बिल्कुल भी नहीं कर पाया। फिर इस घटना से उबरने के बाद राकेश ने ठान लिया कि अब उसे जल्द से जल्द जॉब लेना है चाहे जो हो जाए क्योंकि उसे अब अपने पापा का सपना पूरा करना था। उसके पापा उसे जॉब करते हुए देखना चाहते थे। वो चाहते थे कि उनके आंखो के सामने ही राकेश भी किसी सरकारी जॉब में सेटल हो जाए क्योंकि उनको लगता था कि उनके जाने के बाद राकेश को कोई मदद नहीं करेगा और वो अकेला पड़ जाएगा। इसलिए उसने फिर से अपनी पढ़ाई शुरू कर दिया और आईबीपीएस के सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर साक्षात्कार भी दिए परन्तु पढ़ाई बीच - बीच में बाधित होने के कारण फाइनल सिलेक्शन इस बार भी नहीं हो पाया। इसी बीच कुछ दिनों बाद जनवरी में ही राकेश ने सिंडिकेट बैंक के पीजीडीबीएफ ऑफिसर की परीक्षा दी तथा फरवरी में इंटरव्यू भी दिए, दोनों उसका बहुत अच्छा गया था तथा उसे पूर्ण विश्वास था कि उसका इस बार फाइनल सिलेक्शन हो जाएगा। इसके बाद राकेश फाइनल रिजल्ट के इंतजार करते हुए अपनी आगे की परीक्षा की तैयारी में लग गया। इसी बीच 2 महीनों बाद ही सीढ़ी पर से गिरने के कारण उसकी मां की पैर की हड्डी टूट गई जिसके कारण मां को 15 दिनों के लिए हॉस्पिटल में एडमिट करना पड़ा। इस विकट परिस्थिति में उनके साथ राकेश ही 15 दिनों तक हॉस्पिटल में दिन - रात रहा। इसी बीच जून में ही सिंडिकेट बैंक का फाइनल रिजल्ट भी आ गया था और उसे ईमेल पर भी बैंक के तरफ से ज्वाइनिंग लेटर आ चुका था। परन्तु राकेश को इसके बारे में जरा सी भी भनक नहीं थी क्योंकि वह दिन - रात हॉस्पिटल में व्यस्त था। फिर अचानक से 22 जून को सिंडिकेट बैंक से किसी स्टाफ का फोन आया कि आपका सलेक्शन सिंडिकेट बैंक में हो गया है, आप ज्वाइन करना चाहते है की नहीं? इतना सुनकर राकेश पूरी तरह से स्तब्ध रह गया, उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था, उसकी आवाज़ नहीं निकल रही थे, उसके आंखों से आंसू निकलने लगे क्योंकि आज उसने अपने पापा के सपनों को पूरा किया था। उसने तुरंत हां बोल दी कि मैं ज्वाइन करना चाहता हूं। फोन रखने के बाद उसने तुरंत मेल चेक किया और अपना ज्वाइनिंग लेटर देखकर उसके खुशी का कोई ठिकाना ना रहा। सबसे पहले उसने यह खुशखबरी अपनी मां को हॉस्पिटल जाकर उनके चरण स्पर्श करके बताया। यह खुशखबरी सुनकर मां के भी आंखो में आंसू आ गए मानो उनका कोई सपना सच हो गया हो। मां उसी वक्त हॉस्पिटल में सभी नर्स को तथा अगल - बगल के मरीजों को बताने लगी कि मेरे बेटे को बैंक में जॉब लग गई है तथा सबको मिठाई बांटने लगी। इसके बाद राकेश ने अपने बड़े भाई (मार्गदर्शक) तथा अपने कोचिंग के गुरु भूपेश सर को यह खुशखबरी दी तो वो भी खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। करीब 37 परीक्षाओं के बाद राकेश का फाइनल सलेक्शन सिंडिकेट बैंक में ऑफिसर पद पर हुआ था। हिंदी में एक कहावत थी कि - चींटी 17 बार दीवार पर चढ़कर गिरने पर भी हिम्मत नहीं हारती है और हर बार कोशिश करते रहती है और 18वी बार सफलता प्राप्त करती है, ठीक उसी प्रकार राकेश ने भी अपनी हिम्मत नहीं हारी और 38वी बार में सफलता प्राप्त की। इसके बाद लेटर के अनुसार उसे जुलाई प्रथम सप्ताह को सिंडिकेट बैंक के मंगलूरु ट्रेनिंग सेंटर पर रिपोर्ट करना था। उसने जाने से पहले अपनी मां को हॉस्पिटल से डिस्चार्ज करवा कर तुरंत अगले दिन से सारे दस्तावेज को एकत्रित करने में लग गया और फिर नियत समय पर वहां रिपोर्ट की।

मृत्यु से पहले उसके पिताजी ने उसे आशीर्वद दिया था कि - तुम घबराना नहीं, तुम्हारी नौकरी जरूर लगेगी और यह बात बिल्कुल सच निकली। कहीं ना कहीं राकेश के पिताजी का आशीर्वाद भी राकेश के साथ था। साथ ही साथ राकेश के बड़े भाई और गुरु का सही मार्गदर्शन भी उसकी सफलता के लिए वरदान साबित हुआ। अतः हमलोग कह सकते है कि - सही मार्गदर्शन, सच्ची लगन और कड़ी मेहनत अथक प्रयास, माता-पिता तथा गुरु का आशीर्वाद तथा भगवान की कृपा से आपको सफलता एक ना एक दिन जरूर मिलती है। चाहे कितनी भी विषम परिस्थिति आए परन्तु हमें अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए और निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए जिससे कि सफलता एक दिन जरूर कदम चूमेगी। इसलिए सफलता पाने के लिए सही मार्गदर्शन बहुत जरूरी है। सही मार्गदर्शन से हमें पता चलता है कि हम सही दिशा में मेहनत कर रहे हैं। अंत में यही कहना चाहता हूं कि आपकी मेहनत कभी बेकार नहीं जाती और कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

वित्तीय सेवाएं विभाग के तत्वावधान में 22–23 अगस्त 2024 को चंडीगढ़ में आयोजित 2 दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी सह समीक्षा बैठक में राजभाषा नीति और कार्यों के श्रेष्ठ निष्पादन हेतु केनरा बैंक को 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्री जगजीत कुमार, निदेशक, वित्तीय सेवाएं विभाग के करमकलों से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री टी. के. वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग।

दिनांक 30.08.2024 को कार्यपालक निदेशक श्री अशोक चंद्र की अध्यक्षता में 193वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में श्री जगजीत कुमार, निदेशक, वित्तीय सेवाएं विभाग व श्री रत्नेश कुमार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार उपस्थित रहे। इस अवसर पर बैंक की गृह पत्रिका 'श्रेयस' के 295 वें अंक का विमोचन किया गया।

केनरा बैंक
Canara Bank
A Government of India Undertaking

Together We Can

समर्थ शक्ति की नई उड़ान

केनरा एंजेल
सपनों से आगे

महिला बचत बैंक खाता

विशेष सुविधाएं

- ₹10 लाख तक कैंसर केयर बीमा
- ₹26 लाख तक व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा
- कार्ड आधारित निःशुल्क स्वास्थ्य जांच
- ग्राहक अपने और अपनी बेटी/बेटियों के लिए शिक्षा ऋण प्रसंस्करण शुल्क पर 100% छूट का लाभ उठा सकते हैं
- अर्बन कंपनी, मिंत्रा, अमेज़ॉन, स्विगी, बुक माई शो जैसे शीर्ष ब्रांडों से विशेष कार्ड ऑफ़र

केनरा शिक्षा ऋण

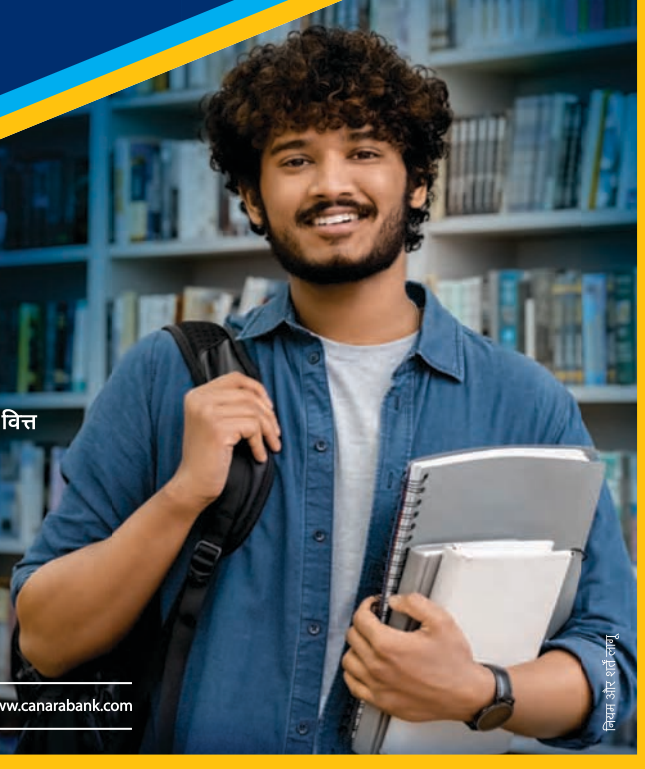

भारत / विदेश के लिए

- भारत में उच्च शिक्षा, व्यावसायिक पाठ्यक्रम के लिए आवश्यकता-आधारित वित्त
- ₹7.50 लाख तक कोई प्रतिभूति और प्रसंस्करण प्रभार नहीं • कम ब्याज दर, छात्राओं के लिए 0.50% रियायत • कोई पूर्व-भुगतान जुर्माना नहीं

विदेशों में स्थित शीर्ष 50 विश्वविद्यालयों के लिए

- 7.50 लाख रुपये से अधिक ऋण की उपलब्धता • ऋण के लिए अधिकतम कोई सीमा नहीं • कोई पूर्व भुगतान जुर्माना नहीं • लंबी चुकौती अवधि

90760 30001 | 1 बैंक नंबर 1800 1030 | www.canarabank.com

नियम और शर्तें लागू